

छिम्रीगु उव नमः शा छिन्मे विथ्य प्रजुश छिन्मे भाजमाय। निस्मय समय द्यारं न्यं भम् इमेन् विष्यु हिन छ निन न्यू हेन् हिन हिन हिन हिन हिन है निन्य श्मिमन्त्रयामीय अभियन्त्रमास्त्रिक्षिक्ष रिक्रमी। से विष्मा गर्ने प्रवास में प्रवास निक्रमी। से नियाना उम्मिक्कुल्ला मियानु ध्रमाधिनी या निक्षिण भन्। इन्हिन्द्रमान् हम्भाना । उन्मन्ते दे यह । भीहमाय गर् गर् दिया मार्मिस्य मार्मिस्य मार्मिस्य याभविभक्षा गुरुष्टिवना भारा भद्रम्यी मुक या भव निरिः भवत्रन्ते भगर निरिन्त मू अस्मिनी।

桐

क्नुविक निर्धान वर्षित्र क्नित्र कार्यमा उन्न तर्र लिताः करास्पान्काम लेकभव्या नेतर्थिंग थहं शिरुश्वरभी नद्दा नितिरे थेंद्र करा मिना भेरामणीः भग्नक म् ययग्वत् न क्यातः किहिटः भग्न भूत्र भगाने अनु नाएकमा ।। ये के ध्वी है ने में दिनाईना क्योरिक सिर्वाय सहित क्रिक्त क्रिक क्रिक क्रिक मानित ॥ सिर्वेश क्रिक स्वित उद्योग सम्बद्ध में भी विष्ट मिल्या मुह्मकामीनिक्वयन ॥ एवं भन्न न भन्न गुनः मिय न्य विभिन्न उर्न्थानिम कृतिमक वृत्ति या अक्तान व कवमं मुलभन् भूम मय । वहा युन विणि चनभा ।

नवन्वष्ठक म्रोमिनस्म वल मीनुभग्यम् नय्य नुइन नववार महिन्दु भन्तः। भन्नाभयवग्यन इ इमिविनथेय इडिर विविक स्ट्रा मानि मन्ति नापरा पन्नर्यभिग्त्यिग्त्यिग्न कल्लम्युरेड ११४ धारित्व वं त्राच्यां से विधिताउकभा उउ भी वे जैन्नेन्यि। है जुडे विकास नातुर स्वाभिष्टिन कर उत्ती कलमउयम्बू मंस्मिनि मिया गिरि । अवि अपि इंग्यमान्न

有

वनवयुक्त वन के किया वित्र वार्य मारी. स्ववानुन निर्णुण्या भाष्ट्रिमयरान निरुप्या बहुवनु वगु दि ज्या कुविगुनः अवाननः सु अवर्गिकिषण्य। वीरम्भनिवैधिवह्या सम्मेन् क्रीया मन्त्रमन्ति । भित्रय पर्ने नेक्ष उन्हिं। धिष्ट्रिवमः नुसवण्यः नुप्यमत्रुः क्रम

नासन्यम् अतिश्वासन्धा उत्तर्भा अत्राम् भन्न । विश्वास्त्र । ति । विश्वास्त्र । कः मः नः मः यमः यमः ग्रावन्यवद्या जनावर्ष्ट्रभूजणभागि कृत्यं भवर्ष्ट्रियमण्य भनुत्रा॥ नुष्रभाष्ठ भारति । भारति । थारवीन रापि नुगन्न उत्तानिभयाने। रिक्नापिनर्तुभाय रागस्यभगदिव भवग द्वारायनभः॥प्रेमे॥ रागस्य जीतुभाय श्रेष्ट्रकामा यनभः॥सीमे॥ ग्राह्मामिनि हार्न्स्य वार्ष्ट्रप्ता

न

मन्त्री क्षेत्रका गाज्य मा द्वी वी वार्य न न मा देश के शास्त्र भारत है। बतुन्नि उप्रत्वक यन में श्रामिक। द्वा के ला क भविष्ठभद्देष्ट्रेनभः शभवद्देष्ठशाई विद्वन्तिः ॥ कि विस्ति विष्ठा कि के कि निमा ११५ है। नमः॥म्यः॥म्बन्॥ ह ह उद्युष्टाः सिविधियमन्द्री भावण्येन के प्राप्त हिंद उर्वे नियम्बर्धा । एक्सवा हिंद स्प्रेगा है है यमगा हिंदे निर्वेश हिंदे क्या शहर ज्योगा है है ज्योगा कि नेमन गिर्ट दूराना गिर्टि स्वनु गाउँ हिंगार्ड ह वाइगित्वगित्व विषया। हो इन्येक जिल्हा के हिया है किया है। कि किया के सम्बद्ध मिन हैं भद्यविभविवामवभी भ्राभिक्त निष् मीन हार् ने ने विमिन्येगी। विभ्वमिन किन्यन्भः ॥ होने क्रिनेडे थ भेडे मी क्रिक्न का मान्य भन्य पात क्षेव वर्ण्यालभूतः श्राल्थिधरुयः । कि चर् मण्या विदिश्व नार्ये।।विभूत्या गावि ज्ञानव्या।। गल्पायं।। विभागस्य ।। विभागः।।

ä۸

4

BRANCH CONTRACTOR OF THE BEAUTY OF THE BEAUT भावर विकेश स्ति भनातः॥ कि हि उमर्थे।। 3 इन्यें। 13 व्यक्ते। 13 स निश्चार्यः॥ ई मुठ्यहे । डि विये । डि विरे क्रिलेकणरेगा विकासित्र ।। उत्तर्भावरित गांधारा। कि में भाषा विवेत्मः। कि के मुप्य लिसं यरण्यान्य ।। विषे स्वित्य ।। विषे रान्या। विद्यां वर्षेता विद्या सम्भेगा विदेशक्तयमा।। इतियागिदेनुः॥

कि मार्रेश कि संघाने सकिता। कि बिन्दिन न्सः ११ कि मार्रेश कि संघाने हो गो कि संद्राया किन्द्र विषये।। रिमक मृत्विविषये।। रिक्ति विर्वविमः॥ श्रम्यापया रिक्र मिन्य क्रिक्र में के स्वर् या। जुन । इनित्ये।। ति ।। तत्ने।। भन्ना ।। भन्ना ।। भन्ना ।। विद्याने।। विद्याने प्रमायः। ।। विद्याने ।। विद्याने।। विद्य भविष्टे प्रश्ने वसा है। के कार्य प्रत्य उत्तर है

利。

धूरिगवर्ग गरीत्र भर्गद्भाव भर्गद्भाव । वहने मिथा। एक उन्यक्टा । इन्य किए जा। अब वलनयम्। नयम अह निर्व ने प्रत्व ने ग्रेस नाम ज्ञान धार्म विभे नुजेकुरं देशके । कुर भूरः विस्तान राम

व्यानी मियु निवा कि भारित के विवाद के दिका कि । नित्र के के दें जी दें गा विद्या नित्र के किया नित्र के कि धा वसके अवक जी के संबंधी सम्देश वर्धी द्वविभनीकाल मित्रमं नियु में वर्ष उस अट सकारे मां भारत कार्य हा है।। ति से रामक कार्ति वर्तः उड्डिह भूग्लेश द्वारत्म भूलिश मानका निवार प्रति लेश कार्यम भूग्लेश प्रति कार्यम भूग्लेश प्रति है। विवार कार्यम कार्

3

वहामनाभाष्ट्वा : ध्वन्ये । वि व जारे क्रिमिन्सः अभवभाषायु रण्लाका जीवन रामित्र भित्तर्भे वस्ति वस्ति वस्ति वस्ति विश्व विविध्या । विष्य विविध्य विविध्य विविध्य विविध्य विविध्य विविध्य विविध्य विविध्य । उभवजारित हा हा का मान समान हा करन स्रेल वेषामहाश्रुष्ट्रवेः मनेवार्गवास्त्रिष्ट्रव किः क्रियंग्री । स्वयः।। भग्के हर ।। जुद्रेय क्लिके अशार्थिय ज्यानः । श्रिक्ति । नम् स्वित्र विश्व कार्य कार्य विश्व विष्य नः ।। विशेषक विकास उत्रयनियधेन थिं। धर्वः जन्मिष्ट्रम्य म्यान्यम् दिन्। ॥ इरमिष्ट्रम्य मनकः मनकः मनकः ममिष्ट्रमि द्रमिष्टि प्रकः॥ देविभाग्यम

न्त्वाविधारीय्याभागा अकृत्वहरू वर्ष भे के शिव्य हुन्सिकिः॥ द्विमित्र विद्वा में भेहरे उवकाय नम्शा धार्मित्र विद्या करें। अवकारणा । ध उद्याधयः॥भवे॥ क्षा विमानयः॥ अन्।। अनिभ किंदिः। निम्हि महाभेष्ट्रे प्रमेष कन्त केन्। गुहु॥वं उभाम्हुः स्थितक नाष्ट्रे शहराष्ट्र ॥ धे साम्राहिः उर्देश सकता हेन्सः ॥ भाषासा उप रिकः रमानक नाष्ट्रेन्सः ॥ भिद्या दिस्थि भ

कल द्वासा विने सिर्दे के हि वाम दुल्य। न भूणये मल्डुर्यानिक कर्न्य मिर्गिभान भूगण्ये नग्भण्ये। ल्लास्य वन्भद्रभूग्य। लिह् लिक्य महाधारा । अति भेड्र ए उक्त व व भन्म हे व्याप च्या व भन् हु घण प हु या। व इस्मेश्वर वर्षे वर्षे वस्ति । वद स्कारिक गिवंदि सम्मेल क्षिता हो।वंभेडे महारे जिये ॥व यो इत्ये क्रास्वव।।वंक क्रियं महारच्या विधन्ते क्री खाव रहे मही विषा वे विषा है। विषण्य । वे वर्ष्य ग्रह्म य ॥ अविकामस्वकत्त्र व्याभः॥

वंस्परची उन्सेन्सः॥वेठ्याची ध्राष्ट्रा वेभायाची रा वस्या रिभा उचे बाहिया। रे निहिन्ये वार्मान्या। वस्तिक्षे स्रिक्षिक्षण्या वस्तिष्ठे नीवण्ये ॥व उसप्येहन्यण्या ४३००० कत्त्राची स्रीय नियार्थे भट्टर्ड वर्ण्यन्रेशीयन् गर्धे प्रिक्षिय वार्मिवव गुरेशय विष्ट्रयम्भित्व महाशय मन्त्र उर्विष्। भिवेश देवि उर्विक्न स्था वाभुज्यिक समाः धहा।वास्त्र प्रचित्राः जित्रो। निजिले स्क्रामिजियाने अवाकारण्यन्मः जनकवरि॥ अजीमानकल्यासः॥ स्वानवानु जनकवरि॥ अजीन स्वानक्षेत्र स्वानिक स् 3

विष्टा कि मार्च वा कि कि मार्थिय के विद्या मिया अधि। सह दि । सह दि । सिया । भिष्में गुगु धनमेहति। दे विद्यु के द्विम् भाभः मियं के विद्यु के विश्वास्था भाभः मियं के विद्यु के विश्वास्था भाभः मियं के विश्वस्था भाभः मियं के विश् धाउमर धन्यावर भाउ हदेश द्या नमस् नक्रिके क्रिक्स के हिंग्य सक्त्या कु ये करा। रिक्न्याः क्रुगित्रं महार्थे । अवाः मन्मेन्द्रः । भित्रत्याः क्रियाः । भित्रत्याः क्रियाः । भित्रत्याः क्रियाः । भित्रत्याः । भित्रत्याः विद्याः नित्रत्याः । भित्रत्याः । भव्याः । भ मुद्येग्वहाभः॥ विष्टुग्गराहेग्वायनभः धार्रिशः। भिभग्राहे । रूनेनः॥ भधानार हे । श्रुवेः॥ भम्रवे । श्रुह्ण विक्रान्ति । केलिंग हिण्याराहे । हिर्मा । मिणियान के । केलिं। क्रांनिने । विक्रा के ग्वायनभः ॥ भोति॥ क दः वनुमनुन्यद्वा ।दि स्विन्तु भूमिनु नर्ष्ट्रे ।दि अग्राम् कवना क्रिस्निगितिय सिवायः ॥ दी अभि स्राम्भा क्रमबद्धाः हरा। क्रिने यक्षा। क्रिकेश क्षा ने मित्या शेष्ट्र मित्रेशां के देहितयः । किंद्राच्याः मुनः ॥ उन्हारी केवर ११ इसिया । १३ सिर ११ इसिर । दान मुन्ती द नेव्शिम क्वशीभः मिापः ॥ विसवशी खिह्न श्विंचर न्।।यन्वनाहरक क्वन नुधितायः॥ यङ्गितः॥ क्रहरं।। इ:स्गाई नेर्गाई कर्गाई सियः। इनियन गई हरा।+ + तंगःम्यः। ते ने ने ने ने ने क्या । जिसे क्या निवस्त ।

भिगः नमः। क्रिंभे नर्गा जीने कवना ही हुने । मितः। मीनी किना हर।। दे विवयस्य क्या भिष्यर नगन्मः ११मः मुर्।। में नैर्।। में कवः।। मापः॥ के नैर्।। के नेर्।। के नेर्।। के क्व शक्त सियः ॥ की सिन्। के हरं।। अहं। वः ने इः।। हा नर्गा हा क्षणा ए हुद्वः श्रे : हुन्ति हे निया ।। मुक्यमिनेशमहरूश इंस्पूर्वन उपिद्विपालम् ।। क्य क्षाह्मस्मज्य मियिः।। इति भवेष्टर्य न्युत् मिरगाद्व विभन्न द्वा ने क्या मुं भिर्म में व्या में क्या में क्या

नुत्रमंति १ नर्षुः गाभन्य क्या क्या भागाय मिाया शिवद्वेव मिरमे शां विन्में हुर शा विद्वी दी से भुष्त मन्य ।। किंदीमी भचनु : विविभित्ति वि व व वृत्याय ।।। क्रिम्बर्भवगडिमुक्य कव गाँउ मितिम अध्यक्ष मिलं गा के भवकाभर्म भवमान्यामायिति मानगा निकीमी निम्मितनि हरना इनिम् भेः चेनी सेना मनः॥ इनिसी भक्तरी निर्देश हीनी जमक्जलरी कंपमःश हीमी काण्यनहीं मित्रायणेंगा हीमी छिंडी में मिरमेंगा हीनी नीही क्रीएमें। हमरा शिक्ष मुन्। क्रीनर्ग रिकवंग भें: मिया । ज्ञी मिक्स ।। विहर्म या ।। मिरी थार नम्य । किंपी हिंड ।। जुलवागी नुरी नर्हिं पंट्री

羽。

भक्तिन् ग्रेंडिंग्वी कवर्गा भें मियार गार्की मिर्सिश विहर गा नमयं 0:0: भुष्ट मुख्य ।। उन् ठगवा ने ने हैं।। यहिमही-ममल्य कव ।। यन ठयसम्पिन ३ मिलिमापा कि भीषि मिरमेगां छि छिन्ने भूम हर गार्गा भकलम व भूमिनि सुनुः॥ भवापम्मे विवारिका वर्ष्ट्रिश भकलविवारिस्ताम हमानि कवना विवर्भियान वेप्समिनि सावः । निवान भन्तर मिक्से गिरिधारमदिनित्रर गाइः सुः सुरुः। क्रीनगर कवनी भः मिताना क्री मिरमें ।। किंदी हरवा।

ब्रूममित ९ नर्ष्ट्र ।। अक्चलाय कव्या ।। भुरपद्य मिाया ।। विम्रेव मिरसे ।। विम्रे हुर ।। विम्रे में ही से । भुष्त मन्य ।। विकीसी भवन । यिमिनि वे वे वृद्याय ।।। अस्वभवगाउभुज्यकव ।। अस्वितं भूवन्त्र मिर्गणे ।। के अवकामपूर अवसे क्या मारी मिन्।। विद्रीमी नित्रभननित्र हर्गा इनि भेर निनी मेर्रा द्रीमी भक्तरी निर्हेश हीमी जमक्जलरी क वसःशे हीमी काण्डलकी सितापण्येगा हीमी छिड़ीमी मिरमेगा द्रीनी मेही की रिमें हमरा गिरे में मेरा की नर्ग रिकवना भें: मिया. ११ ज्ञी मिरमाना रिक्सिया ११। मिरी-थर नम्य । किप्पी हिंड । जुलवा मुरी न इह वे पट ॥

羽。

भक्तिन् उठवरी कवना के मियान शक्ति मिर्सन कि हरना है सम्मेन शर्म नवना के मियान शिक्तरना दन नमयं ०: ०: भुक्त मुख्या। उन् ठगवा ने ने हे ।। यहिमहा मन्तरक्व।।यम्ठेयसम्पित्रि मितापः १ कि सिर्धि मिरमेगां छ उद्विपु प्रवेहर गार्श अकलम स्मितिन सुनुः॥ भवार्मिन विवारिक विवृद्धिंश भक्तविवृति इति हलि कवनी विसंभिया वेप्समिन सिवारनी निवाली भन्ति मिन्से गुलि धनमदिनि हिर्गा इः सः सर्गी इंस् विगाई से कवगाइ द्रीमाण गईनिम निग्मेंगा देखें दे में हर गई। दे हिन्द मन्य ग कर है नेर्ग क्रीनगरहे कवना भः मित्यः। क्री मिरमें। किंदी हरवः। मनर

भग्युड्नभः स्रुभुः ॥ दण्युणिकविन्यु ।। वस्तर कव ।। भणः निरादः ॥ क्री मिन्। कि के हर गोरी। गरें द्वीसक मुनः भिः ठग-वह ने शक्ती कव शर मिता । शक्ती भाग शिंदी हर । शर्मा की की क्षेत्र मुद्रा कु कु नेव्या है हत्का निक हैं ही -कवना ही ही मिया । के के मिना की की की हरया नारी। रिरिश्च न्यू । के न्यू । की की की कव । कि की -न्य भाक्त नमः॥हीहरी नेवंगीयनीत कवंगीयसीतिमायः॥ भक्कन मिनो किं कुं कु हम गाईगाई कड़ कर हैने गा न्यन्यश रमायरम्य नव्शाभसससम्बन् क्यल्यङ्श इन्निमीय मियः ॥ म्वी मिरं ।। छिंदी हरं। छीति मिरं ।।

A.

य वर्षेन्। हैरय कवना हुप मिलान श्राह्म का अस्तर्य हम गार्थ। इः सम् । हिं ने । हैं कवग है मिया। ही मिन शहर हर शक्षा यमहर उमें उपनिने। शवायमें द्रिम्मर्गाइ हर्गामा पर हर्ग वर्गया। द्रिक्य वर्गया। द्रिक्य वर्गया। कि क्ये वर्ग्य वर्गया। पर वर्ग्य वर्गया। द्रिक्य वर्ग्य वर्य वर्ग्य वर्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य वर्ग्य हिन्द्राष्ट्रा कि स्मिन्द्र स्याया भः ब्रुन्व वज्ञाया। न जुड्डवर्यन्मः। य सक्या । व नेर्हें। मिकवना भः सिम्पेश न से सिन्शि हर्रिशार्थ । उंद्वेरियी र शर्थ। श्रीकारका वास्ताव वास्ताव विकास नामा थन्मयेः ११ भून धन । भद्भि । वियानिन । क्रिना क ना । यह ।।

भया वर्षे । विद्यु । शहिर १ व्यव वर्षा भमा उदिभवसाण्या विषय व्यावितिः।। द्री वर्गेनित म्लविम् निम्न वसन्वकेला धन्त्र व्यविनाष्ट्र १ वर्ष भमन्योष कुमनम्र हार्ज । यह १। सुमन यनमः न्वण्यम्बेवश्यन्यशान्द्रेश्ययेकवयाशक्रया भूनायागम्बर्गायाग वानायागा धामरारे हुगी।हैभा यारी शिवर्यम्य श्यक्षः । किसे वृष्टः श्री मव्यक्तायम् भरायः शभवसूरत्य प्रमुस्य गयः ॥ उ द्वास्य भेष्ठाः ॥ हमणीत्रभाष्म्यानुथान्तानीयः स्वाप्त क्वर्रा नवगुक्नंभन्भव्यंद्रभनीलंड् भध्यंचिवच्यायहा।

40

स्वन्द्रिति अप्ताम् व भावान्य व व्याप्त व व्याप्त । यहा। विकार मान्य व विकार मान्य व विकार मान्य विकार मान्य व रिम्द्रलण्य नक्रावमः शश्चापने शिंच द्वलाश्चिष्ट स्यः श्वन्व ॥ विनित्व विमुद्दे विन्य विम्य विन्य विन्य विन्य विन्य विन्य विन्य विम्य विन्य विनय विन्य लिस्नी भगवित्रिथन्य ठिका भगवित्रे द्वादा श्रम्हन्। विश्वास्त्र । सम्यास्त्र । राज्यास्त्र । वि बहुद्देश-श्रेष्ट्रवा विनानी। चिक्न वा गीहिवयुक्त भव्य हैवा। क्रीवेश विकन् यक दूमः शाध्येवशिव चेन्वेन्तेन्वे भर्ते सुम्बिन्ति शास्त्र वृत्ति धन्त्रिय । १९ इस् त्रकतिन युन्धित् स्कार्णिहिभ्या जी। वश्विष्ट निवध्वाउप्नम् उनुभाद्म विस्मविक्कनारिः अरुखन ।यहा

उर्केन्द्रमुद्रायनभः॥विद्राउ।भिवरु।॥ध्वित्रु।॥धन्म उद्भायनभाग उद्ये अद्वा भा कि भनितिक नायेन्या इंनिनीक गाम्यक गामिनीक गामिनीक गामिनीक गामिनीक गा जन्याहरूक गाउँ से प्रेम के शास्त्र गहक्शिक्तिनीकनियानाः श्रम्बिसम्बन्तः ११ असंक्लायेनमः शयमाक शक्तमनमाक शध्रिक शर्भीते-करीक ।। चिनि ।। चिनिक रीक ।। भे में मुक् ।। भरीतिक ।। श्चिम्निनीक्शामिनीक्शाहसूरक्शालम्भिक्शी क्रांक शाम का भारति का का माने निक शाम माने माने कलाःश प्रमुकलायेवमःशवीलाग्नाकाशकारिकाकःश श्विमुलिशिवीक भी मुल्लाक भी द्वरियं दीक भा ज व्यर्गिव ने कि भी क्षु विक्रितीक । विक्रिक । भिक्रिक निक्रिक निक्रिक । मुहिल्स मुहुरी

有。

60

ल्युम् ने प्रत्या। भर्ः भ्रम् मृत्रा सि सी थन्न कुल्हा शंसु विभक्ष प्रकार्म वेश किल्ल शक्की स्थर ग्राथ सिवायः श नुकवनाई नेवना कर्याना मन्यान्य शावही ईईई न्सु १ सुरे १ मार्थ भारता राजा है। यह १ स्मार १ कर १ वंभे वर्षे के मान्य है सान्य है कर है ।-क्टा व में पर ने यान में श मह ने में मा जिंदी क्रमरविक्र उन्ने उन्ने देन हैं स्रम्य प्रकृष्ट्याः १। उनियमन्स्मा उन्नकन्तम न्यान्ति। नुवन्ति मिन्किलम्भरायहम्। दामरोदमः।हिष्ट्रेश रेन्द्र-११क ने । कलविक व र । वलविक वे । । वल-

रिनं ने नर्भ उचित्राः किं नी भः गर्भ भित्र करें वसः ॥ के हर्गी मिना पुरिना के विना के क्षेत्र) उन्देनम्यविद्यति। १९११ याम नक्ये वि.११ १९११ नियु ने हिंदि । १९१ नियु ने हिंदि ने हिंदि । १९१ निय ने हिंदि ने हिंदि । १९१ निय में निर्माणमें विषय भूणवमः॥ सीका अविषये। मियाने। म्सम्बम्बक्लम् अरान्स् केल्क्स्य विद्वार्थे के से भागियागुग्हम् भवा : मच्यविष्ट् व्यस्तुमर् कुपिट्ट क्रव्याः॥ के भागियागुग्हम् भवा : मच्यविष्ट् व्यस्तितः॥विष्यस्य महया। द्रवर शक्त भट्टर वर शिष्ट क्रिये हैं। भवा द्रविक स्वार्थ क्रिया या वर शे क्रिया वर शे क्रिया वर शे क्रिया के निक्षित्र करें भवर नम्हर्य भागा वमज्ञ १ मुन्द्र । किह्न श्री निक्षित्र करें मिर्ग । किह्न श्री मिर्ग । किंदिन करें भागा जाने करें मिर्ग । किंदिन करें भागा जाने करें मिर्ग । किंदिन करें भागी जाने १ मुन्द्र मिन्द्र । । विकास मिन्द्र । विकास मिन्द्र । । विकास मिन्द्

कर किर किर किर किर केर केर मन्। विभेरेक्ट्र वहला मिर्मिस का धिरेने रहे हुन है निव्य स्त्री ।। वयदी। अवनः मनसेवहित्यक्रमाय क्रमायं गांच दूरभाः द्वीत्रुधि निव्हे निवह विषयो। नमसुन्द्रुधह द्वीत हर्यभद्रभन्य प्रमुख्य हर्ग । किंद्र दी म्य ग्रेषी कुल्ए मिंग्रम्देनमः १ वज्ञानि अचवन्। दे हरः। डी मिर्गा के मिया। वें कवंगिक वर्षे । विः नर्षे ।। किंद्र विष्ठुलस्य स्मारेश्वर ।। वज्रानि अत्यो। दं भव्या हिता दी शिष्टी किर शहर मन मिला दे भुववुष क्या दि स्यिन भूमित्र ने इकु ।। दः स्व क्रमीति सन्यारिक क्रमः देनः भेरपन्तय यानय भे-द्रभः कृषि गार्छ हु गुरु मि गाम : मि गार्छ क गारु विगा विदंगः ए जी ग्रहकानिक दीमुक्ता विहारं मिरा भः मिला लिकवन ज्ञीनेने । गुरुका निक द्रीमु जा मनु ।

चिक्नं भः मार्गे व्यविष्यनभः ॥ चिक्नं भः मार्गे वल मे न्मः। विद्यान हर । विद्यान । विमाना भामाया मिकवः के नेव शय मुद्रे भी न नम्परे वे ।। भः उर्म्य वर्गे ये ।। मिन् भे केरयाय।। क्यमस्यग्रह्ण्या यं सहरे ब्रम्बेर । न अवयवाया वाउउ वक्षय भः अवव शामि मिलाय । श्राम्य वक्ष या विभायक । हवायमवारा मितिनुर्यदमः श्रम्वारा मेवारी मानाना। नद्यमक्यावयुम्शाधन्यवयेमक्य वच्युम्शा निये १ उग्येन्यय मुक्ममु गा भन्ने वण्य भ्वम् गा ठीमा A. श्रेवण्य सम्भा विमानण्य स्वाप्य यूरामनम् र्जामः ११

विक् इतिभक्तवयदंगीम्नम् वस्तु स्टि ही मिन ।। ही मिन ।। हैं कव ।। हैं देन ।। हः मुगुः।। विद वियोष्ठिकनाणियम्बद्धन्तिन्त्रः। दिनिस्ति भूक निष्णि विधिवन्मः ।। द्विष्ट्रक्ताणियवयनम् यनमः।।दे रिध उद्यक्ष समिवण्यान्भः ॥ अवुण्यन्नमः ॥ धर्ष्यन्।॥ म्बन्य ।। मन्य ।। भिनक्य ।। वन्य ।। मुठयप्।। भक्तयः।। यद्वक्यः। वीचार्यः। क्रावः॥ अक्ररीः॥ विस्नायः॥वरूयः॥इकुयाधारविः॥भङ्गायद्माः॥ ठावकन्म विक्रम्ययं क्यानी महिवयानमः ११ विकर् मिरिष व्यक्ति। विक्र देवरूर हैं। विक्रु कि विक्र उर्यं वे विक्रिक हिन्दि । अपने विक्रिक न्यनभः॥ विक्र भक्तायः॥ विक्र मियन्यः॥। लियं से अवरंगिल देन में किया वा कि मी मिया -मुने । हिं मंगें वित्वसः। हिं भंभी भू दे भदा-कालायनमः। हिंद्दे हिंद्दे ने निमान्यः। हिंद्दे ने निमान्यः। हिंद्दे ने निमान्यः। हिंद्दे ने निमान्यः। हिंद्दे ने निमान्यः।

विद्वास्त्र द्वारा ।। विन्तु द्वार्य प्रम्यमाः ॥ वि के सम्य मिन्न । लिंड यमच्यर ।। लिंड निर्वे प्रमुक ।। निव्ययमण्यामकंशिष्ट्रिययय्ययद्रिक्ति। विक् विमुक्तिथम्म ।। विम्न मनन्य प्रति ।। चित्रमन्यं रायायेवमः शिक्तमन्यं वित्रायाये। कि भरा कार्येन कि धन्हणायेन ।। कि भन्यक रूपनेन।। किंत्रितिने शिंदिनम्यां स्पर्मारान्ये शिंदिन काले शिंद्रीमी रूडे शार्ड अन्द चरे गार्ड के मरे गा डिनेम्हें गडिक गड़ें गडिल हो। डिक मिने कारी । विभन्नमें । विद्द्रीयः भ्रवयन्यः । वि-जभरयं असूमस्वमः॥

विन्दर्भ सङ्ग्रक्या।।विद्यस्य विषयः।वित्र स्वीवयः। किंद्रीन्नवाया । किं मानयां मने मून्या । किं यन्तु नक्षि। विद्री के उति । विद्री से सननुन गा वर्षा विमिकिगावेडमकगाविभन्न गाविभन्यम्गाविक्रक्टगा उनस्याना । हे ज्ञानक । विस्मृकन्म १ विद्या करोनभः शालवामज्ञाः शास्त्रयः शास्त्रयः शास्त्रयः श वर्ण्यनागरारेना विद्यालयनाथम्यनादनादन्यन्यन् डेग्यकलान ते व्यास्ति विभाष्ट्र मार्थिया स्वास्ति विभाषित विभा मन्यामनगीयुग्या। द्वारा। है मानुग्य। दिनधी०भीनु उत्या निर्देशीने ॥ द्वाने जन्य ॥ किन्मः मिक्य ॥ अवध् हवातिक्य।। उम्नुस्नु। उर्न्थयक्ष्य । स्थि रहमयय। व्यम्पर्श्वा भेट्टर्गु र्वा विन्मन्मः॥ ग्रह विग्रह रा॥ किंदीईनेला

नियुगिवण्या अवविष्टुण्यिया हिन्ते हु प्याथममू भरेग्या स्मिन्न मन्न १ हिमन ९११ हरीयन १११ स्व ११ स्व १११ स्व ११ स्व म्ब्यून्। मुन्द्रश नानानाना । अवप्राप्त । विष्ठुः । वि कुवःशाचित्रः॥ स्वित्वशिव्यशिव्यक्तियः॥ भवा धरमण्ड्रन्। भन्न सुन्। भन्न वन। भन्न वन। भन्न रूरः। रागणिए । भारत ९॥ ५ म छ १। मन १। ९ १। हव ९ १। हव १ १। भवकुरुरायस्य ॥ भवसम्बिष्टकर ॥ त्रृतियुक्तस्य ॥ भव भन्द ९१ भिद्ग ९१ इन ९१ मन् ९१ मन्। भन्। अचम गाउँ नेमन्मः गाउँ निम्य नेमन्मः गुर्निः उला उन्मिन्। विवाः भवाद्वि॥धर्यः धरमेष्ट्रायः विगय

येगमम्बर्याक १ जन १ सन् ९ हव ९ हवेन्द्रव वर्मम्ब भवकद्भममन्द्री सुरेशक हमयायन्।।विश्व मियमियवभः मिन्। छि मियहमय हुणेल है स् कायः ॥ नियान्क भक्तां अवस्ति भागारे निया क्षेत्र्य अक्राधार कवसीयद्भला नुक्ता शासिक विद्राल अक क्वममिवास्त्या हमयवन् १५ न्न १ काकि १ मा १ वर्णग्ववर्गम् वर्मान अभम् रीवम् भूषिष्ट सवास्याता भवन स्यान्य भय १ क्रिक्ट क्रियम यह १। ति भूने ३ सून १ अग्रय ३ द्वा मनुष्य व छ। ११ दृष्य भाव भाव भाव भाव भाव मियान्यानिस्थव सिव्यय भ्यत् के मिया सिवगहाय निवः अद्ये भेराया ११ छि उसावः अद्यविष्ट्राचामी द्वाः

為。

03

भवकुउन्वे वृद्गिणपित्र दूर्मिणिपिति वृद्गिमित मनु सम्मितिम कि द्वीनेयाय निक्ष किर्ण हर श्री भारत में विक्शी विमानायद्वाका मिापः ॥ विद्वाना निवाना करा कि दे अस्ति कए मुन्या १० व्यनमाय विम्न भक्तिवायणीमिक उद्येन्द्रः भूमेमया वेशा विव्युनेव असमेरे हर ।। विद्वः भूक मान्। विचुवः भुष्त निर्मः। विश्वः भुष्त कवना विचुने निया विनिष्णे हिल्ली है प्राप्त वर्ग है से भवा । नव सब्देवमन्त्र नर्ज पट्टा विवद्गे हत्। हवत में क्रिक्ट मिन। डीमडीय विमासविष्ट हरप्यिमानिका द्वार तिया शक्तिमाई कटा कवरिं उर्दे म्मुया। भायबमें कुं सूर्यंबमें बद्यान्मः कंनारि क्वण्णयन्भः वन्तिविक्वण्णयन्भः वन्त्रस्वन्यः भवत्रम्वन्यः भवत्रम्वन्यन्भः ॥ निव्यन्ति वन्त्रत्व वद्वते ह्वरः॥

वासीयेवभा निवाशवास्त्र कर्ण कर्ग उद्गेदिए मन्या। गर्छ भन्ने रूपे प्रमान भन्ने राजा श्वेवमः हव्हव्यन् विहवे हरान्यभा हवेम्हव गां ले अहः क्नायमुन्द हरा। सहः क्नावनपूर्णय वर्मवनः भाज मिन गाथवग्रामिल साज मिया गा भेरे में विद्रक्त का निर्देश का मन्यकर्ती। किन्नं ने निम्यापिनेन माणि के कीना की वास द्रवायन्भः। वि हा विभन्त द्रवने हुन।। क् द्रीभवेष्वर्गुलभेष्ठ्य मिरःश द्रभवमन्य मिषः॥ रम्मेनेश्टंशहरमध्रिकरवीर्जिपन्तम् सुर्याश

हिंदी किंदी नकी कर्य क्या या मार्स हरें। इति मिन्। इसे मिना । हैं में कवन । इने में ने ने हैं। । इस मान । किनी विभिन्न प्राप्त । असे ने किनी विभिन्न प्राप्त । क्रेंग्रें कि श्रेष्ट्रण गारि क्रेंग्रे मिन गार्थ भुग्दा मायाः ॥ भूदा नाय कवना स्राप्त भिन्न कि ९ नेर्हाः॥ भुग्दा स्राप्त भूदा स्राप्त कि १ नेर्हाः॥ ीर्वित्री भंचका मध्य भच्च एक ग्राम्यिवि मिन्। के मिलिनं भ्यक्तिमायः॥ के अस्मारा अक्रियक्ति। के अबनः विविधिमिनि वर्गा के ही भः भुष्ट म्यूगा। No छिंद्रीनीलिया भजनाया भवकामप्र भविभे क्यूमिपीविम्निक्षे भ्रांक भन्न भन्गा भन्न

में ही की लें भिरः कि ही विश्व किया किया कि किर के लें के की मिल की मिल की भारत की कि की भारत की भारत

मिही क्रींचिमः चिहीमी काणं नही दमक्रीतन ही भकतदी में एक्रीही में श्री ही में मिहीक्री निमः हर गहीमी चिहीमी किर गही में काणं नहीं मिया शाद्रीमी दमक कलादी कव गाद्री मी भक्नाद्री नेर्हे शहीसी में रेनी की की की किल की भाः वन्तर्येनमःशिष्टिरशा निवश्याभिः मिषः । विक्वशाक्ती नेवृशानः समुः ॥ कितिक्री सः कि नीद्भी दमरमामन्त्रयं भाष्यामन्त्रयं यग्नत्-माभयां विद्रीची विभाः क्री एक मंचु विवय यन भः॥ लिहराशकी मिन्शिक्ट मिए शिल्कवना की बैड़ना भिः मन्ः। रिं रिक्तीभिः भक्ति प्रकेरपी न नियमी ह

लिहरंग क्री मिल्गाभिः मिला । भक्ति पुर्वति व्या वनगरेन्मः १ छिहर गईनिमा गार्निया गार्ने व्या गानेन्। ये सन्ता कि निव्यापन कि स्विधि यन्ति ये अभियोधि यन्ति ये सम्वाधि सम्वा शक्षील उद्विप्रमेष हरं।। कि भ्रिपि मिन।। यम ठयसभ्यितुं भाषा ।। यमिमहासमहाय कव्।। उन्ति गवीं वेंग्शाममय ०:०: श्रांत मन्या शिव द्वीं भाः भक्ति विनव्ययिवस्य हिन्द्र । इति मिरे ।। इति। द्वें कव गद्भिन्न ने गाइ सम् अनि सन् भन्ति नि दिगिनीके वमः भविभित्ति भ ग्रेट्ट विभिनिही करने क नित्राणी भक्नज्ञलमक्ति गिक्टी हराय है सम्भक्षा नितृ

उर्वा किही कुंद के की की नमंशी भाग की भनि विवाली अन्तर विसेमें पश्च भूममि अकल न विद्र विसे के मह नि भवापनिष्ठिष्ठणीति अक्नम् भूभिवि दिवि मुगळ १ दम १ वस १ वन १ वन गिरयम में ठीका भि भया सु मर्गित्र १ वर्गितं १ विस्तु निन विनि १ विनि १ विन्न उन्य १ केम्य १ उपकृष्यम् अकलमे ने विष्युण्ये ९ थामक कार्वाक करविति अक कर्य मुप्य परिश्ला विसस वानीमं अकलमनुभानः धूर्णन्यम् लिपित कानिकानवामिन इंदर्ष ध्रीममसन्देश किनेश अग्यावन्त्र विदेश के किनेश किनेश किनेश के किनेश किन भागकिशिनि हरा। विद्यानी अन्तर मिन्। विद्यम थयाव भूमभि मिापः॥भक्न कृति व वि क्र नाममनी क्रवं॥

À.

90

भवण्यसिणिज्येशिल बिन्।। भक्कलमन् भ्रमिनि मृतुः॥ चिनीक्रिक् में में मार्डिक रोवमः शहर में हर ।। ही में मिल्। इस मिला । हैं में कव । हिं में ने ।। इस मिला । हैं में कव । इस मिला है म हें क्वार्टिन्। इः मुनः। विद्वी सी में मुन्ये नेनः है के कामारे गाई से सामहिंगाई ए एड एपिट थे। इंड उन्ने गाई थ थान है गाई यह कि है गाई मन्दिक है। किंदी की भः नेम ठगवरे मान्ये दी भारा किंदी हर. की किन ।। भः निगयः। विभवगवहें कव ।। मन्सरों नेइ ।। द्रीयादा सम्या विति ही भिन्द रमयम वायापिति भन भेडेबमः शोरे हमः शक्की मिरः शिमणः श्विमपः श्विमपमक्ता

मसका। के मंगीमः विम्युष्ठगवहुँ नभः ॥ मंग्हः। नी मिः। गुं मिः। ने कं। ने ने गः मः॥

वायामिनि नेव शाभवसे हैना राम्युः शानि भेग्मी भार विवस्त कराव हेनभः शर्भ हरं शंभी सिर्गाम सिए शंभे क्वा शंभे ने शाम स्मारी विस्ति गर्भे क्वा शंभी सिर्ग स्मारी सिर्ग श्री सिर्ग में कर शीं वेड़ शारा मुन्।। कि ही मी के की की हा हगय है उन्ह्री दीराज्या कि ही हम भी मी मिरेशा में मिए।। क्ली कवशी भे हरा वी नेर्गा गरे ही सक्त मुन्ग कि ही के के वर यन में।। हार ।। दी मिर ।। इ मिया। है कर गेंद्र न्य ।। हा मग्र ।। कि ही मी की विभवित भव्य स्वित मन भव्य भव्य । हा हर ।। इतिमा । ह निया। है कर । हिं नेर । हः मनुः। के दूर भविष क्रमुन्यमं पन सेदिरेदि के पिरु लोही स्टाप्टा दें हरें अदिनिका किसामा हिं कर । दिं नेर् । दः मर्ने । विही दमने कर्म वीन्नावि देशकीपिन्धुन्दर्शेइन्हर्शिक्षाक्षिर्शेक्षा द्रेकवराद्रिं नेवराद्रानि हीनी द्रीनी दः कर्षाष्ट्रे महिनमः॥

#· 99

किंदीक्षी येंगे सरेन्सा विद्रीनी क् एक नेन्सा १ कि केंद्री वी के द्वी वमें कावां के विके रामण्ये में मुन्य मीयक् क्रीकि कि कि विद्वा कि द्वीमी द्वी में ये ये में विव ठ वहवर्षि अत्यामध्रेमअत्मार्गायानि हीन्मः अप्ताश्रीकृतिका। विद्रीमी की उपने सुदेन मः १। विद्री मी की हरना है मिरना ही ही है वर्क निके हैं ही ही है है के की की की के लग की की किरा कि कि मिरा है किया । है दिन का निके हीही कवगांकु कु केवंगा की की की भी श्राप्त मन्य गां कि की की की कु के के की ही ही की का का कि की ही के कु की की की अन्तानि क्षीकी कर गाई के मिल शही मिए। शही का क्लिक ही ही कद । कुं के नेर । ही ही ही ही हा मन्यदर्ग।

चिद्रीसी क्रिक्न कर्मियेन मः ॥ किंदी किन्म मिभ्रभ चम अवी कम्य विष्यु कि मुक् विद्रीहरा । द्वीमिन । हिन्तरमीय मिपः ११ अभ अवम्य हु कारा १ क्व शक्त वा ने व शक्त मनुः । विह के अन्त्रेय यन भः ॥ हरू । ही मिंगों हु मियाः ॥ दे कवनी हैं नेश्नाहः तमुः॥ विनि ए हा हु मार के का जा के का मन स्मार है स्वत्वय न्भ ० उपान रण उद्यक्तानुसम् । द्या भम्म मु न पार खाउपस्क भारित्मः १। इ विकलिंग सुसु भरे ना भन् भनुण्याराश्व । वर्धनाद्य वन्तकण्या भनुष्ता भनु र्वर्ध्यमान्त्री। राष्ट्राणिनं रागद्रेश विष्टेनमं ॥ व ग्रंजना। विविराये विद्यायन्त्र येन्। शासस्य ना विद्रदूर्णभाष्ट्रेण्ड्रायनाः यंग्नी। विनिधिन्ने विम्रोवभाष्ट्रिये अक्वलायमाः॥ अधानि। विद्यी अगिवि धम्यकि।

A.

अगवि कुल्ए कहानी। विश्वन्यः भेभाराश्वाकाशका। विवर्धनिविधाईन्मः शिवनाना विद्वारणी विवर्धन भर्ने देवमः शक्ति । विद्यम् यद्या वमः १ था देमी १ विधाने ने विष्ये भेरे कुन में श्री मह स्ट्र मा श्री कि रह विदेश वन्तर्भ वस्त्यात्म वीक्वली । वस्त वस्तुमा श्यानभद्श श्रमगैन मिवसु कु पष्टा वा भागुण भेनान क्रान्य विनक् ग्रम् धर्मे व्याप्य मिर्गिमप्टा नवित्र स्वितिः। मस्तिम विष्ट्रम्म क्राइनाम इष्ट्रायगृष्ट भ्रमाल्या गेह्रेज्यन कर्नेन करित्रा १ गन्मिन्यरेग्रियं अन्द्रभावनयित्वभा १। उद्यासा दन्धानुक भयुकाः मिवन्णिच्छः मिवः धामनुष्किकः कामी भिव क्सुः भ्कीवितः॥ उद्यामा । ॥जार्मा उन जान

नर्गिक सर्वन्त्र उगाव रिश्यक्षिः गत्रिययिणिमं उभक्षः मक्रमनिष्य नक्तम् जी वि निर्मिक हारू निर्मे ने वं मं ने मीमाविष्य में मार्थिय वस्ता भागी दिनि गहिनक हार शक्ति विमुद्दे भन्ते मायनभः॥मिमाक्रेश बहु भट्टमान हर्णिन वेक्र चित्र ज्ञानुभे वनासन सम्द्र सेव्हा भून सम्प्रह १। अनुस मुमीमिन्वि धरी इन नमीभद्रान धनभीकाना कारिक वन्ति वन्तिः क्रिं निसं गं \$ = ज्ञरा । उद्या हर्या महणी भेष्य भ्रम्मामन भूमीवयन का भप्टन विमुख्यिक अवग्रिन विम्नन की अवं भगमेण में हुण्यमं दुमं विन्दृ भवद्भायमं दुण्यवम् 利。 इस्ट्रास्ट्रील दासवासायुट्मानेष का कास् अवर्ष व 95 कुलाकु भगका गार्तीक उत्तेष मा या भना ने प्रभा नेन्य श्रमेष्ट्रभूष्य हा भक्ति। अस्त्री अस्त्री करते विद्र

भवभागानुका विश्वचि॥ यस'

न जिस

इलमानु भूपये ॥ अडिमन् महाना ॥ धन्द्र ममानुक् भर्थ प्रायु र्मिष्ट्र कि जिस्ती भूषित उत्तर मुर्विह-हर्मयद्भेर्ण इंग्रम वुर्य देव विकास किलान भण्यत्य श्रुतिमंग्री उत्तिम् वास्त्र । अतः वड्डल्या द्वार में निक्ष निक्ष कि देव विषय । । विषे मस्मिकार्मा ११ एवड न्न मन्गल धिन क धारियक धारियो कार्य भागमार मिलायम् क्रिक्रियायात्री। वामक्रि ना कर् भूष्म वर वरिमान कर्न श्रीम विवस व शही निवद्धिशी मा कार्म प्रमाश कि वद क्यां नतः । विवद्भाय शिक्षाय शिक्षाय शिक्षाय । विवद्भाय शिक्षाय प्रमाश

उनिक्र अस्या उने मिछ गुरु क्या ने वेट्ट ०:०: इह स्वामिय न्त्र व्याः श स्वधात्रमञ्चिति । श विक्रमये कुरूमप्रे क्रिम्ये मिन्स हेर करि भूत्र माप्या ह मीर्न भेष्र वहन है कि नी थाउमर्गुल नेके में मिकमा मिका भनी भने वा भीन यिव मिवंत्रेण । उड़ मानिम् केन के दूनवक रिव्वा उसर्थ थाराणि भविष्ठ रे लि असु था। अष्ट्र पुरा रहे प्रस् सीमन्न प्रस्पेत्र । विद: कर्ण प्रशामि भूक्यमी करा। किंद्रः कर्ण थानुगिमास्मिवयामिक देनि थाने मुनित्या छि मिया दुर्य ने में शर्म ही। सम्मिया ने शरि वेंस्व व भन्ने या। हि विष्टु ।। र ।। कि भण्या ।। विकार के निया ।। कि विया ।। पर ॥ कि धनयत्र ।। वणा विभागतित्र ।। वं भारति के ब्रेष वयक अप्या ४वःकेषुयाद्वक्रअरावमां । श्रुप्ति द्वारीवमः ॥ भ्रेत्राश्वमः वारेगामिकारी

Ä.

34

क्रिंबरे॰१४०११क्मे उन्हे॰११छ०११क्किंत्यायेवसः११मृह्य + छिनुं हर्ययमाः।। गिर्मेश । एककार्य ए द्रा गिर्देश दी मिनस्युन्द्र गिह्नवन्द्रेथ्व गाधित मिणिय वसम् ग विवर्वथिवा भेष्टिकीवाई क्वमण्यक् ॥ महत्त्वर्थिवा॥ जैमेमक गर्छि बेर्ड विन्धा । उतिभाष्ट । उम्बविविव इकी कुर जी। रोभर री भुड़े। रिमेर्ड मिरिश कि मीरिश मिन्या है। भा है है मिरके भन्न हो ने वेस्व है अपया वृत्वाभाषावर् वियाविवेत्री वियाविवेत्र भ्वाविवेत्रभन् व्या । इतः धम्म भ्यत्ये स्तिष्ट्र स्तिष्ट्र स्तिष्ट्र मा म्नुभग्यनभः १ मुण्यम्बेन भः १। ई इन्रिभव। उउःथा वक्षेत्र थापूरा वृभेग्येक लाभुग्ययो। उर् क्रिक्ट विश्व के स्टेस्ट्रिक्ट के स्टिस्ट्रिक के स्टेस्ट्रिक के स्टेस के स

अक्टिन पर्योग मियान भिने होती विक्र में मित्रमा भी होंदी धन्मां विमयम्बर्गे धरण्य ग्री गल्मामानिगम भविभव्मे यवकाल अमुरु १ डिडिमीका विचया मुख मुमीका नेपिच्या। क्रिक्र पेकवरयविधा भुणवा शास्त्र मारि ही भरया में विचल्भण्यमः॥ इतः कवमवायगुरा भाइमभूत्यः भाडीय है।। भगिता के प्राचित । इडः भड़ान सम्बन्ध महिन्द्री ने वह दिन्द्री ने व नम्बन्धिमालं ज्या विदः द्राम् भीष्ट्रम उर्वे के लक्ष्वायन्य उपयान्य भमन्त व नत्त्रेन भः शम्य वा। वमः नये। याद्वाहिन क्रीमेर्माल जिल्डो । विदः दिए उस ायनं की मिक्टो। इं इटो भी है हैं के किस कटो। इं इटो सम्बक्। कि:कटो नियं का। कें कटो अने का का कि मन्त्रक्। दः द्वा भेन्त्रक्याक्षेष्ठ । देव थाइग्रुवंशक्ष

南

भनः वज्ञथानुकन वर है वयक नारिः धानु गव भरेने ना। को वनान वज्ञायार्थ व्युक्त वर्गा वर्गिया वर्गाव वर्गान वर्गान मेडे रखना क्या किया हिक गा देविस का विद्या का मानका मनुशीरक गा विविधि कुला विधाने रू के ना ना भिष्ठे मू क्लारिपर्ये विभूति ।। विविष्ट क्लारिपर्ये रिम्प्या। वि मानुष्कलियाय देन्यानी विमार्डे ने निकलारी भर्य सम्मित्यनमः॥ अतियाद्वात्यक्षिः ॥ क्रिष्णक्षा विडंडी से द्वार महामान भारती माना भारती भनुकास्याकग्रह्मकामुक्ता विक्रुत्तिव्येभनुभावक्रुत्नाः सिंही सिवड्डेनभा कि कार्या । कि ही के सिह भोगीना। किंद्री के मदाद्र अजीपिन गारे दी के वेणवा किंद्री के भारत

कि उत्र: दिनाय रीय जो। कि उन्तिमाय विम्न व पिनु स्या नी भित्र उत्र: मिव: भूमिमया नी। ३॥ कि दक्ष ने पाय विक के दर्ग मा य वी उने धेर : भेश विमा उमायि के हैं महितायें वे भः इन नेवः ५० ३॥ ई विथा कि अह के ने व के ये व भी व अरुशिलियक्र शैक्त किन्य पर्भवम्बन भवन्य निर्म भूण भवत्र हराक्षेत्र किन् इविमाग्य इधामन्त्रम् ग्रम्य श्रम्य १ क्रियं १ क्रियं भी अमर्यः।किम्मक्यः। भक्रतन्यः।।गद्वाभुद्यः। नव प्रमान्।। नि ही धन्त्र हैं हैं मर्वित होंगारिका मुन् महरे परभेरे महमेडी महमार मधा मधा मद 9 मेन्स् भक्तिव कुल्या भूका । यत्नाः भागा कित्र धम्रा

कि निभाष्ट्र अक्रमें ।। वन् भक्में ।। वि दी भः थिव उक्रभग्यामा। धरून मिवस्तुथाय भगन्तरनगत्त्वभेः। मर्देवभेः भर्भे। भनेप्य शकानी शिव्यू शिक्य श्री मार्थ में मुन मिय्र के थय प्रयमीयमक्रमा के हिन्तु। प्रयेवमः।। भनः म्या मिन्य हे विषया है शवद्वा मन्या थक्तया गम्ये॥विद्यक्तया। द्वर्य ॥ विधवभः॥ मीर्थनेभः॥ म्यसहन हर यह । धर् है विविश्य म्यापा भार हिन्देगर्गे मक्टें गमनिष्ठिष्मिनिषेत्रेग्नपः भुणन्मः ॥ सीयमुक्तिमः॥ भट्टना उन्दिमण्य विश्व वार्य ज्ञाना वनिष्वाः थ्रेश हामन्त्रकारी विशकाना ने ही । वनम्भी थ्रेश मियां उट्टिया विद्यां की । उद्यामा भारती महा वर्गा।

मन्य १

मन्य में मार्गः रेड वर्षे हा । यह करे। यह से। यह से नुन्धागम्यः। व्यास्यास्त्रं । भिन्नः हे व्वान्स्मर् वाभारतः विविग्या मद्राष्ट्राः । महिश्विम् सिनिभिने ॥ उन् क्राव्युः धरेलकं मिवधमवी अध्वे ॥ मन्ध्राप्ते॥ मिन् भुके ग्या स्वीर्ध । बिज्म धरानमा । मुक्रान्दि विश्व छिज्ञनम् । सन्तर् द्वारम् वन्मः ॥ मात्राक्षा हरवन्। सिन्। उत्तरमन्।।वंदकम् मक्त्रं धक्त्रं विक्रान्त्रं ग्राम्यः वराष्ट्रार्वत्रभावत्रः॥ मन्या मन्ति द्वार्या मेही।वद्या सक्य भक्तय भक्तय निक्र नामारी प्रत्य यम् वः धरयानी । मन् मिन् केरवे । इसे पहक मन्भार्त्र विश्वन गरा प्रस् अवक्षिष्ट्रि छिन्द्रवा <u> जया। यकार्रिक है।</u>

A.

93

थार्डि मेर्क नमंशा कर्न्य विष्य । नार्ष न । विगयनः परमा मुक्यामिक् करक्य। है। यहकायाम्स्यायम्याविम्नाय। गर्याष्ट्रमाथण्ड्रमाः ॥ भूनः कन्न यक्ष ॥ कगवनुः मुद्राम ॥ सुन्। मानि मारिग्य। मिन्या वद्याल्या थर्मा विस्ता । गर्मा पूर्ण। उच्चः मंगुन्। भन्ग्यामा क्रिक्य १ हेर् । वद्क्या बह्य थक्ष्या विक्र लाया गर्मया वर्षा गत्या अस अम् हीय वन हिंप हा किल् नेंड वड । स्वयमहेन हड वडी। थि छ : हेरवेंगे इन महने। वा भाकः हेरव मेर्ग्या नस् द्वाः ॥ उसे वा उसः धर्मेने मिवधारी भा र्किशम्बर्सीक विकाम्हरा यहावित्रम् शम्यास्य विस्थालव हेन्यसीष्टा शास्त्री श्रीष्टा श्रीया श्रीय विस्था श्रीय विस्था श्रीय विस्था श्रीय विस्था श्रीय विस्था भहनाम्मानम्याम्यामानाम् । वर्षिष्टे ॥ वर्षिष्टे ॥ वर्षिष्टे ॥ वर्षिष्टे ॥ वर्षिष्टे ॥ वर्षिष्टे ॥ वर्षेष्टे र्ष्ट्र ग्रीमिल क्रेने वेट विवस्यानी क्रिकाश डिडिक लाम बनाने शास्त्र सवस्वतिः॥ उउपमानिक्यन्ति ॥ उवस्वति मनीय। भ्रम्भिनः विष्या। भ्रम्भिनः विष्या। भ्रम्भिना भ्रम्भिना

भर्मिष्य वहरे विनामेव विनिमियन उत्से में स्थार है सिवे भन्त ध्यमन गमलिया अस्ति ने रहे वर् अव भीत्र में से ने रहे चे हो है मिलि के भी के हैं है कि प्रमास में हैं। महिना समें हैं। वित्रहें भावके सुद्दा भी में वेसू पार्य ने न ह न हा मा उने हा श मिन्छि। उर महानेनेपि उर्वानने में वि रहारी ना क्रेयवमयंग्री । अन्तिन महाग्री । ववस्य ने मेणन जुहुं ग्री मेणयनविः भावनभयानु जैसे में विकना ने में में का ने वार्ष कला वन उद्या लाक स्था के देन कर में कि में श महत्यद्या भागानि मेयसुम् नि भर्मना निवानिय ध्यामाय । विकाम निवानिय ध्यामाय । विकाम निवानिय भागानिय भागानिय । किंकिनुंब ॥

À.

99

जिनेयुवाभी क्रिक्तिः हम्बद्धान्त्री । भूवः धानुनी व वेव भात्रगष्ट्र सु अगमा भुणव्यात्र यहा है वयस भूतर् भी न्वत्वमा भन्नवीति भीते पाति विकला मीकला हमी द्रारे कलांविल भिन्न क्रामार्स क्राची मार्स व्यव भारत्ये निय देवधानुग्द गरमन् अन्यर क्यु निति अ अर्थ उपम्यस्यान्यस्यान्यान्यस्यानिसीयम् केना किह्य ।। जी मिन ।। धिमापः ॥ क्रवर ।। इ वर् ।। इ वर् ।। इ वर् ।। इ वर् ।। ०० स्थित स्थायमा । विवर्तनी मामग्या वर्तन वद्या मेमन्यू थन्त्येष्ट्रेन्भः॥०।। म्हायप्रकृति॥ वप्रण्येनभः॥ हिं भूते। ने कुं क ने क निक के र निक के र निक के

मन्यमा निया क्रिया मियी क्रममं व्यम् के श के व्यक्तमं मिरीसियां।

भवकुग्रमहेगाभनेमहेनभः॥ लिबढि हाङ्ख्यमधेने जाउन कायगभर अम्ववयम् करान र गर थकन मुनम् । जर माममं । एक विष्य कि विषय विषय के प्रमाण निर्मा । क्रिक्षायद्गित्व मिर्गाम् ।। क्रिक्य क्रिक्ष विकास विकास विकास कनुः। चिंद्रीमयाँ में दें दें या भणन्मः। हे हम्गाही मिगाडू मित्य । हे कव । हिं ने ।। हिः मनुः । किन्मः मिवया। ० उँ। कि इर गानिकाशः मिष्यः॥ सिक्वगाया नर्गाय मन्।। व वमन् भने । भः उर्वष्यक्ष या मिस्र भेन हरयाय। के कमेरवेष्ट्र या य भट्टरने मुरेगा ने वृद्ध वन्त्रयः भारतीय वन्त्र A · भः अवव । मि मिनिवान व । व उद्भव । । य महत्रव । । भू वन में । 30 न्वसीना विषय। चिंडु मुंचार विधित व्यान विष्ट्र भवासूचनविष्ट् नम्सु मर्जु पहिं कुन्मः ॥ के भेष्टि एवन् यन्मः रिनेम्बः यहाकाने चलामिने महिन्मने वा न्यूनामन वा न्यूनामन

वै वन्त्रेयवा।। वे क्यावा।। ये उद्ग वरा। क्रा वेमानवा। किंद्र मिरेटः अवार्वे क्रम् ।। विषेरे रूक्ति मिन। विराधिर विराहित कि मिना अवन्त्र स्टिनियुक्तायं करा १ रियुक्त हे जी अपय नेहें। वमन्त्रम् हेर् वमन्द्रय भन्य स्पान्य यन ए एक ही मुंभ ग्वार कुक्टा मुंभ ग्वार ना ।। के हर ।। के मिन ।। के मिष् ।।। है कवनितं नेइनादः मुम्।। एक निक्र ना सकर है विवयनभं।। क् अवक्रा हर ।। की ग्रीपुरियं।। कु स्वारित्य मियः। कि श्रुवर क्या। दे मित्र भूमित वेश्व : स्वनुम् कुण्य । विद्यां समिति हेन्द्र यन्भेश निष्या मा अने के निमा शालिक हर गेडिं मिगी न मिताया। है कवना ही नेश्ना कर्या विनमः निवया कि हर्यया। वित्रगाभः मिष्या सिकवं गायाचेर्गा य मन्द्रा व रमण्याचे वाभः उद्यम्यवश्या सिस्निन हर्याया व पानेस्वेगुह्राय। यस्ट्रेर्पु देया। व कु व्यक्ताया। भः भववना मि सिमानिवना वना व कु वन । य ध्विमयना हवयनवयिनित्रिभुवेवनभः॥मद्ययेवयरन्त्रभः॥मद्यवयम्यभ्यभा अमुपरिय स्वय वायुम्बा अस्य स्वय स्वयम् अस्य भारतिय अस्मित्।

क्रान्त्वनामिः क्रान्तीमः

30

ही भायम्य यो सम्भागा वं मानाय देवाय या मान्य माना कि दे विया दिक नारी भारे प्रदूर माना । । दी भ्रित्र क्षा का का विष्कृते ।। दे विष्ट क नारि भारे प्रदूर ।। दे सामुक्ता कि भारे वं द्वार प्राथी । दे मानु श्री का का नारि भारे का सम्मान वा स्थापन ।। भारे प्रदूर का का माना कि साम्या ।। वन्नायुर्वश्यवेश वद्वायुर्वेशक्र मार्के त्वन्युर्वायं विष्या। भाषान्य। मुद्रम्य। मन्य। विष्य। विष्य। विष्य। विष्य। हारा भन्माया । विद्वार्थ । । दीना है । । इसरेव । । अक्रेश । विस्तानायः॥वर्ष्यः।।र्द्रायः।।थरमवे।।अह्रम्यक्षंवनः॥ किं मागरा क्यांनीमिक ग्रायन्थः ॥ किंद्र निविव कर के ग्रायाः॥ िक देवार रहे। हिंदु से भर रहे। हिंदु कि भद्र है। हिंदू नाया में भार महे। हिंदु से भर रहे। हिंदु कि महाने नाया विष्ट कर है। विद्दी मन न्या विद्धा प्रमाय ।। विभिन्न में या।। विद्धा त्या विद्धा विद्धा विद्धा विद्धा विद्धा विद्धा विद्धा विद्धा ।। विद्धा व रिक्नीम द्वे भक्क कारा गिर्द्ध हिन इय गिर्द्ध मान्य गिर्द मान्य गिर्द्ध मान्य गिर्द्ध मान्य गिर्द्ध मान्य गिर्द्ध मान्य गिर्द मान्य गि लिंद्रेन मनिव्या विने हे स्यवर दर्यो। विक्रम्ययमिनिवा किंद्रयम्यसन्द्रद्रशाल्क्ष विर्वेशायके । विद्व वहण्ययम् विद्य वर्षिय प्रस्ति। विक्र केव ग्या गरंद शांच्यु में निष्य पित्र कुलाद श लिंगे सेर रूद निथम्द ।। एक स्वनु यह नेद ।। विदेश रे दे हैं।। डिभाननुदेश किमादेश डिवेस्ट्रेश हिया है गार्ड वार्में हैं श है नेहैं। ईसम्भारा है।। है सक्ता है।। किस्पार एंडे।। किंद्रमन्ये विकास ये गा कि संस्कृ है नारी गा किस इह से हो गी किसमग्यें रण्यों ने कि के मिन्द हैं ।। कि दमग्यें म्यंगीर उन्ये। शिंद्रकृति। शिंद्रक्ति। शिंद्रभागी वार्गित्य के स्टें कि विषय में यय।।। गंदिन नवया।। विस्तानया सेन्सूनयः।। विद्यानद्वः॥ स्निक्ते ।

नि द्रीम् मनवुन्गरस्य वभः ॥ हिन्द्रिन्।। हे व्यक्षा के भाई भन्नः॥ न्नव्हार्य। मन्त्रित्य। द्वर्य। मन्द्रर्य। हिन्दी कर्ने कुर्य। विष्टे विभिने। व्यन्मर्थे। विस्तेः मिक्यां अवस्त्व मिक्यां। उसन्येव। उर्निववत्या मध्येनहरू या विष्मेलव गुरुष्या भद्दिल उम्ब्या । वि विभवभः ॥ गुङ्गिगुङ्यागिभाविषवण्याभवविङ्गिप्याङ्गि । थण्याभरम् स्वरूपराया स्वरमेन्ये न्या द्वा विभवा १। स्वर्ति व १ स्वमः । विकार । भन्। भन्न मानाना १॥ प्रप्रशा छिद्रः ॥ छिद्रः ॥ छिद्रः ॥ म्हान्वन ॥ दिवन ॥ विवन ॥ विवन ॥ स्वाधिक माना १॥ स्वाधिक माना १॥ स्वन ॥ स्वाधिक माना १॥ स्वाधिक माना १॥ स्वाधिक १॥ स्वाध A. भावभाव पुक्र ॥ वृद्धित्व भगामनाति । शामने सुन् ।। भवितु १ १॥ 39 भगमन्। शाउन १॥ धेउद्ग १॥ भिद्र १॥ इत्र १॥ मन् १॥ मन् १॥ मन १॥ मन ॥ भवर ॥

किन्मनभः॥ कि सिवायन मनभः। द्विः ॥ ३०॥ इति मन् ॥ विनमः भवार् ने।। थराया। धरमहरय येगाय येगाम द्वाय करशाला ३ भट्ड वरड विदेश व्यमेरव भवक्ट्यूमभव व्यमुउद्यांका १ हरू । चिश्वमिव निवब्भः।। सूर्ग विविष्ठम्य कृति है चुन मिर्ग । विव्युक् भन उराः भवरा भयरात् उसे मुवरुय भक्षेपे कवसे शिक्ष में इसी। मुरापिति। इस अक कवस मिवाक्षाया हमय वह १ भाक १ काकि १ भा १ वर ए १ वर धाम वर्षेर मिन भाम भी गरी स्वित् भवत सुन्ति । कि स्वति । इं इत्यम् ना मार्थिक थाइके भाषा भी मिवारूक मिर्देश के मिवारिय स्वर् मिवण्य मिवगहण्य मिवः श्रेने भेमें प्रतान । अविष्य मिवण्य मिवण्य मिवः श्रेने स्टेने स् भारा अन्दर्भ हरेगा था हु मुश्यनमः सिन गडिमान यह का निर्मा इन्मिन्निः कर्णकवन् विद्वासम्मिन्द्रः ॥ उत्तर्भा उत्तर्भा विद्वाः व्यविनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्यः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्बन्धः विवनम्वन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्धः विवनम्वन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्वन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्धः विवनम्वन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्वन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्बन्यः विवनम्वन्यः विवनम्यम्यम्यः विवनम्बन्यः विवनम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यम्यमः विवनम्यम्यम्यमः विवनम्यम्यम्यम्यमः विवनम्यम्यमः विवनम्यम्यमः विवनम्यमः विवनम्यम्यमः वि

लिश्वास्त्रक्षिण कि सुद्दे मुन्द्रशिक्ष क्रम्यन्ते हिन्द्र्यम् नद्र्य नभः क्रम्यनभः क्रम्यिक श्रायम् सम्मित्रक श्रायम् राम्य अखन्यनभः अख्रु उपमन्यन्त्र भनेत्रन यनभः।। ति सम्मेत् उद्देहरा। वामेन व्या क्रिक्ट मिरा। अवया भ्या निवि वामेन्यि विवमः सिवः। वामार्गारा द्वाद्वाद्वा विवन्। उर्दे दिनुस्यद्यो। विभिन्नरार्थम् निभिन्नरायेनमः व्यवेष मानुविषेवराष्ट्रमा हिवस्व । विश्वहः कार्यास्य हरा। शहः कार सवधूर्यावि वमः श्रुक्त मिन्। धन्राक्रियासुक्त मियः॥ भट्टे भेरिक्त कया किंद्र किंद्र ने विश्व वं व्यापनियमः ॥ दे विभवः॥ निवयम् वंबमः॥ उत्रः सवन् हेरवन्ति वह ।। यह १। व्या थक्रिः। ए नमः रेन्तेः।। देनमः गुहे।। सन्मः हिम। भन्मां कर्षा मन्मः रक्षः ॥ उन्मः भाषा अन्मः तिर्याम कन्मे इक्ष्रवृश उर्वे क्रिनीसमुद्रर नेन् भन्गुन्क न्या न्त्र मा यहा हि दसन्। -भन्तवयक छद्र नुपे हे वर्ष यदि सद् भवन भद्र न्या भिनु एवमः

有。

33

लिंद्रीभायाने विकास अवन अक्ष उद्यामिन एक्स । विद्रीनी भेनेन्नी वर्यामि भुणन्मेः श्रि भरकुव्य भवी वना श्रीति नी विकास के मार्थिक के मिन है। है कि की उन्ती व श्री है केंद्री व ।। हे हिंदे ।। हिंद्र है ।। हिंद्र है ।। हिंद्र है है भवीडे नमः ११ डे हिथा मार वह यह भवीडे महा । उन्न महा ० स्वीडे नमः ११ डे हिथा मार वह यह भवीडे महा । वह स्वीडे है निवधीडे गुनु के विश्व के किए के किए जी। विहार है है रिद्रः द्रश्रमुले कलेट दिलाक कर्यम्। वरः केने -न करा भागर मगर नागर कारी विस्म सुरो वे क्यों में ये अप निहुन्।। थारे उनुम्निक्मा ॥थित्र माथरेडी। क्रुले वहरोगा नवह रमें जियन वर भरित के निपण्या महालम महारा डिडेण वसु क्यारा विले सहमा करिमदा गैं राष्ट्र के मन्स्र के निष्ठ के अध्या के करिए।

ु इनेनेव अरुकादा ॥ नेनेसीमा ने विषय ॥ स्वत् विवन के क्रिया। कुम्द्विषयम्मिन्निक्तिक्तिष्ठे निष्ठे निष्ठ महाजा । विही धरद्र में मारु विहे यगण्यी किले खेर सर्वार थरमन् नर्मन नर्मारीन मधन्य इक ९ असि शक्तामिय इक्ट्रीं क्षेत्र । इनेनेय महारो। उने मिकि धरे न भाव नियुट्। उर्धेष्ट्र भक्निनिनापन्। यह १। उर्देन विपरीन्गायर् निवायन्। भेदंदमः॥ किं नाः मियण्य। इसियंग्री असव सण्या के विस्ये। क्रिष्ट्रमध्वं वक्षारं सभक्त भवक् स निष्य । भिरे वानामनी िरमक व्मा । सु सीवक भान्य । धरक वा । उस मन उपच्ये सन्। हिं हेल प्रमारक मिल किता में किता उउः थान्ने गृहेन कृष्टा ॥ मिषक मृह दल मह स्यानिय ।। यदा ॥

る。

कि कुन्ना द्री भन्य । । द्वा न्या । । इन परिकार व नीद।। यू क्य के वह जो । जिला के यह । के क्यम यह अविवर का व पुर्वनमा वर्गिवहुभूक मेंगोर्ग कि भः मियवहुग्यवमः॥ किरु विष्टु ने शिल ले मुन्न । इति मिनिशा मुद्द थाद्व उर्दे पर मिविक में हैं। नुवृत्र्वा या विष्टु वे गामिया गा भूटा वि गाभमव व गाम मनव व व अर मग्य नेश मियन वुण्यवभा मिनिशी अरू मियन मुनी में रहे रहे। रनी विहु ने ने श अप्यान । ये । क्लान । वह । वियोजन ने । प्रथन ने ।। भूगिति भरेश इत्रः निष्य सम्प्रायां भिव्याद्विकन्ते श्रीष्ठाक्षे विष्टुक्। मानुका मानुकी का मिविकामे हुद्देका में हुन्। मुनवयन्तः। मुननुष्यामिन्न नमेने ।। नर्ने । विद्यम्बन्या क्रायः॥अल्यः॥मञ्ज्रायः॥व्लायः॥धम्मक्षवृगिर्वम द्या भिन्मम्य ।। धन्छः ॥कभेर्ष्टः ॥कानिक्ये ।। एम यः। द्वन्यः। विन्यायः। विमृत्यः। मृत्याः। मृत्याः।

म्बेन्यायामनेम्बर्या द्याया यक्नेवर्या भारतेस्या नरमुगाय । विरयमाय । विष्युगाय । विनयमाय। मुलक्ष न्य नेमगु कारा ।॥ भष्टक मन्य नेस्यु कारा भाग्रवाहर मन्यः भर्गा । शक्मारी ।। हे भूरी ।। के में ।। कामी कमिका हैं।। वन विकालेशावलभाष्ट्रिश्मवकुरमार्वेशाभवम्हेशाभवभाष्ट्रमा विथा यह ना श्री सामान का ना विश्व विश्व ।। यहिमान ना विश्व नर्याम्क वार्षा वक वा ।। विक्र वा ।। विक्र ।। विक्र ।। विक्र मान्य ।। विगित्ते ।। वासर्थं।। वासर्थं।। मने ।। हमीरहे ।। भभवार्थे।। उसर्येशा द्वासम्बन्धयाय भूनियन्त्र ।। अद्भ भवित इक्षित निव्विति उत्य सम्मित् भद्ध इंग्से वर्ग्यन्मः॥ भडेनमः॥ अधिमिषिक भरूगा उत्मवस्तु ने भन्ता था वहना वह्ना उउ :भाव ठ की भार ये जा । यह भा भयस्क यूर् विन्धणी कं मुजन्मय विम्नु व विष्या विद्वर्य नम्य विषया।

A:

विवेसम्बन्धा वंद्व र योवे अटोश विभ्व वरूय अम्पीमवर्थ वे अटोश उत्तः मेर्म् इयस्ना व्यः सुनि। धण्यानि मण्यानि भूण। उत्ति भून शिया के कर्म का का का का किया में का का किया है वसीमाउन्मासीमाउद्याभाष्ट्रमा अवना मान्या वार्यामा निंदीद्र भिद्रिभागिन ईमचूर्य स्थापनिया ईनिपनिया ईनिपनिया ईनि असम्बन्धिन विनिष्ठि मियसे विराजिस का विन्द्र कि शवस्ति । वद्गुप्यः । म्माउम्यः। दु विव्यवार्गा विवेन्स्निक मिन क्पित्रकः मिमना नुत्य एक कि व मराना गुम्ता करि सन्देश । वेवे रायराय मन् भन्न मुण्या । म्मान मव पूर थिउद्दर्भी। नुसम्मान्य हा करतान नममू निविको भवन्त्यम्। यत्ने। मुद्दस्य नायने ब्रम्हरवन्यम्। मिविक स्किय्नेव इंड ४ या सवासिक मा कि मेर् न्व विकार

अव्लिलियम् : वव्केल मक्षित्र वमन्विम् क्रिमान् भावना भायारक मनिवामा। नुम्भाया रिक्र निर्म्मेय भवनामा के दे निका करे करे बिर्गय के बहु के निक्ष उरिक्रीक द्रमुद्भ नगरी वक्सी कुरा कि उर में द्रा निम्द्र भयवारिक उड़कार भमें ज्ञानिया है कम्क्रम कीम् निव्वस्तु गरी गरी सम्मनिष्यम् वर्म वर्म वर्म विश्वीन्त्रमा डिन्। इंड्यूमप्नेत्रे वसन्त वस्ति। निधालिकं भीगः स्पीक्र भूमामं विश्विष्टि विश्विष्टम इङ्गारी भक्न थमिनि भवना नेत्रें क्ला ह भूद । धरापरामध्य भिरागाडी भन्ना व ड्रीडेसे: विद्वा प्राय हमूडेका विविन थाए वृद्धावः॥ईिवष्टावमां । म्यानमेष्ट्रभज्यमं भष्टणा क्रियंगी वयन सुस्मा भारती का न्या मान्य धिकन्दन विण्या मिन्छगम मङ्गि : भ्रमा सुग्ने मणिये ।।

A.

थानुग्रेन्भ द्रशावीग्रम् न्थम् र्या विनिष्ट्रशस्त्र्य स्मि कुलि व्यव्यक्तिर्यम् न्रष्ट्र अप्यार्वन नमने भ्राया ग्रम किया । अस्ति किया । विदेश के असूर १ कुर १ किया । विदेश के असूर १ किया । विदेश के अस्ति के अस्ति । विदेश के अस्ति के अस्ति । विदेश के अस् म्वेवन्सु न सिविवर्यं भिद्धिभयर निन भुग्यं भद्भवेश्व गुनिरंग्या कृषिःगुनः अवन्यः मुमन मिक विणय वीर्मन भन्यवित् श्रुप्ते अर्गेष अववज्ञी यम् । ध्रिष्ट या प्रज्ञेनक डेड्गीर गथिडेवमे: ।। सुरावण्यवमे: ।। सुण्यमेश्वा ।। डेरियनेव अरुगा वाः सम्मान्य मुख्य अरुगा वाः सन्य क्टा। तः मः मः मः । यमः । यमः । कन्नुयक्टा । उनसन ब्रुप्रमाम् विक्वण भवर्षे प्रमान ने दिन स् भनः सः भनेः भन्ति अस्ति । अस्ति अस्ति । अ कुन्य स्थान । अवाहिक्या स्था वः॥ चः॥ अवाहिक्या सः॥ वः॥ चः॥ अवाहिक्या सः॥

म्हम्म्

4.

भवाभेग्यस्य विश्वास्य स्थान्ति । विश्वास्य स्थान्ति । विश्वास्य स्थान्ति । विश्वास्य स्थान्ति । अस्य स्थानि । अस्य सीय भेया भुष्टा मन्ना ही भुष्टा ॥ जो में भो द्वी वी गठने ने निम्ने ये ने भी द्वी विमन्त्री विमन्त्री विमन्त्री व्यक्तिया ।। उसके। द्यार नियं भी विद्यम है है नि ना ।। भव त्रिधारीवर्षवर्षिः॥ वेवे मा कर्मन मियन विक्यो । देवे विक्या क्रिनी। स्लामक्रम्यनमः॥ श्रीचल्यः॥ रहिन्यः॥ सर्यः॥ जिमार्ग्येशास्त्रिकारोशाह्मास्त्रेशा के कार्याशास्त्रिकारोशा असम्बर्धि। विविद्यका । । विविद्यका । । जिस्मित्य । जि

किन्ने धिष्टिनमः शाकिने मुच्चे शिक्षे मुरि इयः। विवेद न्या। विद्ये व्यवः। विभे मन्भमः। विदेशक मचा गडेडड्र अरा भक्ते दकिला वित्र निमा गामिया धेशासकुत्राभन्निविष्यशासन्मद्भविषयेशासिनिद्रिनेशा भूमन क्रम मगप्यशासनका सामानिवारीशिक गन्ति स्था क्रियमकुत्रा थ थम्निण्ये।।भक्षम्मिन्ये।।भिक्षमण्यः।। जुड्ड इ ग्रिये।।मिण। इतले ।। भट्टिशकिवृद्ध नमः १ विवस्त प्रम्य गांव हार्थानाया। निमिलिहरूयगाउउ: स्येष्ट्र क्रा मिल्स वह अरहन्मा व्या भाषा। वलहम मूचिनवारं गीनीहा भाषण, न्तान

क्रार्डः धिमामान् रामानान् भरीन्थाः न्यमद्वे देव र्मुल्यानिकः ॥ अष्ट्रास्ट्रेश्निवयान्यम् नूया भूना स्यान्तु किरकारिश्वाकी धारी था उन्हान मिर्ने वारिया हमारिया नियन कि दिकारि द्यारिक शुन्ने ज्ञार है। विकास मार्थिक न्या रमक अनक जा हिक संयोग राजि रूपन प्रेंचन विम्नीक ना उत्तर्भाः भवने कि के कि है। अपन के कि निम्न सा उ हु हुई भ्राम्या मुम्मभ्रा देमुग्क ना रायम् मिला मना भृद्व विद्रियम्। छिवं भगक क्रियमाः।। डिविस्त सुर्भे भारत्या मन विमित्रियुणविञ्चणका वायम नुद्याम नुष्यम भू दिन भू वस्य जी। लि रज्ञासक केरीभाज्या डी डिमयपूर्ण वायु र ज्लाहा उजी स्वरमेला निवासिंम्यलियान्यः ने याप्यनिवासिकार्या केरीभनभेश र नेभवनिष्ठ हिन्द यह मा हो भर यह वह वह करन

i.

33

क्रील नेवामहार सने: मनेरामनामा भूटन विदिः मिपेडा मुखका भरके के असी असी असी कि के कार्या कर कि है। के कि है। के कि है। अवैवधान्न व जिल्ला अवश्या । विविधानि व विभागी भक्त नुमन्त् विषय। हरूक भन्ने । निक्क हर्म ने । मृथिरीस्वीदने । न भट्टेर्य वर्ताः।। भुवयनभः॥ वयामनवगुरुयः॥ व स्वीभावत्यायो। व वक्तयायो। क्र वैसन्व अञ्च वर्गः॥ अ विस क्रिक विद्वा भी स्ति भेड़ र उपकारी वरा। । प्रिमा विक्रमेन्ववः। जुरेश व स्थित्यः। क्रिलेश व वृत्र्यवः १ धर्मे व स्था जुरे। उद्या धन्। भिन्द्र । वियानिन । विद्वा क्रिका निर्मा विद्वा व शहिता वसुवव । । किला अस्तिय व ।। विस्ति ।। भिष्य ।। बन्भः। इर्व्यापनि हिर्माइ विष्यु । अः मिवन । मिनिभा नन्तु ह्यान् 爱人 भन्न व्यानिक विक्रिया विक्र में विक् गैबर्श्य यहा। न्मे नर्जिप्टे क्रिने में क्रिष्ट्य में क्रिया नियन प्राप्त ० क्येग्डेब्रूल माना लिंदु में येट्ट: अस में हर ने से स्वरंग ० व्याचेग्डिब्रूल माना लिंदु में येट्ट: अस में हर ने से स्वरंग ० व्याचेग्डिब्रूल माना लिंदु में येट्ट: अस में हर ने से स्वरंग

दें दें गादें कर गांद्र मिया गांदी किन गांद्र हर गांद्र मन्तु महाभूग्य ग दें सिवन प्रमिन नेरेहे । दे सम्म क्वा क्व । दे सन्ति य मित्रा । दी ग्रिक महा महा महा का का महा महिला के महिला इं मिया कि दें हर ने विद्यान दिया है ने ने के कवनी है मिया। ने मिर के मिनार्के हरं। यमनुः॥वन्तर्गासिकवनाभः मियः॥विमन्नन। विहरा भूणकाः स्नुः।विषय नेवः॥हेववय कवः॥ हुप सिष्णः॥ वद्ग मिन्। कि हर । दिः मनुः। द्वि वह । दि कव । दि मिर्तः। दि मिन्। इन्हर । विक्रान्य के वर्यन मः ॥ थायाः॥ असमन्य है। राउतेः॥ भ्यम्रहेश वृद्धः॥भम्बहेश विक्रम्लहेश विक्रि हे ।। इति । मिरियवादन हे ।। क्रिं। क्रियानीमहे ।। वे १। भुक्त रहे ।। भिविश्यमकाल्य भववन भव्य करामज्ञ राजा के किया म्हभवभागान विषये। विषय निक्र किरवर्य कवना क्रमितायानी 39 बद्धाना के हर शह : मन्ति। हैं नेते शहें कर शह मिता ही मिना इन्द्रः॥ यमेष्ट्ररम्मुयमाः॥वाय्यमेषे मुहन्ये॥ मिर्म्यमहरूपया। भ्राण्यमाः सम्या।।

भः उर्द्रम्यवज्ञान वंमानम्बार्डिमिन्द्रिशा य ध्रिमवज्ञाय। य उड़े व्यक्त ये। सि मिमान व ।। भं ध चव ।। य जुव ।। य जिमान कि है।। य सनुः॥ व नेवृष्ट्रिः॥तिकव्गाभः मायः॥ न स्रेरं गिना गिल्हरंग र्वध्येतीम् । स्वेन्ववृत्याः।। अप्विवृत्यन्मः॥ धर्मयेः॥ धर्मयेः॥ भद्भा नियाविष्ठः॥ अवः॥ कम्लवन् ॥ यह ॥ भायावः॥ निक्षा पिष्ट्राः॥। इति ॥ वंस्वर अक्षेश भक्षियर ।। यह ॥ मियर ।। अबि ॥ मधरेर र दूरमः॥ चिन्तु वु ।। हिमा के विद्या ।। ह्या में भी भे सववड़ा ।। सिर्मा अविभा भागान निषये हा सेविकिः।। इर वसके निधम् र्ये विकित्।। धर् व्येष्ठ मुन्य धर कुए अ। यहा । कुभन्यन्में शक्षण वम्ब्रेन्से न्नन्य्। यन् ।।थयन्य वारा। क्रम्या भूनाया। मुद्रार्थ।। निन्या।। धर्मित्रहारिहे भाराये।। सिन्धन्या। धन्हेः।किनाहः।। मन्रत्नथम् अवण्या डिव्सरे भम्हण देशकी भो वाचुपन भनीयामुन्यस्मान् क्रिमेन्य ग्रुष्ट्रभाउभद्य भाजीण है भाष्ट्र व्यन्त्रपित्र ॥ अन्तर है विलि हैं इति भाक्ष केन इकेन वाधनी

निस्तिभावित्रिया विमिल्मापि के किए कि ना विश्वेष विमाना विद्वार महित्य में हिन्म श्री हमी। किन्द्रम्य कर नमः ॥ भी मारिय कर भी देव त्रृहिनमे : भवत्रेष्ट्रा भवत्र्रिण धारे किप्रा। उन्द्रम् किस्च स्थान स्थान । त्रम् विष्टु मिवभूणि नुम्म मुद्रमाम् केन भूद्रमा हिंद कला है। धर्यम्। यम्। कुन्नु वन् य नेमः। विद्यु । निवन्। भ्राष्ट्रिं।। न्त्रवाद्वारान्यः।। वर्षे अव्यक्ताः।। कि भवीमि कलारीन्।ः इल्लिनीक गा अम्पेक गा अधिनीक गा अपिनीक गा

A.

70

व्हित्यक भी केर्पे वहीं के भी सह कर्म के भी स्वार के भी स्वार के भी हिमदाविणीक्नायेनमंशा स्वस्मिक्ताः श्राध्य क्नायेनमः॥ यमक्शास्त्रमन्यक्शास्त्रिक्शिक्रिक्रीक्शाचिक्रिक्शिक्रीक्शी अन्यक्शाभगीमकः।। स्तुन्ते भाकितीकः।। समिनीकः।। हसूरकः।। लक्षिणाकायाक्गासंयक्त्रम्द्रत्ताक्गाम्मीग्वनायमा॥ न्वयंदिक्नः। अभ्कन्येन्मः॥नीन वक्ताकः। क्रिनाकः विस्तितिका हिल्लाका विस्ति के ।। द्वारिनीका कि इत्यादिनीक । जिन्द्रीक ।। शक्ति भी का । एहि : 4351 उन्हमान सकला धरा था सुधन्तु भेषा गर्नु मामान्सु महस्मनुर्ने रायग्राभनुः ५क हते। विझी ने हुई करो। लिहरेगाई किरगाथ क्रियेग्या सक्ता कि नेर्गेयहण्या उनिथान्यम् भनः।। न्या पर्मा रिसी कुर्क कु रहें। भाग्वियाग्वयाग्वववव्याप्त नए १ सम् १ कर् १ वर्ष १ वर्ष

मान्या हो है। उठा हि । वह हि । वह । वह । नभः। विद्यासनार् ।। वर्ति मानया वर्ते वर्ते वर्ते । स्रिन् भुभारक क्रिन्मः॥ उन्नक्नम प्रान्म ॥ उन न्यायम क्रिक्नम अस्पन्ने श्राह्म हे मुरोने के के ने ने कं ने नमः कलविक रें नमें तलविक रें नमें। वन्भ्भिष्टिवमः भवकु उस्म हेन्से भनेन्। वेन्भः ॥ विक्रा यरी। उसकमय विस्का ३॥ यम नुकरो वि ॥ ३॥ मि वि व हि वि । ३॥ उन्न सम्मिनी भ्रष्ट्र ॥ उन्न । । वि न पट हिन्धिमण्डेल उज्रवकायग्थर दुस्युवयम् ० गान र्राट्यकलमुसम् द्वाममम् मृत्राणिक स्द्रभा किहेनभः ११ यन्तः भः १९ वङ्ग्रेपेकेरव यविष्या शुल्यमः। विंदी भयारे वे विचय भुग्यमः । इंड मी मुख्येया म्याने

A.

म्बरी निष्ठलं म्भाउस्य भभी विश्वनीय धरण्य ग्राम्बसम् हिन्यक्तम् अर्रान्तां शिनु में नलथ नुरान्ते ।। गेर्ह्म श्रीनी मिरे ॥ कु सित्यः॥में क्वा भी में में ना अगः मनुः॥ विभी भः गणधारिव क्रिक्येनभः॥गंद्रम्॥नीतिनः॥ श्रीतिना में क्रवनिनं नेत्राणः मुनुनी म्बर्ग िनीकी मी माना थाउँ वरवरम श्वरंन में व्स भागयमुन्द्रेग विहर्रामी गन्य पुरि मिर्ग द्वार मिया। क्रीभवरानं में कराशितं वसभानय ने शाम भारत मन्या। विद्रीक्रीक्री मान्यिव वक्ष कर्ये भवर न्यु हर्य भाग वृतमं ज्ञन १ श्रुक्ता कि हर । मी मान्य वित्र हिंग मार । कि भवर वाकार रान्स मिता। मी हर्में क्वा में अभावयमें ना भी जारे शक नगः॥लेन का का का मारा मारा के हरा। की मारा ॥ के कर शिक वेर् शकः मनुः। विद्ग्दीमः अहण्यनमः। वहर ।

∧ त्रे नियुम्धिनमः ॥ रंट्रिमि क्रिमे नैक रेंने ।। त्रामः श्रामः नुइयिन्।। छित्रुद्वः श्वः इन्नि है मित्यः।। इंक्यः।। इंक्यः।। इः नुः। रिक्तिस्मानन्य श्वरुद्ध प्रदेश्यायेष्ट्य श्वरुवा ।। छित्र हरूः।। वद्गित्रः।। द्वर्थायेष्ट्यः। विश्वर्थाः। भुष्यमः सुरा । एई भिष्यमे है विष्यण भुष्यमः । इन्हें हैं दीमिगाई मिताः। है कवं। है नर्गाहः नर्गा लिंद्र न्था क्रिस्पो वह योग्या उर्व सवाम् सर्व नास् नर्जप क्रिन्मः॥कारेमानवन्यान्मः॥य उन्मवना व स्थारवं।॥ वक्नम्यवगानि भट्टरवं गार्छ मुन गृहः भवारू नहरं। इम्बिक्ति माया। भारति के विक्ति हिमापः । भू चा महाभी चे प्रिक्ताय कव । कि रूप है जी कुप ये ने ब्रेट भी नमन्त्रपृष्ट्य नमन्त्र महाराम्य प्रमुण्य कर्णा किं इंदी मधें उसी दे कटा में भें उसे देन में ॥ वज्ञे निध्वय

क हर । दी मिगाड़ मिग्यः। दे क्व । दि देश दः स्था । ए दे विक्र निक्ष निक्ष निक्ष में क्व । दि देश देश दि देश । दे से विक्र निक्ष में देश हैं कि से विक्र निक्ष में देश हैं कि से विक्र में कि किकवनार नेवनाभः सम्भाषि रामः स्मा ब्रा वि वि वि वि वि विक् हर शेष्ट्र किर शाई मिया। इक्ष कर शहर ने स्वर्गा कर के यहणी किरुम्भः निभा उनारे निभः॥ किरु हर गार् मियः॥ इक्ति। हैं न्रुशक्तक्यां एं स्रू व्यू यन नः।। इं विह्नु श्रामः सिव उ शा कि वमः मियाया कि हमा । विस्ति । । सि मिया । विका यस्त्रः॥वरम्बन्धन्।भः उद्ययवक्षायः॥सिस्निं हर्नयाया। क वर्भम्बगुङ्याय भहेरा भनुयो। न मुद्रवन्यन्मः॥ भः अव वनी मि मिन निवनी वर उन्नवन्। यथित्रिभवनी विवयमप्य A विद्नासः के क्षी गुड़क कि द्वीयादा। विह्न गर्दे मिया भर मिया गरिकव शक्की नेत्र गी गुरुकानिक दीयाना भारती ^

बिनिने ने यम्म । विम्नयमे वय सम्म ने ने व्यापनिय वय वय में में भी विभन्न पर्य में या वय में भी विज्ञा पर्य में या व्यापनी कि ने व्यापनी कि में या व्यापनी कि ने व्यापनी क अगारिभन्मेवयअस्य गिरिशियदेवय भामअगुरि मन्यमेक्य यर भानम्। सिंह ही हं भक्तात्यकर हन भूष्यम विश्व हार हर गई मिर गेर्ड मिया । है कव गहिल वर्गाइ: नमुः।।एड नियारिकनाति श्री यह निया।।ए दी भी विश्व क्लारिय विश्व विश्व विश्व विश्व क्लारिय व्य नक्यमे लिके मानुक्का विधाय मेन्द्रमा लिके मानुनीन कलिएउयम्मियायनमः॥भारत्यनमः॥धर द्वनः॥ यक्तान्त्रने । इवन्यने ।। इड्यूने ।। क्रिक्ताने ।। इड्यूक्तान। लियकुयकद्भः॥ एवं शे विष्क्य ।।धमय ।। मुने मेय ।। A मनयं गिनकय गिवन्य गिन्वया भन्न य गिन्द्रभय गी =3 वीर्णये । महत्रवे । प्याप्ये । विद्युक्तया । वक्ष्या । सम्प्राप्य । । धरमवे । । अहत्य प्याप्य । । अहत्य क्रिक्तमा । ।

विकामन्य क्यानी महेन्द्र यन भः।। विका मिषिय करे ।। विकार एक्ट्रेश विद्राणियक को शिव्ह एक भन्न विकास मध्यनमरे।। किंद्रममर्ग्यके।। अविद्रवस्मनव्यके विष्ट रिक्टरयन्ता अन्य मान्यान्ता विही वन व्यन्ता विह अम्यानी के सिवंद्रभेषा ।। एक रिक्व उत्ता विक्र रिक्व रे लिस् रिम्बरेश लिंड सीक काया लिसी सिम्पित्र ने के ले ने ने ने निनन्मः।। विभागनि द्वानिक का निया। विद्वानिक विद्यानिक व अही सः निर्दे क्ये ।। रिंद्र में के मुग्य ।। रिंन्तु इसे यवर पर गा।। छित्र मययमिनितः।। छित्र अधारमा मानितः।। विष्युं वनक्षार्थमा । विष्युं वर्ष्ययम् ए । विज्ञ वर्ष्यमा देश । विज्ञ वर्ष्यमा देश । विज्ञ वर्ष्यमा । वर्षे । वर्

3र्वमहोगडिक्ट्रेगडिक्ट्रेगडिक्ट्रेगडिक्ट्रेगडिक्ट्रेगडिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिगडिक्ट्रिगडिक्ट्रिक्ट् विभागतारी शिवधन्द्रमण्ये शिवभगयं रण्यने शिवम भित्ने । विनम्यम् मुपर् रिपरे । विन करने नमें। विद्वासी । । विद्वारा अस्मिन । क्राक्या कि तमये वण्या । कि वम्र रिवये । किंद्री के नवया। किम्भग्यन मेन मुग्य ।। विद्यु गर्व ।। विद्निक वेद माः।। विद्निक वेद माः।। विद्निक वेद माः।। विद्निक वेद माः।। उधमा ।। इभक्यमा ।। ईकद्वर ।। ईमस्य न ।। ईक्रिक गः।। र्वेन्क्रमाथर्थिक एन्मंशामक्रयं।।एवंद्र द्रायः।। प्यक्रयं।। थक्या। व्रत्यं। गर्ये। विक्रन्य। भक्ष्य। कन्य। में अन्यक्ति। ति द्वेम द्वेनियन्। द्वेम द्वापा अवद्याप ने।। मिवय। मनन्य। मन मय। मनपूर्य। इवय।।

H.

FE

ममुग्यादिनथी० भेनित्रया। निर्देशिनि । प्रानिकरा। छिन भः मिवच्य शभव भ्ठेवं शिमवच्या उंम नमें वृश गृह्म भव कृत्य। मुध्येन्द्रस्याया। व्यानेत्रगृह्या। सहरूत्रमृध्या कि न्मन्मः॥ गुरु विग्रह या विम् ॥ नियन या। भविष्ट किपया। हिन् क्रम्याथरम्मु थरेन्या स्मार्ग्य वर्मन् १ १ वर्मन वी १।। मा क्रिया वी १।। भ्रम १।। च्रिया क्रिया १।। मुज्याम्बर्भाम् वस्तीयम् । मुक्रमान्य । मुक्रमान्य । वस्ति। अपन्य । चिक्रः शिंक्ष्यः शांक्यः शास्त्रित्व वा सिक्न शिंक्ष्य शांक्ष्य शांक्ष शांक्य शांक्ष शांक्य शांक्ष शांक्य शांक्य शांक्ष शांक्य शांक्य शांक्ष शांक्ष शांक्ष शांक्य शांक्य शांक्ष शांक्ष शांक्य शा निवं । भवा धारमण्ड्या । भव्य । भव्य वा भव्य वा भव्य वा । भद्रा शिक्षा भूमा हु।। स्मा हु।। हवड़ा। हिवस्वाभववुर्भाष्यमाभूयभिष्यभविष्ठका वृद्धियम् मनामेनुशाममं नुजुशोधवी नुजुशीभामिन शोउन शोधके शी िस्तु । इन् १। मत् १। भन् १। मिया मदा भवत । विदेशनाः। मिवण्य ने भन्मः ॥ द्वाः ॥ डी डिम्नं ॥ छिन् भ द्वान् ॥ धरण्या।

धानमहागय चिनाय द्यामभूवाय क्रिन्त्र अह १ वर १ विकृत वाममेन भवक्ट् भूमभनन में सुरेशाय हम्यायन मः विश्वासिव मिवन भेः सिर्गा विसिवह में यह हम्से हुशाय सिताया। छिमियानुक् भक्तिराः भवद्राभ्या गिराउभी सुबन्धभक भें क्वेंस भित्र ने सुरुमी सुरागित भित्र न भक्ष क्वेंस मिया द्वार हमयन्त्र भाक १ काकि १ मही १ वर्षा क १ वर्षा म वर्षे मनिभामगीग्भन्यविष्ट् भवत्र स्वत्र मुख कुरु ए कवमायान्।। लियन विभाग्य पार्व पार्व विश्व विभाग्य किमवान्किभन भने भिवामेर्व भवरू मितारामिवगहण्य मियः भवं भूमें मया ।। ।। छ रमानः भवदिष्टानामी खुनः भव कुन न रक्षिपित्रक्रिमित्रक्षियित्रक्षियित्र अस्मित्रमे १। .. किंद्र मियाय भुष्ट दिए। धार्म द्वानाः मित्रः। विम न्यस्कितायः।। इन्लीनुन्तः इट क्वारिभरमेरे इट

丹

विवद्यन धर्यविस्द भद्रस्य वीभदि वेत्रे नद्ः श्रीमया वे १ कि उर्निय सम्मेर हमा विद्वा श्वाद मिता। चार्वेग्डिक्स भरा : मस्मेरिक ने निर्मा नहा । छ उर्दे हरा। हवमकु कुंकट मिन्।। ही मही धान शविव हु हमराविमारिना क्रित् मिता मिन्य कुंकए कव ।। छि उद्देश मुनुः। छि यन्त्रय नमें हु युग्यनमें नद् यंनमः क्लयनमः कलिकाण्य नी वलिक ण्यानी वल्यभवन्यनाः भव कुरमान्य वी भनिवा गयन भा विवासिय उन्हें हर । वास दिवाय के वर्ष मिन्। अवयन्य भूकिमिनि हम्मेरविसायन्मः मापाः।। वासामाग्य केलए केल्गा के बुद्दीम किन्यु पकटा ॥ लिभेट्टिरण्डे भूरे हुनी भट्टिरडण्ये वेनमः हव ठवनम्डेठव हरासुभे हेर्देस्व १ विसहः काम यस क हमयायन मः॥

भड्डःकामदार्भरावमेनमः भाका मिन्। विधवगातु विकासका .मिया ।। भेडे रेड़ इंक्टा क्य ।। छिंड़ छिंड्डर ग्यंडरा । छिंड़ उं देन हमीन अन्मः। विद्वाद्गीयमे मेवयन् भः॥ र विभन्तिन न ह यह में शह भेत्र वर्ग न मुग्रे मिन्सं। इभवमन्य मिषाः। हे सन्ववन्ते निष्णं कवं। हि स्पाव श्रीत्वराम नर्षः। इःस्पेन्व भीत्व पिना संस्था। किहीई हीसीलकीन रथे काराना शिहर हरें। दीनी कि । इसे मिपः। देने कव । दिन्से ने रेष्ट । दिः इसे म्भाष्टि १ भे नेमियमे मार्गिय प्रमान्य महि १ भूक् शिवमेहर । विद्वविमा । भूवपत्रेय मापः ॥ भूक्तवनाय कवनी सन्में सिंदे कवन निर्देश । विक्री में निर्देश । विक्री में नि मिमदानामि भवकामध्र भविभागा मारिति स्रितिन द भ्यं हु भी सम्बंग है भा क्षेत्र । विभिक्ति दी भा शुक्ता

A A

विदेशनीलाह्न भक्ताह्न हरा । अस्यक्त सम्मार्थित मिन्गाई महिभा भ्यास मिया ।। ई भवभवगाउन कु भवतः पविभित्रिनि ने । । इति भुष्य मनुष्य । । बीद्री ल निकेः विहासीकाण्यनार् जनकनतार् भकनार् भे : लक्नी ही सी शरी ही दी ही की रिमें हर यायेन में। हीची विही में मिरम्याद्या ही दी कार्यनाई यनभः॥ रिहर शक्ती विरुश भीः सिता। रिकवशक्ती ने रेहेश भेः नुस्राह्या र क्रीकि क्रिक्त क्रम्याम् न्ययं क्र भवनाम्नवर्थे यन्नवनामये विद्रीम् विभः नाषि क्ने सु विव क्या मा । किहर । ज्ञी मिन । भिन । निरामा विक्वनी क्ती ने रेष्टिंश किं समुख्या शहरी

क्रिक्की में अद्भाष्ट्रिक केरवी जानवारी सुद्रुप्य सन्भाश लि हर शक्ती मिन्। मि : नियाः।। अक्षि प्रेन्से क्व । जिल यागीस्री नेत्रः॥ न्यस्याप्ययमः नुस्ः॥ शाहिद्वीतं इनण्येवमः॥ कि हम ।। ही मिन ।। ह मिता।। मु : कव ।। वा ने ने ।। ये मुनुः।। दी। कि न गिर्यम् किं सीपि यम् वयस मिन् व दिस्ता में महाराम है व उसे हगविति समय 0:0: श्रुक्त ११ कि स्विति वित्र प्रमा हर ।। कि स्विति क्रिश्य यम्ठयसम्पार् ने क्रिया ।। यसिम्ब्रुसम्बर्ध क्रवलयङ्गी उम्रावां वर्।।ममर्थाः शः स्ट म्याः।। ही। विक्रीमः भक् निर्मित्रमयिव क्षा हि हमा । ही मिर ।। दू मिया। दू कवा। हि नर्षे ।। इ:मन्।। द्रां ति नमः भवीभित्रे द्वारानीहे नमः भविभित्ति भग्ने विभिन्न निर्मान विद्यार भक्न जुला म इसियकारे हरायहै मार् कारानिहै ब्रह्मा किंद्री देंदि इं में रीनमः॥

थरमद्भीनि निच्नाभागार विधमे ध्राय भूममिन भक्नान्ति व्यविष्ट्रक्तिम सलानि अस्पर्यसि विवृगीवि किरे अक्तमन् स्मिति हिंदि नुगम् ९ दम ९ वल ९ वन ए वस प्रकृति भि भारत इस्र १ मिनि १ दिनु ने नि विश्व किरि १ स्यून गुरुये १ क्या उपवृत्वम् भक्न मन्द्र प्राय ९ धारमकर्षिन के हगवडि ३ भक्के व्यक्त पणिविनि विसमयवनिमं अक्नाम् मुगुः भूना वरान्यवुक्तं हिरिमकाकाकि कालनामिनिक कर सभीर भमन इंग्जिन ९ श्रम् रक्ट्रके लिई सि कुल ए कुल ए सुद्रशव ९७० ॥ धरमदिनि हर ॥ विच नाम निरमा। वियमियन्य भूमभिव मिापः॥ अक्लन्ति उ विश्व निम्म निव करे।। अक्लम्ब र्मिविव मुस्यक ए।। अक्लम्ब र्मिविव मुस्यक ए।। किरीमीक क्रमम मारिक येन मः॥ इंस् हर गई मिना इस मिला दें में करना इसे दें निना इसे सर्गादिन गरी

1 र्रेथंपन्देश

विंदी ने मुभय वमः ॥ विक्रणभये ।। विक्रम सम्बद्ध ।। विद्युष विष्टें । अव व्यवस्था के व्यविष्टें । असम्विष्टें । असिक्यें । असिक्यें वर्षे इ: ननः ।। । जिसे क्षीय: नमें हगवें है मारमें है हो हा विझीहरा। क्रीमिकः। भः मिषः। बैमेकगवरेकवः। मन्त्रम्थे वरुः। द्रीयुष्ट सम् शर्था वि स्वित्री में वसपस्य गुर्गिति अस्य हेन ना श किर्हर ।। क्रीकिन गरिं मायः। वस्यस्करं ।। वर्षा मिर्व वेव ।। भरमुद्देवभः मनुः ॥०॥ विभिन्तिभः विन्तु कगवे विना भेट्टर शभी मिरे । भे मित्यः शमिकव । भिं चे व् ।। भे नियः शिक्षे गः मनुः॥द्रेश विद्रीति ने की भें विषय है ने के दी विष्ट्रेश कि दीहर गरीमिर गाउँ मिया। क्रीक्य गिरः हरावहे नेइ गार क्रिंदी अलम् ।। दी हें के कि के कि कि मार्थित ।। इं हिन ।। इं मिन ।। इसिका।

A.

F3

हैकव । हिं देश । हः दश्रारी विही दी की विभे हरायाँ भ न्वित्वध्ये अवद्योद्गे हरा । ही मिर । इमिया । देववा हैं नर्।।इः नर्ः।द्री किंद्र भर्ति पर्न सिंह इंद विक्रमहोशिक्षां के हर गाँकी मिरगाई मित्यः । दे कवर्गिके के दः मर्गाशा विद्वीतम् । विद्वासीन कराविद्वतम् अपि िल्यु का के हर गोदी का गोद का गोद कर गोद कर गोद कर गोदी कि से कि लिईनिही एक वेनमः॥ शा लिएईनिही के ने में ठगपि जित्रिक रामम्भवी में स्थान विक्र कि कि कि कि विक्र ॥ दी। किंद्री स्वीति स्व विक्रिया विक्रिया से स्व क्रिया से स्वीति के विक्रिया से सिक्षा के सिक्षा के

मन्।इडि माया। निय मिन्।। देश वित मिलकानके दीही के के अपना ही दें गार्के क्रिया । क्रीक्री मिषः।। क्रिया विक्रिक क्रीक्री क्वमं गी इड़ नेर्। दीकीकी स्टू मन्। कि इड़ भनके ने भ्रीर भीर हिर्दि अन्तर्गारिक के हरणा भक्क का मिन्य स्मीम मित्यः॥ यूमीम कवनाई दिने वर्गा से क्या से शारि दी सी हुण्या मियम सम् म्यान्नय कमय कुंद्र भेद्रा विद्री हर ।। सी मिन ।। हुन्ति ने निय मिया ॥भभभवं म्या हम्य वम्य कव्।। कुल्य न्य ।। द्वार मुन्।। के द्वारे मद्येय यंगमः।। द्वा हर ।। द्वी मिरं। द्वा मिता। द्रे कवना द्रि नेवना इ: मनुष्यवणी विसी के कुना कार वेड्न भें। विदी नी कुना का कार वेड्डिं। नमें मन्या। 系·開州角田·

नवलाञ्चारुष्यम वं लेख्य कापगथर देश्ववच्य मुक्कार ति र वटभकल सुने मृत्यमान सुनु गिर छ छ भक्ति वेनमः॥दिविकल्यमः सन्त्रभन्नेलाभन्भन्न भन्ने भन्ने भूयलकलभाशवाडा भन्त सन्दर्भमलभा रामा विश्वानु सम्योग्य राजा विद्वार मार्गी है वार्गी हिंद वार्मित भारते हैं न्भः क्रीगेषि ह्री अविविधम्पठिमा निभावि दे दे द ए महानी विर्याद्विधिक्ष नायमक्ष्यंनमः। भक्षप्यो।। रि हिन्द्रयन्भः दायानां विकारणहाने धिष्ठिनमः । उन्ने लानां विवादिनमः । उन्ने विवादिनमः । उन्ने विवादिनम् वस्त्रम् वन्यनमः अधारित्। चिन्द्र यद्द्रमः भा ने। चिया जन्मय भविष्मत्रहरूनमः॥भवित्र ।॥ गरने व्यक्ति व्यक्ति विका क्षी नुसन् नुस्त नुस्त नुस्त नित्ति।

3.型马。到中世 के भूमगे मिवस्तु भूष्ट्र अभूष्ट्र नेन नन नन हिनक में वहा धर्मे रेंड रेंचे मिगरी मह गी सुद्दिवद्युविष्टिः॥ ल्यान म् मन् मेन विद्यम् कर जान हिंदी वर कि में में की गर्उं येन न क्रम्न क्रमित्री । गर्बित्र यरे हे वं भारतभा भनवाल्डम्।। इस्मायन् भाद्रक्भयुनः मियनगिष्ट्रितः मियः धम्मक्रमकः मानी मिवकनुः भ्कीद्विः शत्रुष्य + भन्नः। जिन्नम्युन जन्नन्गिरू मन्नेनन् उग्निप्यु हिः E m गर्बायायाधिभे रम्ड्यः मह्मग्रन् विणववस्ताना वी द्वीरेग द्वर्मिन्द्वा दिने उन्ध्याना विभाभन्त लायनाः॥ के क्लकिशार्ष भत्म में निय नमें श्री मिल करें श उत्तर प्रमा मुस्टिमिन्रकारिन ज्ञानमे निम्म भर्ने भर्ने भून अम्हणाभन्भन्न वर्षीभन्न थरमीकालां सकानित्र स्टि: ज्रह गी।

उद्याहिनय नाष्ट्रणि भेष्युत्रारम् नुम्नीवयन इभिष्ट्रमु विन् हमधिक भवगुनि विमान्न धर्म धर्म हममानुमा विष्टे अनुसुरमा नुरस्य निष्ट्र ह्य अष्ट्रहर्मिल वरमना अप भर नेल कर्यु भन्दा र मुलकर मुलकर गानी व नेनेवथहा वाभवासार् को निम्न लाह्य अप्यूष्ट सूर्य हु स्र भ्राम कार्य स्रित्ने वे कर्त् विव्यक्तमानु भूष्येष्ठ । अ विभेनुसत्ना भन्द्रारमा वुर्हे भिर्द्ध मार्थे हाभर्ष मीना वामाने मेरा वे मक गङ्गे करन्त्र मनुत्र प्रसिष्ट्रित भ्षिष्ट त्रम्करन्त्र विवेद्दर यहाँ मार्ग कर्म नुस्य वा अवक्राह्म क्षिण नाम प्रमेश्व मुहम्य भविमें शाउ विच की भवान ॥ धनः श्रुहम्य क्रमम् वहुममानुष्डुम्मेरे भवत्मक्रायेवद्युक्त्रयाद्वारे विश्वना ठाइवक्त्रीमुं कावयानी ११ डियवमीक वन्ते भी गरेव द्वाना न्यून्य

पित्रकथानिविष्ट्रभूनाम्मुर् मिना निर्देशियोग विभाग्निमाद्रम् भूष्ट्रम् व्याप्तिमाद्रम् अभिविश्विम् म्या श्यमण्ये गास्यम गुर्वे ना धरमगुर्वे गा धरमे श्रिग्रे व गाधरम मर्यः॥ कुरिमिद्धिः॥ भष्टि॥ सूननुष्यः॥ यहायः॥ दूर्वण्यः॥ वे र्युग्यः। लिहर्यः। क्रिक्कक्येन्सः॥ भुग्र्यंगाष्ट्रन्सन्। भिष्ठक्रियाद्ववं मनवर्द्र भमिक्तिमा मुन्त्य मिन्द्रवन ब्रक्षके वा वर्ग भाउना कु वर्ष में क्रिया निम्मे श्री वर्ष नव द्रमाथर भण्यास्यीभुण्यक्रमी।भण्नेसथस्यैः शसुरा। विक्रम्भिक्ययिष्ये विभूक्तमः श्राम्भिक्ष्ववत्यम्कः ॥ वक्मेमवैवक्यभूषः॥ वं म्हें भरवः॥ ये उद्गधवः॥ में वंमन्वः॥ दः सन्द्रमङ्ग्य सन्या दि स्विन्य प्रमिन् नेर्।दि श्रुवर्ग

相。

क मन्द्रिय मिग्दा दी श्री प्रिन्। कि अच्यू हुन हुनयाय। विद्रीभ यारे हैं विष्धणं से शाहरी है के पित के किर्मात । शहरी है के प्रति है वयवे कित्रे ने के वन्ने ने भागिती के भारत है से भारत में भारत है से भारत है स कारनीम भु एक्मः ११ अति। विभे द्वारित वायक्मः ॥ रंमाक्। विविष्ति हैनवायनभः ११ जुन्। विक्यानी महेनवायन्भः ११ वायन ११ वि उम्बे केरवायनभः ॥भित्तिभा छिन्निणगर्गिकरवायनभः नेर्ना कित्र के विषयन में शासिन ना । कि द्वे विषयन में शास्त्री लिमीय उन्न हे नवाय नमः ११ प्रचा डी मुन्य धनमा विया भक्ता में के में के हिन्दू भारत है है के में ति में हैं य भिन्न गर्गित भारिताः वभवः भवयद्वे भारते धनुष्यवः॥

निर्माष्ट्रके भेष्ट इंडीयाह का भाषा है। विशेष इंडिंग निर्मा स्य स्कामिरारि प्रथमि महन्त्र राष्ट्र श्री मुग्य मोनुष्ट्रीमया है वयाया इति। भण्याचे वी भवित वर्ष वद्ये व हेरक्याभक्तकश्रीभिक्रिण्यभक्त वहेरक्या। मान्य अित उप की था के विषय। पिनी अित उप कथानीन हेग्वाया। वाग्नी भित्राय उन्न हे ववाया। वेस्वी भित्रा यह्ने वन्या किमारी अविद्या मन्त्र हे वन्य। भर्देस्री भित्रण्य नम् ठेरवण्या व्यूकी भित्रण्य मित्र इंडेरवाया। जयमीयम् न्यानित्रेरम् ज्याः भुणव्याः। रीयस्वन्य । स्यम्बन्ड व व । पित्र हेरवंगर्य नव्यावाभाविकेववेगवारी नव्या भाषानाः।।नीय भ्यानभः॥ अष्टन्। उन्दिमय वि । ३॥ यम नुकरो वि । ३॥

49

मकुः

नियं उद्देश । नियुष्टा मिन्न प्रमुख । स्ट्रा भायारेवी अविवर्ध वक्त पठेववं है। अव ना स्ति अविवर् भद्र गठे वर्त्व भारत में भारत में कि वर्त है वर्त्त में लिया भित्र ने किया नी महेरवन्।। वारा निहन् उम् इहेरवेने।। वेस्यीमिक वर्षे इंग्रेग्स के वस्य विमारी मित्र वस्य मार्थ है व्यम् ॥भव्यम् गीमायाम् मनहे व्यम्॥इद्भीभाष्ठम् गीमाउ द्रुवेग्वर् ॥ मुद्रुवेः ॥ थिछः हे व्यग्र्स् महस्थाया। भण्तः हे ग्य कार्यं नद्रकः ॥ उनु ॥ या उनुः ॥ यो कि कि व धरवी भारत मार्थ म भग्भवन्मः। है ग्यम् १ स्वारं १ भग्यामे वी सितं स्वकृति वस्।। अक्लामी संवित्र संवित्र में करहे। मन्नु मी सर्वित्र सु ही संवित्र से रिस्नी निवन कथा नी महेशी वार की मिकिन ए प्रावृहे विवन ॥ मकुः इसम्भवन्मः॥+

वेस्तीभीकार्रे द्वेणग्यारे । किंग्यानी भीकार्रे साम्ये केवर्रा भन्दम् वीसिक्न मन है। गार्द्धा भिक्न है। यह ।। उसम्भवनमः॥ मन्य मीन किवयय केशभण्यः द्रवीमिक्रिय वक्ष्य के विषय । अकला मिक्रिय भेक्रिके ।। वारादी अदिन्य उन्न कुठे वाय।। ये वार्ती अदिनय द्वित्र के व्या किमारीमिक उपाय मण्डे विषय। भण्डे मुरीमिक उपानमें विषय। ब्राह्मीसिक्यम्मिक्द्रिकेवया।य्यावः अरुप्यामि छिअरुपा। नान् मिक्कि है विष्या विश्वास्त्री सिन विष्या मिक्न विष्या भक्त लाही भीक में के विश्व मिला की भीक के विश्व कि कि भीक के कि मीमके विशव गरानी भिक्त उन्त के विश वैस्वीसिक के के राम के विश किन्म गीमादि सन्द्र है ग्वं । भन्द खरीमादि निन्दे ग्वी व्यू निमादि । मुिन इके ग्वं शन्त्रकारिय द्वारिशा चिन्तुकारय श दावा निकी द्रा

H

43

थार क्रिम्म के। किए मन्याकण्या नार भनेते मेर्ने ने थनीयभेषुनः भर्नेचेनिकिः भयनाः भक्तां विकिः भूनः॥ कगवनुः धकुं ९॥ न नुष्या मिन्न ये हे रवा या है।। यह वभः॥भयम्पनिकिण्य वक्त व्यवस्था भक्त नाही अदिन्य वक्त निक्ष कर वे वे वया या मान की अदिन्य ठीयण छेरवार्य शायद्वीमिक उत्यक्थ कीम के व्या वार की अकिन्य उम्र के विषय ।। येपूरी मिकन्य क्रिवरू के व्या किमानी भित्रित्य मन्द्रिक्या।भाक्ष्य निभक्ति उप्यम् हे वक्या। ब्रुक्ती अविजयमी भाग है विषया। या हुन भी। या हम में विष्त्। थनः हम नन्यकम्। नुमः मीन ज्ञानमा कि नुस्ताः वङ्गु । हेरवश

भक्तम् भिक्ति भेक्र रहेग्य। मण्ये भिक्ति हीय गेंठिग्य।। विमीस दिन्न प्रमानिक ग्या क्रिक्त भक्ति न समु हे ग्या भेष्ट्र वीमोर्कि क्रिक्र एक ग्रेग्य। क्रिम्स कि न मण्ये हे ग्या भेक्त मुगेमदिन्मकेन्वा व्यूनिमदिन मिन्युकेन्वा देवः मार् नमः॥ मानु या। मानु क्रिया हेन्यया हिता भाषा न्वी सिन्य यह नुपरे विषया। भक्ता सिन्य सेक वेठववया मान्युन्ति अधित व्यक्षीयण व्यवप्या एकी अित्रय रेकिये हे स्वया वर्गिक अित्रय उम्बुठेक रेश वेध्वीभिक्षाच्या द्वार के विषया। क्मिरीभिक्षिण्यम क्र व वया। भेष्ट्र व अधि उ य न न व वया। त्र की अधि A. उत्यम्नि उन्द्र है वया या जियमय महा सुध् प्रध्रे थया असियमन मित्र का नुउन्दर्श र उनिथान विक्नारित्र ॥

उर्के वंसन् ॥ कि नमे दु उभक्ति महै पत्त्व न मिनि उक्त मुख्य के निर्दिश्य मिये। क्लिक लाइ विकेष कर्य कर्य ने भट्टन भट्टन कन्न न डीड मन्त्रीन ह नयथगानयमय विनिम्न विश्व भी विगमय मिनिय स्थित वर्षे स्थित कार्यान निर्मित । श्रान्क वर्षे एक विभन्न विभन्न विभन्न करिया नाउ द्वार इन भिन्त उगा इया हम्मिससे व बुर्भन सर सर मानित इधिक्छ: ह सक कि उन्न य अविए न जन्भे है। एमन्यनिन वा अप्रमद्विभष्टन ॥ विवन्ते वसः॥कर्त्वः॥ मजुष्टी । भन्न स्था कर्णना है । मनुष्ये । । जीम वन्ये । । भन्य सहन । यम नुष्ये वि है। न्त्राया। धितः हेरवेगेश्चनद्य। या। भारतः हेरवगराया नक्टाः।

उन्।वा । उन्। श्वानिक प्रकामरा हु ।। व्यान्यक राज्य क्या अभिवध्ययी भ्युं भाषि द्वी मी दें भक्त की भी थे धिक न्या भिया भिर्णन्मः ॥ एव भनः ॥ अहन्॥ नम्दुन। स्पम्हन। यम न्यारे।। ३१। न्यारे विद्रीसीवं मान भी भी धरी कल्या या मिन्य वना ॥ ९१ 911 भष्टना नमस्त्रनाम्यमष्टन।यमचुक्ये । भर्ष्टनः। विद्रीमी से सीमियपा भोड़न। नेमसे हे गी स्पर्भाइना 311 श्मन्य ।।।। महन्यन।। थिन्नः।। विद्रीम्निव्यक्ती स्थिय। अवन्य विभाग निम्य महन । यम नकरी - ३१ भामहङ्याधाः। सिंदीमी न् वेस्वीसीयंथ।। अह्वा वीन्त्रः । मध्यस्ट्राधमं नुक्ये ।। स्ट्राप्त ।। धिहः।।

लिंद्रीम् कि किमारी सीय था। श्रेष्ट्रना निम्द्रान । विश्व यमान्क्ये । महन्यन गान्य । गान्सिन मिर्मा ॥ १॥ द्यरीकीयथः॥ श्वनश्रम्भेन्।। स्यम्बन्। यमनुक्यः ३॥ न्द्र पर ।। स्टिन् में में इंडी में प्रिक्श है। हे न्यम उर्वेश्वामिन्द्रम् । हेर्वेश्वर्म द्रम् ॥ वाम द्रः थरवी स्यु म्यूकलम् श्रीष्ट विलाम्स भण्या विन्द्रा मन् देश भी में भी के विकलाम भी हा । इसी भी है। भाराक्षे भिद्धा व कु प्रकेश भी हा । श्री भिद्धा के व भी हा ॥ सम्मन्त्री भद्धि ही सम्मन्त्री भद्धि है। ॥ लक्रीमादिन कथन्तीमें केन्द्रभृतः॥ दग्नदीभिदिने उम्बेहें व भी हु। विश्व वी अस्ति व द्राव कर है वव भी हु।।।

किमानी सिन्द मार्य है गर् भीता। भारतम् वीसिन् मन्ते गर्थीयाः॥ इक्नी अदि सिम्द्रुकेरवर्षेष्टः॥ डिनि भक्ष यन्न अस्य भी। म्हमायारमा अस्वभी। अस्विति।। भन्य वुक् भन्त करासुन भभवृति छछाहाहुम् उहाँ उहित्यमम् वरः सुवदुक्व महन्त्र नहरम् मन ना अवर पर मुध्ये महरम्भ मजल प० कर मिल ने क्षान्य है वे एवं। गान्य नाः थित्र में उरार लाभने वार्ष्ट्रा थम् किवामें उत्तर वार्ष उठ्य नमाभः॥ उज्यद्भिष्ठ भीय महामान भीन भीन थान या रुनर्भण्य सीवभव मा सराग्री । उन्न रुन प्रम यहूर निर्णिभयुत्रम्॥ असुर्विष्क्रभयुत्रे भष्टन्भव्यान्त्र उम्। अधिमायायन्तिविषः ॥ उत्राध्यः ॥ भव गक्येन्। ॥ वन्म यमवन्ये। अवन्म गुरवं ॥ धरमपुरवं। धरमे विग्वनी थानमद्यं ॥ सिमिति इसे ।॥ उत्राचिति ।। प्राचिति ।।

A.

यहाशस्त्रवायन्ताः। यद्या स्त्रायः। विर्ण्यः। तिव्हत्यः॥ सम्बन्धिक स्टून किन्द्र । विधरम् स्वार्भे भारामें वीनवरी वनामी सामे कारामा जिसन्ने भर्मासन्येन ॥ भारतन द्वारे में दे भारतम् । अस्ति स्वार्थित । भारति स्वार्थित । भारति स्वार्थित । भारति विषय भुणनमः॥ इंडियः। इतिस्वराहित्याः॥ ईकव्राहित न्। इ: नरा विक्र कर में विषय विषय के नरा क्रिस् । वद्गित । जुर्यामान । हेरवाय कव । दिन्द निर् । भूणन्म : म्रामा । जिस्सी विद्या । विद्रम् यो क्रिस् यो क्रिस् यो क्रिस् यो क्रिस् विद्या । विद्रम् यो क्रिस् विद्या । विद्रम् यो क्रिस् विद्या । विद्रम् विद्र क्य मुण्य यं उद्ग्यं वक्ष यं भण्यों में भारत यं यं प्रति हैं में भारत स्वार्थ भव में विकास स्व

किमानी भक्ति मार्विष्य प्रिंग प्रिंग भक्तिम्बीमिक न्त्रिय प्रिंगः॥ इक्तिभिक्त सिममुक्तिविश्वा अति भक्ष याना अरावभी। म्हभायारलाधरावभी। उउविषिः। भरुष्य उक्भेष्टि हैं भर्नु भभवृति दलाहारूम् उत्तर्ह उत्तिहारमान्यः सुवर्काना महन्त्र नुहरम् वा । १ कए पराम् अवे महरम् मन्त ए० दरमिल इक्षान्य से ने एवं। गर्वन्तरः थितिमें उरार नाभमें वार्ष्ट्रा था में किवने वे वे वे नान उण्यनमानः १। उन्विष्यु सीय हर नाम मारे भी गाम या रुन्त्रभण्य स्विभावयम् मार्या ॥ उत्र रून भून यद्भन्ति भयुरम्॥ भरुष्विक भयुने भष्टन भृष्विष् उम्। १९ दिस्यायन्तिया । । उत्ताया भाव गर्येन्। ॥ वर्म यम्बर्ये ॥ श्रुक्म गुरवं ॥ धरमापुरवं ॥ धरमाध्य गुरवं ॥ थानमाद्या ॥ सुरिति हिड्नाः॥ उउः धन्यव द्वारा ।

A. A.

यहा । मुननु यन्। । ज्या । किन्य । विन्य या । विन्य या । विन्य या । सम्बन्धिक्त विभव्या किलक्ये। उन्ति भरान्या देवी प्रता छिथरम् से वृद्धिन भारा मेरी नवरिष्यनामा हामे कुमा ने था मा जिसक्न भर्मा मुराजा । पाइवका देक में व भाक स्मानमा नम भीउम भूमिक म मुक्भिक प्रित्म कि द्री भण्या में विया भुणवमः॥ इंडियः॥ई। सिवः॥ई मितः॥ई कवः॥ई न्।इ:मरः। विक्रम् विक्ययेक्षा भूकेन्सः॥

हण्डे इङ्ग्ले का गणिग्णे वडे व्य क्रिक्टे किया। अवडः सव भवेडे राइन्य कव । किंग्न : हिंगी कुपय ने ग्री वर्गन्ति पहें क्रिने ने के हाय भक्ष मुध्य मुध्यक्ष । विक्र म्योमिक्टिल म्यामे वना ।। यो क्रिक्टिंगी निमाण । दिक्व । दिन् ने । दिन् निक न्य हुन विषय वभः । वज्ञानिध चव्या । दे अवस्त गृहरें।। 'दी शिमार गाइन न गरिने मिया। दि अवन कव गदि मिवन्युमार्ते नर्गादः मनन्म नर्ग्या विद्यासम् विश्व के स्ट्रांस्ट्रिंग के स्ट्रिंग के स्ट्र इरेगों के भेववद्युल्भुविमागाई भवमन्य मिल्यव

A.

इः स्थित उर्व द अधिन सन्। इव मेर्म प्रमाणि हों म्निम्यक्यन्भः॥ भ्रेता उक्क न्यन्भः॥ मु।। इ कीनगवण्या । मार्ने सद्भाने । विशेष्ठकवी गया। । ।। विह्मां के किए यन भाषे वेश कि ही ते की विश्व उक्यं गान्ता गिन्द्र की मिय्य नाय गार गिर्देश की इ नियरिक या ने । विही ही इ जय या था विही ही कन्नयः॥वः॥व्याप्याक्रम्निनः॥उः॥विनुयुम् एक यान या गारे में हिन्दी हिन है। हिन्दी क्रमार्था अञ्चा कि क्रमा क्रम्य स्थान स्था विद्रीहीं रूर्यर स्वर्धन्यन्मः॥ डिविक्र्यन्तन् प्रमारा

उत्ते अत्या वर्ग मा के मार्थ के नाम के का करिया रणभूरम्ने मिवधस्य भन्ने चेरायनी धरेशका नाया इक्षित्र यस्य दुरुद्ध भव्य स्मित्र स्वित्र रागम् स्विति इन्विमकुडभी ॥ इडिमर्यन्तिन धरमञ्चर वर्ष इन्मर्द्र क्याज्ञा विनित्ति हु स्क्मी हु कि व्यासी धिभ इन्या संधने हुने हुउ पड़ा। क्षेत्र विषय। मुध्य मे सुरी निष उपश्चिम् केवया। स्मीकि विवया। भारामिकी भितिन य वज्ज भेठे - वया मुमद्रक्या करु न्या ही भवावया। मुद्र मया करवी गया। कर्षाष्ट्र या क्ला मया। नुन्यगय। देनक्या दिश्व नुक्या मियन निय रिक्या।ज्याय।कान्य।कानी।एक्पमय।। ही भक्रमय्याक्षेत्रयाक्ष्य मुग्याभयारलियेत्री व भट्टेक्टक्ट्रम्या

A.

43

व्यानीयमञ्जल विद्विन् व्यानमः।। सीयनभः।। स्वयम्बन्द्व वन्। भिन्न के वर्षे गेन्यन द्या वा भान के वर्षे गेन येन द्रेश भायार्जनिति वाष्ट्रपः भुगार्शियन्गार्भष्ट्रने । गाय्येनाः॥ उन्ने मण्य वि ।। ३॥यम न्करो वि ।। ३॥ निय व उर्रे ।।३॥ म्इउ वड । नीम डिवपेटा। म्योम रीम रीम कि उम् भुद्ध न है वर्षे स्रीविष्ठविषया। भारतिभदिन् यद्गुपके स्वनाम् भद्र क्रमाक्ष्वत्या वीमग्वमान्द्रद्वान्याकाक्ष ष्ट्रिं। क्लार्यस्थान्त्व यस्था अने। बन्क्र्यानिभूगन्क्रिं। म्रिवर लम् । मार्गिर प्रमाजिय रहे। क लम्। कर निनः। एकम्मर्गादिम्यम् भारत्रिम्यम्। ित्रः के वयग्रम् नेत्स्।याभारः के वयग्रायानम् था। उत्रा वा उत्तर भवति भवपम्यी स्ट्रिशी स्ट्रिशि छ जन्म। वारकारमञ्जा

मीमाजिपया। मुध्ये गेह में भित उत्तर है के वर्ष के मान ने मां। क्षाइसी क न्नाय सी जन्म र सी जनक सी विश्व र मुक्सी मिय या निर्मितिरिक्ष्य । जियुग्य । किंग्नियः। । १००५ म्या वीमञ्जूरे । द्वार मार्थ । द्वार क्षार । द्वार । द नीनि उविचर्य। मिया विश्वासि उपरास्त्र के वया। सन्ति व विषय।अण्यानेवीमादिन्यवद्गुपठेग्वाय। सुमद्रक्य। विष नाया ही भर्षय । सुद्र कर्णया क्रवी गया । क्रविष्या क्रविष्या यसयाज्ञेन्द्रग्या दिनक्यादिश्व ज्रक्यास्यिव जन्या वेस्यिक्या नियायाक न्या कंगनिन् । एक प्रमाया ही ते ने भाय। जिस्त्ये। जिस्के वर्षे। युम् वः भूर्यामे। विभक्षा सीका विषये। भर्मे वीष्ट्रवी भित्र श्रम् ने हे व्या भर्मि विषयेया

वाशकरम्बंगी

अयोक्षेत्र वीमित्र वक्ष कुर्यो के विश्व में महिला कि कि का विमत्य विश्व क्रिश्व मिक्क्ष्यम् । क्रिक्ष विक्रिक्ष नुक्। नायवन ना मन्त्रिय रिक्ष । ज्या का ना क्र ना निक्ष रही। ही महाभी द्वार कर कर कर के महायं द्वार प्रमा कि मुयद्य। यय विकिर्शिथ्य क्रियंक्षी कर्ने यक्षी मारू: भड़ाईमेर्ने: ज्ञमः थानीयभप्ताः भवेष्वणि । भप्ताः थानुके व सिरिः भारः॥ हरायनुः थन् शासीका विषया मिन्दी में में ने यह कर के वर्षा म्बावादिया। भण्यानि निक्य यह कु प्रे ववण्य । सुमंद्रक्या। क्रुनया विमन्यया नद्भन्य । कन्यीनया । कन्यीन या। क्ल्य मया ज्लाह र यो दिनक या विश्व देव देव विश्व विश्व न्यानियरिक्यान्याक्नय्योक्नया वीमजुप्ता दुमरया दर्क्य वर्षा थह नमः ।। यह मधिनवद्।। भन् कत्रुष्यकर्गाम्यः विक्रमण्यिम् वर्षुन्तः भगन्तुंनः वाभष्टरम्बर्माहराया

म्ब्रीमि ग्रीवंद्य।। यवः भिक्त क्रक के वर्षे ग्रह्म : ध्रकी द्विष्टः श्रहण विक्रु अने १९१ दीक्षित्र विधंयाम् भीम् रीमानित्र शक्त स्वीभिक्ष स्वीभिक्ष वन्त्र्यकेववान्त्रम् द्रकाक्ष्ठनाठीमवन्वान्त्रद्रक्नाकविता, क्रि कार्राष्ट्र।किल्म्भाजन्मित्रवीक्षिक्षाक्ष्याक्ष्यक्षिक्षाक्ष्यका नियं किया का का का नियं के वित्र में क्रमगाद्यक्षा अस्तः म्यानमः। निवा गिवरा । स्थिते मुरीमिक य सक्ष निके र वर्षे। कि निवासिया। भारा मधी भदिन ययद्र व पठे ग्वाय । नुमग्रक या। क्षुना या। कीमर यय् । निस्त में या । करवी गय । करके । ए या । कर्ना प्राथे। ज्ञेन्द्रग्यादिनक्यातिभग्द्रकृया स्विवन्नग्या स्विधिय इया नियम्याक्त्या क्रम्मना गिरक्थम्या हित्र्य > वे या रुप्ते ग्या दारके वर्षा । लियने व महा स्था सी में क अस्यमन मित्र एक । हिंग कि नियम नियम ।

विविद्यान के मिल के निविद्यान क न्द्रम् कलनगु मिन्द्रिन येथा नियम्य विनि में निर्याप्ति निर्याप्ति मनिवस्य सक्वन सिन्द्र कार्य निवीत्वनी भूष्य कर्ने भूणकार धारि धेने द्वापापि के स्विभवस्य व व पक इनमीन नाइयाष्ट्र ने देन के कुनम्मरम् मह भाकितंतुर्य भविण्न ज्यारे श्वाप्य द्यगिनीनं उभाव थर्नु भर्गा वि म्नायेन्।।क्रान्ते।।स्पृत्ते।।भ्रद्धान द्येशकर्गन्ते शमतुर्थे शिवज्ये शिमदन्त्रे श न्यस्ट्रन्। यमन्द्रम्थः।।३॥न्द्रन्यन्।। भिद्धः हेनवर्गर्नु नव्रशायगाभातः हेरव्यव्यानव्यानव्याः ॥ उत्रायगाउत्रा भीनक स्काम्य हुन भिग्वकार निया गार्डिश मिवधम्य भ्या है। सीमिनिवर्षे । स्थानित्री सीय पिनकन्पया निस्कान्।।।

न्मीक्षिविषये। चिंद्रीस्य यन्त्रवीसीय विक्त्रय मी नुगन् उत्रः स्ट्रमुलिं विन्ट्र अभीमग्ह्यां स्ट्रापिक्रां। उर्कायनिया भयुष्ट्रार्थना भुव्य भव्य हा । नुसु यक्टाकः मः॥ रामः॥ यमः॥ यमः॥ यमः॥ कर्ने यक्टा ॥ । विसी भनुक कर । विहम । सी मिन । १ माया । नुक्व । कि नेव्याक्त्रेण्या । इवः धादम इव्याप्य द्वनायात्र न व्यय भायभागकन्मत्नमः । मुद्दान्मः॥ भूद्दान्मः॥ अन्तान भक्ष जारा । विदः वट प्रमान केनी वट । दे स्वाप्ता दः वट उन्नायनकारिकट्या राष्ट्र भी नियम् वनकनकारमा का भनीका का शास्त्र का निकार भारतनकः॥मननकः॥भानिकामान्याकः॥भिम्याक्रिमान्द्रण्या उतिज्ञ द्रशा

#·

छिट्टिस्यम्बार्वे के स्यापना । भमन्तवन्यद्वा भर्ः। कि करावर किंग करी करी करा । इति के सम्बद्ध कर ना उउ: इत्रेम्ट्रेपराम्क्रहभेड्रा थाउर् वे उन्यू महम्स्था दः वर माम्स्कारिकर १ विषय स्वास्त्र मान्या निया उर्वित्र भन् ना उर्वामान ना यन ।। जिस्मिकाव वियमीहारि मुगस्छ । भिन्नि । अनियु १ भिन्दि । ठेव १ भविणित ९ हगविष्यमी स्विति म्मी हीक स्मिन्मः।। मुहयुन्।। नील्युल्सन्त हामान्। इन्द्रारेन्त्र नामा भागन्त भवार मा कुषि जिसे । श्रुवि से विता से वी भुग्रायक्त्रभट्टाः व्यक्तम्निधित्रम् द्वानिक्ति। हगवित्र सुसमनीय गाना सुन्ता हगवित्र वनी स्वित्र

इन्डिं। नग्विद्धारिक्षित्रीयंग्याद्या द्वारा हिगवा वरगीवित भविषयासि उठवनमः। या विकि वरगीवितमः॥ उनियानामान विस्तित में उन्ने में के विस्तित यिइ वर्गीहाः भिवणन्य यनिमृत् भूमन्य । १३३:क स्यावनुमानिय । चिक्रमः स्कूल क्रिमिक्टा उतिभर्द्या एकए निरीय कि किनिरी म्ला विकट स्याप्य क ने के नी निकट । व उपगुक्त ना कि महायूनम्यायनभः॥भभग्नकन्गत्नमः॥म्यः॥ भया। । जिल्ला स्वार निष्ठ धरामिक ।। अविभने महकार्ष्ण व्या स्वास्त्र प्रवेश विषय । उन्हें ना कि विः॥ नि वेस्यः इतुम्मुहिक्निभेचुन्द्रा विकार

A:

点

क्रिक्ट क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रिक क्रिक्ट क्रिक क्रि कुलाग् मेलन गर्दिं व्यमन्स्रित्य प्रकेन्तिक्रि भ्विम् भूमेश्रान्य निक्षिण्य विद्राष्ट्रिण नामा भूटेन रम न्मः॥रहरा रिमरेगाई नित्या । वेकवारि नेइग्रा रः मन्ता कि अस्प्रभाडीकिंगीन ना । शिश्यमक्रमय निव अतिमञ्जू भिया थिक न्या विदेश विदेश स्था में स्था भी कि । धिविष्ट्र । असे कर्ति प्रकार के प्रकार के प्रकार के प्रकार कर्म के प्रकार क वण्यक्तायाम्बनः ॥५ ३५ किस् । अप्रेड कारा कि कि विकारित कि विकारित्रमः १ शहराहणद्वमहाना हा हो है है ने किया हा है में हिंदी है किया है में हिंदी है किया है किय जिए जी। लिया ने ने ने अपनिक ने मिर कि गी कि का किए भन्न भवाक्षितियानि स्टार्का । किं किं भूने कीर धन्ते भराष्ट्रीय भाष्ट्रीयरागी भग्य हर सुन्दा । है। विद्येन्यः भ्रम द्वव्यमः श्वितित्त्वार्णस्य कारिक्षि बा भिन्ने मुन् भ्रम्मा ।। सम्मान्ने वनगं सुन्।। मुन्।। र्यात्मः। विद्वास्त्रः प्रसदनकेतिम् द्वा ३॥ विसम्प हुउं। छि दे वस्यः भीम नुन्यनक वीमस्य का शार्वशस्य

A.

छिवे स्यादिक्न यूर्ये करना ।। इति का मण्या सम्यासीय रिव निम् हुन किंद्र नुगः ने ब्रुयक्नान करिम् का १ । विश्वसम्बर्गिक वस्ताः भीमें कन्पयनी सुन्दारी आवर स्यक्रा विवन्ते भाषकन्त्या भाषकन्त्रा भाषकन्त्र विवेस्यः द्वारिक्ष कर्णया कर्णया निर्मा कार्यभम् हुड़ भारित सुर्वे कि सुर्वे देश कर्ता या मिर्ड कर्णा है। विकारिक मिर्देश कि मेर् रिष्किति। दिलाहि। क्ट्यः दिन देशादि। भीरक किए के भी अभिक्क भी वर्षिक के शिवसक भी अभिक्र में विकार

331

हिं वर्षे : समस्मिने के के मियद्र ॥ शाल्य सम्द हुउगालिक नाः ॥ अविकित्या वर्गीयः प्रिश्वः विक्षा विक्षा ययवमः॥भभगन्त्रवाह्यनभः॥ मुख्यमः॥ भर्द्यन्तः॥ किन्नारहक्षक्षकारियान्य ।। विस्तरक्षक्षक्ष्या । यं नये: भुवक्वित्रिवविद्य प्राप्त हो । अवस्था वियमम् इन । विद्युयन् । विद्युपन् । वियमम् इन । विद्युपन । विद्युपन । विद्युपन । विद्युपन । भयक्त्रा विद्यं है वर्षा थिया महामित्र । । ।। विद्यानि । इत्राप्तिक । १३॥ विद्य है उत्र वि भिति । १० विद्या । ११ विद्या । ११ विद्या । १४ विद्या । १

A.

थानु विमेनु वन्यः ध्रम्ध्रमन् मनु लहु मन्दि किहिया। अवयुद्धकावने :।। महिल मह्यवन :।। उड्ड अमामिक्यवन :।। भिन्ने सिद्धिन्मः । अतिविश्वनेम एक्ष्य वर्गा उत्तर्भाः ॥ विद्याने सिद्धाने कित्रीमें ॥ ३॥ एवं मृत्य वर्गा एक्ष्य मृत्य रिक्नमाने कित्रीमें ॥ ३॥ एवं मृत्य हुउ ॥ उत्तर्भा हु ॥ दर्गिक के कि त्या है के वार्ग के कि का मिला किनियाना । । एवं भन्य हुन । कि इंग्सें है नव प्रिष्ट न्मः॥ इंडिविक्र ने ॥ छिद्गी एक १ क्व १ हु ज्या १ भवण में १ र्वा धर्मित्र मेरे कालाम्य सहित्र केला १ शाला। निक्नाः हे वयायनमः ।। भामान्त्व गर्ने अधाः ॥ किन्नाः है वराधिकामक वर्णकिनिकु का १३ १ लिये अन्य

विश्वा के मीये हा नामये में द्वार प्राप्त के नाम है कि नाम है र्मित उक्मभाम ने क्म में नाम ।। वनम क्या करा करा यक्त ज्ञाननमा मुक्थभूग वस्त मिन कर् महरूपमे भगारिननभवद्ग यर में नव व स्रमा श्रिव व थाइपका व दमक्त मिन्यन कि उन्तर एक वर्षि भान्यन सम्बा मुक्यास्मनस्य रामा स्वास्म विद्वार में में से में से मुद्राय द्वक्ष्मथायकम् ॥ अव इद्वल्यानमः॥गद्वः उपराः। विद्रालका का । अ। इसना मार्डा । अवापहे विम्हारिका नइयमः।।गर् उभ्यः।।विनद्यंस्वता।। नक्षाहरा मामाला विद्वारित है। उड़े अमित्य ब्रा गतु अधाः ॥ जिम्मासप्यद्वाद्वा ॥ ३॥ भम्मासप्याद्वा

नुः

उनु - अद्भितिस् विश्वस्थिति अद्भिति विश्वतिन भे श्राम्य अस्य अ विस्वयन्।।।विस्नार्गः। यतिमविस्वितिरा विद्वार्गिष्ट्रिन्मः। अभवना ठनगत्नन। मुद्राः। भूरे वर्गाहर्ष्ट्र कि । वर्गाहित्यहरें । उन्न भिष्ठिति विन्तियम् हिंगीमा स्मित वर्गीहरि गर्करिय भविद्यमा भने हे ग्वाम जन्म भन मडीयादिमेनानाविया णाडाया विकास है वरा गि उर्यमिन का १९ मा इस स्वाद के ना विद्य ग्रेनक् गीमक्वा । इंड्ये उपने । कि स्मानक्री किए उडिवान क्रमार्मा । विद्रम्य के यानि इ ॥ उड्वा क्षेत्रा अन्येन जन्येन । दिः इसे ले । हिर्द्य हिने में माला

विनुत्रुव्यानमः ॥ भूने॥ द्वारिक व । ॥ भूवे॥ भः मिवव्युप्यान भः ॥ मिविना कर्ण्यस्वः ११ थनः उत्पन्क । इत्मनंक । चिक्रा नेक ना भवनभव्यामः॥ भनः उपानकः॥ दिक्तालकः॥ स्मालकः॥ धननभनभा गेरे द्वापर्मिय है है भी में भेर था मिन मिनित्रपे परायम् । मियमना कु नेमः ॥ भागना कन ग्रीनाः म्यन्भः भ्रयन्भः ॥ ज्ञानिष्यान्भः॥ मन्यन्भः॥ मन्यन्भः गहार भ्रम्भ द्वास । दिन के कि स्वार्थ के कि स्वार्य के कि इक्सभक्षान्य । सुड् भेगि सूयन ॥ भू तम् भर्म उथानम् भागनमा । किल्ल न्यान केने मिल्ला । किंद्र मद्ये द यामी दूम ।। उत्वरा के समिन्म।। विद्या देन कर भवकट्याद्वयं के मुन्द्रम् में मार्थ भवः कट्यान कितीयका ॥ अति मी धुने उर्पनमा ॥ ति द्वा उर्वा करिता

Si.

स्यामिन्य कि का निर्मा मी मी से भूकि वा के स्थित है। निक्षं इसमें किती क्षां । विविद्या विविद्या । विविद्या । नम् । उन्नास् सम्भात्र महका गुर्वा नाग्माका कर्त्वा वाम इड्डिमम्मय विद्युवधन द्वापन्यन द्वापन मंभवन भारतना द्वा प्रमान कृत् जी। यहा। लिया भेड उर्वन करीमक ए १३१ चित्रा भेड मा क्रीमिक्षा ।। अपनि महिन्द्र ५ इन्हर ५ इन्हर अन्तन्ति भगा । लिस्ट देश भक्ति । । जिस्ते ने उर्गितिमान्य वर्गित्र वर्गिति वर्गिति हें उनग्म असूरवः ॥ अवस्त्र नार्के न अवडे इने में देन।

विद्यानी गरानं के विभिन्द्या । इविनी गराने गरानि द्रीहन्न के उस्मिय उपमुद्री विद्यांनाः इनेन बिना कि युन्ति वर्षियकार्मा । भनः । विद्यास्ति । विद्यास्ति । भिक्टा १ डिड्रें मानी किंद्रा से मा उस्त ठेव व यव में। लिन हर । है मिन ।। वे मिए ।। कु कव ।। किए न्यः॥ डीमुलाद्भे विभन्न ॥ सम्भे वसमूयः मा वीवाडा। क्य वयम् अथा कराइय वर्ग देवय है यह । यह १ भष्टाभुम्य वमः॥ समिन्ना भिक्तन्य वमः॥वन्मा उन्येक्मः शक्षान्य स्कार्मान् विधिक्र नाम्याय अद्यवमः । अति महिल्या छिन् भुन्न स्याया येवन

मं

विभः उन्न्याय समायनमः १। इति वन्म। उद्वर्धायन् ठग उर्यक्नप्रामिनमः । न्यान् । । छि । वर्षे । राग्यक्नम कर्मनमः ॥ उड्डमाप भूगमम् अभिक्यभन्तप्रा लिलि भिन्न महाराय अत्रयन्यः ॥ अविभिन्न मा विद्याना ।। यंभमप्यवमः १। डाउ श्रुक्ता। वाक्रवरम् १। डिस्थिष्ट्रा ग्रम्ह मन्वण वाद्ममन्य । जिन्न स्यायक्ष महाराम्या श्राद्धा विकार विकार महाया मुड्मू कराया दे के में हरा कि से मार्थिन हैं है में करा में उनिम्म प्रमा प्य क्रिम्मा नुरुष्मा विष् मम्लग बिक्सम् रुग लिन्सः स्यूप्यद्वान । सृष्ट

यमारण विद्न मार्ग विद्न भी मार्थ प्राप्त । मुद्र भष्टकान्द्रिमप्रकृति वित्रंत व मस्मित्राः। उत्रः विन्त्वा कि रुप्ताः केवया पुः भूपन क्रिक्सिम्हा । एवं भय हुए १ उड मुह न १ भय उत्तर । विद्रदेनिद्रदेनिदः समाउक्तिम् उद्योगाद उन्देश्यविने । स्वय्य नमन्। विस्तृष्ट देनाः भन्ति अभक्त मानविधानी सुद्ध भ्राम्याभक्त मान निकाः भीतिताः निह्नुनिक हिन्महेर्ड किल्पि भगानम् गर्वेद्यभक्ष्यस्य गार्वे व्यक्तियाम् वृश महा या। थिहः है वये गाउन नव्नायाभाइः है वय गर्यानव्याः। उत्र वा उत्राः भरतीक मिवध्यपे भ

H.

हैन्यप्य देसम् हमय्याभ्यमः ॥ जनः प्रनम् वर्षि॥ चिन्नमन्यवर्गाष्ट्रमधी वन्त्रममिनः मद्राष्ट्र गुग्यः भभीग्रम्के क्रण्यम् नुष्म श्रिक्षेवेद्यि भन्नमनिमान्ने अन्तर्भाग्यांने नेक्सः करणिन गहुमान्ति ठेवयायाविनुन्मकवण्यनुः भद्यक्ष भागना अनुवामा ।। अने विश्वामा कि सेवन एकनाम मेमकविनेत्र धम्मनम वनम ठयम् भुस्मा मुक्त क्याद्भवन्त्रीयात्रम् महायानित्र मन्द्रम् निक्र करे बूद्ध मानवूड नु म्ह भहन नु गः भारताः भन् देग्धाः।

वितियन्त्यम् । उत्रः क्षत्र महन्वितः क्षाः धरायत्रा । वि ग्रह्मायनभाश्या म्हर्न्यन्त्राम् ।। मुः गणिभाष्ट्रम्यः॥ इ.गिलेमवुद्र विशेशविशा कियमी करें गुप्त ।। किए मुर्ट श्रीता। िम्ह्रमरी।।उनिमृहिमरी।।उनिकिसनिहिस्सरी।।अ।। अविमेष्ट्रा वद्गिक्षिक्षात्र भूमम् ॥ श्राह्म वर्षे यहवा कि राष्ट्र मार्थित मार्थित मार्थित हैं। विमन्निविष्टें।विवमीक्रें।विज्ञार्टे।विमन् लिभानियारी। लिभविम दिस्यारेन का विश्वास्त्र इयम्ब्रह्मा विद्या है विद्या किया किया निर्दे भारतयम् ॥ इति निर्वाया। इतः कत्मा भाषा।

39

विद्रीिद्र ए वन्णयेन् भः। द्रीद्रीण्यार्थे । निष्ठित्र थे । र्येगाइनिस्वयंग्रीनाइवइन भूमः॥ अदिन प्रते । ज्ञी मुख्यः॥ दे विज्ञ है । भरे ज्ञित्मः॥ एवं भुष्य विज्ञ दिन्दि । विज्ञी दिन्द अन्दर्श विष्ट हैं में रे विष्ट हैं में रे विष्ट हैं। विश्वमन नयम् नारियम् वर्षा रिष्ट्रम नि अद्या । विज्ञ ज्ञान व या । विज्ञान व या । विज्ञान व या । म्येगालनात्रेगालगान्यान्य । त्यम्य स्टा कि विद्यालया। है किये विद्या कर्णा कि इ डिस्टेगडिन्टेगडिन्थेगडिन्थिन

किं श्री विदेशका किंगे म्या श्री किंग्य में न्या कि दे मुद्रिश्य शांक में स्काय शिक्य मय शिक्य में कि मिन्स् भे में शिक्ष क्या शांक महिन शिक्ष महिंग कि मिन्स् य शिक्ष क्या शिक्ष महाने विशेष कि महिंग में शिक्ष करने य्। विष्यम् वर्षे । विक्रणना कुष्य । विवयम् विधनाविष्यः। विभन्धन्यन्। विभन्नवयः। विभन्नवयः। सिये ने विह्न के ने वहुने ने विद्यु ने विष्यु क्राड्मानायगालिभिक्त्यगालि भरेडे कुडेट्रिया नि महोने मार्गीन भद्यम् सह यह के यह के हुद्दे भरा नि हुड शिष्ट्र के गण भारती यह के लिए हुन या श्री मिन्से श नुमाप यह सार्थ शिक्ष करा स्वाप्त के निर्देश में प्राप्त श

रं विष्यीमा जम्प प्रशान मन्य भन्न व रामभ्रम धन्नधार्थन्तु नर्गे पवी नी त्रिम्क सीमर्गित्र युगासन्ः म् वियोग मेर्ने वजनी निमानि हुं भी मुन्धि व प्राचनादा ल्यां मन्नः।। विश्वनागल्यास्य वा अवस्ति। चिनीसः मार्गपितिस्ति हरी मुख्या। ००३॥ मा हरः गांनी मिरा। मु मिया । भी कवा भी में मेर्। भारत में भी धनका विद्वार किंग्ननम् द्वर्भित्रक्षित्रक्षित्रकार्मा कारीम करावग्ह्नीर भूकरण्ड गल्य नास बह्म का भा हिंगीतः गल्य धिवन्निक्येश्वा परम्मालमः ॥ के दी की निर्मा शन्धार्य वरवरम अस्रान्भ वसभान्य भूग्ता १० । ३ १ किहर ।। भी गर्म पर्टि मिर ।। भी कावर मिला ।। मी भवर नमें ERAP!

व्याप्तिमानय नेव्शानं सुद्धान्त्रमुद्धा भूनका । द्रमीन्यन्विति म् यत्रभन्न क्रायं विने र नम्मिष्ट्र मियाया अथर् करया अक्षा भवनमा वीरुभागां पनि मिएयहारी इथमें व्याप्त विश्व विश्व क्रिक्न क्रिक्न विश्व हरोभवर नर्ह स्य भम्ज्यम् जन १ भक्षा ००३॥ 之へ चिद्धरः ।। स्रीमण्यविक्वर्ये क्रिन् ।। द्वी अन्य स्था क्रीहर्य कवाशीं भमत्वम वर्गी मी जार राजगर 丹。 मुन्। । अन्य। द्वारी के प्रतिक के भारती है। किन्निक निर्मा कि । किन्निक किन्निक मिन्निक मि मित्यः।कि कवनकि नेवनिकः निद्ः॥ अन्ति। अन्ति।

गिता निया थराका मिन् मण्यभीपमान मित्रिकारणः भगः ॥ भना विक्र क्री भः भर्ष द्वा दा १० । ३॥ सहरू। मक्यिति। एकुद्वे थेः दुर्गले निष्। इ कव्यः॥ कर्न्न । इन निर्मा । अन्या व्यन ॥ व्यन में नप्रम मिनिन्न श्रेम श्रेम अन्त् भन्त्र या भाषा मान रिकार्यमिन्यहानि वर्षा क्रिया सम्मानिक स्थानिक

* किन्मनुण नमेनुन भंद्य : मन्द्रभा : भन्न गणन ल मुण्ये वक्त अपेन व मून्ग भन्दम्हन् अर् के विभुक् हरू ॥ अन्तार्था किन्त्रम् भूग वद्गिमा । इस निायः । हिन्या क्वि । विष्यत ने ने । भूष नन्। । नन्। सिन्त्र धानुवन् समराद्व भमान क्मा मुन्य अध्याप्त्र व ने इ. स्क्नेस् उमा भाउना वन्द्रभे ज्ञान्तरम्के : या न्यान्य प्रभारति भुगनुक्रम् गर्मनार्था विक्षा भारत्य वे विकास भगनुन्द ००३॥ इन्हर्गाई कि गेडू किए गोई क्य गोई चर्गा इंस्पुः॥ धरमहरेश में यार्मिय नवयायनमा कुमा कुमान थामार्मित्र भरामन्यत्। प्रमाने ।।।। महायाः।

相。

विद्वस्पान्त्र विषान्ति विद्यान्ति । विद्वस्पान्ति विद्यान्ति । विद्यानि विद्यानि विद्यानि । विद्य न्य है है नमा ०० अ। उद्येश का निसमा मः १ यहा १। नमहर उपने पहें है। यह में मेर वर्ग पर के विकास वज्ञायां। य ब्रुम्ध वज्ञायां। क्रा बस न वज्ञायन का लिस्य में हैं। भवाउन हर्याय क्षेत्र शह भवाउन द्वल मिरमेश्वा पार्य र र र विषय मिला है मिला है वचा देवा अस्तः महभर्गः भित्रनायकपर्यद्वश्चा निक्तान है जी वेप हैं ने इही वस मार्थ की नमन्त्र पहीं इनमे इहिट्य भन्धानुधान्नुयान्द्वा भूडक सम्मा भन्ना प्राची वामाण देक्थार मार विन्त्र-म्मं ह्र वी चार्षि विक्रण प्रमान में भी विक्र हर्

अण्यक्र स्मार्यसम्बन्धन्मम् क्रम् कुत्रस्थिनुन्दियान् नक्षे मन्यव्याभित्र रेवन श्रुक्त नार्ष भूभः ॥ भन्त ॥ है।। ए इस न्योद्धाः इक्ष म्यास्ट्रियाल्या ० । ज्ञास्त्र र्वित्र विक्रिक्ष विक्रिक्ष विक्रिक्ष विक्रिक्ष विक्रम्पित क्रा रमें ववशक्तर शकी मिरा शक्ति मिरा । कि क्व श कि व्यष्ट । दिः निर्पेष विकासन सममः । अन्ता प्राची किन स्दूर् भेगहें भी कि है। भी भी बुद्धार कारण श्रीर परेन्य्र भयी मिता। धना श्री ए द्विति निर्वष्ठम् विषया धुन्। वज्ञाद्वाम्ममा ।। निर्माद्वा वज्यात्राहा व वामस्वव । ने स्वापन व । य उर्ने धवा 73 क उम्बवनिक भवक्ष हरना दी श्री मिन कि मुक्तिक चित्रं भः विक्री गुड़क किन द्री सुक्ता १० आ चिह ।। मुं मिर।। भः मिता।। ति कव।। क्री नेरेश गृहक निकड़ी भेज मन्द्रा धन्य ॥ प्रन् ॥ छिनी निम्भेण भिन्छ प्रमिकन मिन्नमञ्जूनेन न्याकुर्यल कुरिय विनयन १ देश्वनुव कव शिक्त स्विन्ध्या नेवेहें शहा सन्नुमन भूरा । विद्वास देन अपनाय थानाय भन्म द्वारिक ००३ ए हम्मान मिर्गाभः मिता। हि क्रां निया निया। प्रताश्चित्री के भी यम में मिरिम कि कर ने भी ये धक्तिविष्वा भीय्रध्या भम्ष्या नगाउः भीय्रधण्य परः भभीयुम्भवादश्वादश्वः भीयुम्बन्धाः भीयुम् व्यव्यान्यान्यः। प्रमान्यः। प्रमान्यः। न्मिडमुन्द्रवय्यक्षाद्रा दिन्द्र क्रिंग् क्रिंग क्रिंग क्रिंग क्रिंग न मिला । के कव । हिं ने ने । किए मन । किय न यह यह का कुष्टि । ११ : नुवृत्। भन्न शृष्टानेश कि हवर्गात भग्नेन मिक्ना निक्र मिक्र में हुन् हिरालि हार भग्नेन मिक्ना निक्र मिक्र मिक्

रयमनन्त्रम् अनुस्थितं अव्यास्य देश्वर्यः दर्ग्यम् ए न्द्रमा अल्या भी प्रमान में उन्हें के कार्य के नि कि इन्हरती है मिल्ली किया। दि करता है हैं देंगी क्लम्मुः। धन्का वृत्। लिधेन म्यत्र महारहिए। भाउम्बीमा इन्डमभाउमा कुराउ उद्गीद नी हरेन भना। किन्मः मिक्य का किन्त्र । वित्र । वित्र ।। भः मिनि ।। मिकवशीय ने वृष्ट्रशीय निर्मा न विमान भेव । भेर वर्ष वज्ञायः॥विम्यान्वत्यायः॥व्यान्यव्यव्यान्यभ्य अवयः शयका अवसमामः । व अववक्षा यः । भः अववक्षा मि समिलावः। य उड़ायः।। दा धन्तिमं वङ्ग पराजाः।

भन्य विषय मिति अन्य है कि मन्य में वि मन्य में स्थाप में अनुयेगा कि नुप्य मेर्य मुक् मे भुये । कि भक्ते व्य अह भुरोशिक ठीमें यमप्य भीमभुराशी के वम् न यमक्य यसमन् भुव्ये । विद्वादी देशक्ल वयद्वे द्वार्य सम् स्याई हर । इति । इति । इति वाई कर । इ ने । इ नि कं लिन्विष्ठिकनारियारे सुद्धानि सादा विद्या से सुकूना कि। जेर विध्वा । कि इ विष्ट कन्तरी पड़िय नक्षेर । कि मनुष्मनाधिपाय नेस्वाय । विस्व प्रीत प्रमाधिप विष श्रमीत्या । चिम्नुयन्भुक्षे । चिम्नुवन्भक्षे । चिम्नुवन्भक्षे । चिम्नुवन्भक्षे । चिम्नुवन्भक्षे

विमन्यन्यन् । विमन्यन्यन्यन्य । त्वे विधनाय ।। विमन्य ।। विम्य ।। विमन्य ।। हरायं। विभुष्य । वि पद्व द्वरा । विदी करें। विद्नमूरें। किथान्येशीक विद्यामा विवस्त्यशाल स्यागील थानये। विश्वतायन्यन प्रता विकासका कथानी महिन वयम्दानी विद्यानिक द्वारेश विद्यानिक मध्यनमें शिक्त भागर है। कि करमामन्त्रयह रिट्टाराके ।। उद्राम्यानिया किंदी स्नन्यह क्षी लिए गु असाय । लि असिव दुभाय । लि का एक ने उपया। िमयुलकनद्या विमुद्दि । विद्व दिक का यय जा

F.

94

इनक्य । विनंत हिं जी मार्य कि अ य शालन हम्यय क्षा विद्यास्य राम् यमदः । विस्तृत्य गमादा । उस्तानाय मध्या । विद्या ल्ये. गर्भ वास है। । इसा व्याद्धः।। व्र लिसाम्बर्ज सारायेच

विस्तरयं विस्त्यारी शिव भ्रम्तरायी श्रिव महराये श विभम्या इया । विमिनिहे । विनम्या स्था रिख्यें गेलंद क्र लेस द्या है इंडीम अव्य भक्त भाव दस्य विषय । विषय । विषय । विषय । विषय । विक्रानायु मनेद्राराश वियन्तु र द्वा विद्राविश कर्वेश विद्रीसी स्वन्त्रना गर्यसूद्धा । श्रेयस्किश श्रेत्रक्श १ धर्मा १ भद्धा १ १ का क्टा १ श्रेष्ट्रस्थ का श्रे विस्ति अनिक्नणगर्थ्य श्रुप्ता विस्त्र्यन प्रता विद्यस्य । विगम्य । विद्नुन्य । विधम्य । विदन्य ।

वृतियः द्वार्त्ता धरागाम। वतन किना निर्हे । वनः इमः केरी केरी अरि न किन ने रिके में निर्मा के सम्मान यितिम् असम्बुद्धेन्द्वेभिक्तम् वः अभिक्षिक्षार्थे। धनु धन्मिर्ण्यान् कं वर्त्ते । वेद्र्विम्यदि हिम्रुप्येणे। वनः मिवः ५१) विश्वा ।। इम्हारिने ९ हम्बुप्य भवष्ट्राधन, मामिक्याभा-सन्दुर्यार । सन्याया ११ न्त्रन्यं १३१ द्वया १०१ महार्य १०१ हिन्धि र्या००॥ निर्धे योगने १०३१ है नक या १०३१ हिन्दे ।

सहरूउ में बुरा १९६।

भवेत्यस्टियार्था नियार्थार्था उसन्य भेन्त्रा १ वर्षा वर्षा वर्षा न्यान्याया १००१ व्याद्वार्या १९१७ व भेन्से १९९॥ ग्रह विग्रह य १९९१ तम् ११९० । विज्या १९ द्या अविष्ट किया १९२१ हर्ग हुए ये १९११ थर मह व थर ए छ। १९३१ सम्बन्भवन ॥९७१ हमन ९११३ ।। हमीमन ९११३० ॥ सक भवजीयन ३९॥ ५६ म ९॥३३॥ वर स्र स्था ३०॥ इ विक्र वि: १३५११-मञ्चा १३०११-मन्य १३०११मन्य ११३३१। मुठमन्॥३९॥मन्मे॥म्ग्यान्नाम्गाम्गा कि कुरा कि कुरा शहरा कि भुः शह भगम् नियन। हर गिरियन। हर गिरियन। हर गिरियन। निर्वेद्धवाम् ३१ मियाम् ११ भवाष्यापः ११ प्रमण्ड्नाप्या भवाद्यापः ॥

H.

99

हेगिरिप्नाथन शिक्ष दुराय १ । १५ मह १ । ४३। मन १ । ४७ । व्यु ११० १ हिंदर्भ १ २०११ सच्छु उन्हाप पूर्व । ९ १ भवस विष्ट्रका । । इक् विस्कृत्य । । मन्त्र विश्व । म्बन्तु ३९१०० १ अवास्ति ३१००१ भामिन ९१०३॥ उन्जार्णायम् ।।१२ द्वार्णायम् ।।१२ द्वार्णायम् मद्र ९११७११५म् ९११म् मियाग्नाम् वान् । भरूराग्ना चिन्मेनमः॥१३॥ चि मियाय॥१७॥ नेमेनमः॥३०१ किः १। ३० १। ईडिम् न्तर्भा विन्तः भवावन परण्य धारम विग्ययग्य यंग्नस्वग्यक उन् 9 सह 9 हव 9 हिंदहुद वर्गमय भद्रकर दूरमम् व व में चु उद्देशक हरना विश्व मिय मियवमें मिरोसे शि मियहरू ये हुण लेहे भुष्क मिया।

भिवन्त्रक्षमक् उरः भवन्त्रः भयगिरान् म सुवन्द्रभक र्सिय हमयहरू अधन्ति क्षेत्र के वस्पार श्रे द्रापान वर्षिति भनम्गीतमन् वर्षित्र भवत्र मान्य निय १५०० कर्मयङ्गा विभूमार्थ सुरुष्टि है जिस्सार्थ बर्डिस्मर्डिक्षेड्डिस्स्डिड्डिस्मर्डिड्डिस्स्डिड् ह्रवस्वतुत्र मिवण्य मिवगद्वाय मिवः भव स्त्रम्यात्रात्रा वि रमानः अवविद्वान्नित्व अवकुरानां वृद्धारियों उद्गानियारियुक्त सिवस्य सहयिति । किल्द्र सियाय 73 भुष्यान्ति हिस्यान्। पद्मनुयवमः मिन् विकान्य अकि निया

चित्रानिन्मः कए कवा। चित्रभ्रमें कए मुस्यकण। ए उद्यम्य दिन्दि भक्रिय यगिषि उन्नित्र र्मिरया ३ विवृद्ध नुद्धे द्वर । विद्वासक मान विद्वासक विद्यासक विद् हिंभोर्डिभाग्या व्यावत्त्व भवाः मचमवत् मन्त्रपृष्टः। विवर्षेत्र हिम् श्री हत्य मुद्भाव मिन हिम् विम् विष्टा हित्य विकारिक दिए मिला । में मेण के कण्यमः॥
उद्देश मुनुः॥ विकार प्रवित्त हा भारति महारावतः॥
कल्लारीवराः॥ कल्लारीक वाण्यवी। स्वतिक वाण्य विभावन भ्रमान यन्मः॥ सब्दु उत्तमन यन्म। भन्द्रन यन्मः॥

छित्रमेसव गुर्दे ह्रस्य छित्रमेसव एक दिए मिन्यू भव थन्यप्रामित्र मार्यामापन्तः नायः । युग्न मार्य इन्द्रक्षण के उद्गेद्ध महत्त्र भी विभव्त प्रथा अह रण्यायेनमः ॥ हव हवी नणे देव हमा से महिंद्द्व जिम्हः कामयम् जिह्नः । अहः काम या भूत्य ने निम श्रुक मिरः। धनगडिए स्टूक निष्टः। भेट्ट डिड्रक क्षा कि कि कि कि स्वार्थ कि कि कि कि कि कि कि कि उन्मः॥ उत्रमेनमनुष् छिङ्ग इतिन्त्र विक् ार्गिमन्द्रित्यम् वहर्गिभवेष्ट्र अर्य मिल्। इ भवमन्य मित्यः । इन्मन्त्रवलर्थः

क्रिमारिमिउउरम्से नर्ष्टें र स्थित्र वित्र वित्र मिल्य मुन्। प्रमाश्चरं हिन मद्भाग द्वार देन दिने : भन्ने कर्ण किन वर्म : ४ नुक मर्ण्या निलने जिस् विष्ठि । भरा गरा वृश्यन णिक्साएक हजा उक्सास्य नहा राष्ट्र भड्डनिर्मियार सीयप्रेमेवेविक्रमी। अन्तर्भा। किन्ति स्व व व य य य य य य य य य य य हर्महरू। ही मी किए। इस मिया। हर् करा। देन् नर्। इंस् नर्। धनर । हाने। अक्त द्वरूपे धीउव्सर् क्रिम्ल्येन लहा महिंदि निया राज्या हिंदी

माजने द्वत भवभवगा भत्न भवन्ति। यात्रीन भःइन्द्रशिक्तिम् निम्निक्तिम् भवक्षापूरे भवनाक्यारानि मिरंगाई मिति। भ्यक्ष मित्य । । इसने भन्ने मन् क्व । १३ भन्न । प् विमितिनि नेहे । १३ द्वीमः सुन्तर्गमः १। अन्तर्गाष्ट्रान्। जल थन अन्द्र विभूतक एउट थन् प्रयु यु क गर्ति ग्नांवर्षे न्यावनाते व मुनादर् देवाया रागद रिवेन राज्ये भागति विकास के मार्थे हम के से अपने का क्री स्ह द्रें नियमिष्ठ वर्षे भक्ष स्वयुक्त दुर्ग भन्त १६॥ द्रामदाना राजा । उर्थे का विक्रिक्ट निश

विज्ञाविभूवभ्वधारिभक्तात्वाराम् में मिकि ९४ का विक्री हर । विद्वा किर । भुरथा किया। अक्र कर । म्बभन्नित १ वर्गा श्री कर वर्गः ॥ अन्तर्ग श्रुव भूननिवनाव रेप्युप्यन्तु भन्ने भूननिव मिणिय दे भू नियम हाना व कलमें में उपले व्यापत्ते प्राप्त इति कम्बलक् कवग्री में भक्तूरी नवग्री कः किली ही है। अन्य । इन्ने कि बुक्क वृद्द निषद्

उद्ये मिर्ग्य वाष्ट्र क्षेत्रिक स्टिव भूनि गर् लिंगः किन्द्र नित्र कार्यान क्रिशमः क्रियः। रिकवश्यक्रियः निर्देश अन्ताष्ट्रना विमन्किए भड़िकाम मन्मिनि इन्तम दग्रा विस् ने विस् का का स्टार हरें। अने भी नित्यः। तिकवः। क्री नेवः। मिः मन्ः। प्रकाश्यने।

高。

30

े विस्काकिन्मरक्ति। क्रिंग मायकामा विये उराध्य रिकारनेका ही विद्या देशकाव गर्मा कृत न निवन्द्रहारिय का निवकताल ज्ञारा भूकारा दिन दे । भन्न दे । दे व न न न विद्द रिहर । क्रिका कि । क्रिया अक्षिक कर। ^ हिर्या नेव्। जिल्लपणा हत्हाराम् द्वाप्त द्वापत व्यास्तिक स्वनगत्मन कारिक निर्मा भिन्न वन्त्रकालक कारी भर्तक कारी है। धर स् विकाधना वागीम् वी जाना म्यामिनिव्सी धना कि इस निक विनयन विन्न विन्न विन्त निक्र निक् एएक के न्यापन अनुसन सम्बंधिक भिति संचन्तु कता रहे कर १० अतिहा । में निगा । में निगयः । में कर ।। मा ने शय मन् ।।

इतंत्वया इत्नधी व्याग्रं कर्ण कर्मा अन्त । कि विश्व है से वि कु धिरि यच्च कर भार पितु विकास अमहोता । इत्र कि कु धिरि यच्च कर भार पितु विकास अमहोता । इत्र कर्म विकास के स्थाप । विश्व विकास कर्म विकास कर । कि भिरिष्ठि मिन । यम् ठयभम् परिनु ने मियः ॥ यमिनहा मी कामी रामने विद्याण गरायिन कि विधिने धीम मनार्या विद्रास्त विषय । द्वित विषय । द्वित ।

गर्गमियवदग्रेने उर्णाउपसन्तर यद्यापत्र्यतिः यतिः जुल्याम् अन्ति वर्षायस्य वरम्यस्य वरम्यस्य वर्षायस्य वरम्यस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वर्षायस्य वरम्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्य वरमस्यस्यस्य वरमस्यस्यस्यस लेलाबल अवस्था दिन्द्रवान क हरायन निमं अन्ति। रिनेस अविति विरिने वि भविन हिम् ये हैं बरे निहे देश्न दिश्य भक्त कुल जनाधिकारे करावह मानुकाराना है उद्दा कि ई कि क्रकें हैं नमः। धामकि निवाणभाने विसेम् ध्रम्य भ्रममान भक्ना मान्त्र ग्रेस नाम सकान भरा थनकि एउपरिक्ति अक्तमपुर्भिति हिर्दिनुगर्छ १ क्स ९ वन्तु ९ नवन विवयम उठा कि कि अस स्वत्र न भन्न ९ वर्षि । विश्व ने नित्र १ विश्व ने नित्र १ विश्व ने वर्षि ।

निक्नित्रायां भक्षेत्रवदुर्यणि निवित्रमयग्रेनिरे हु भक्त भनुभनुः भूलाउरावयवुक्त सविभक्तकाकिकान्यनि क्रिक असे सम्भन्ति जन ११ वन्ति क्रिक् इक्टाइका १३ व्या १०३ । यता १९७ । अतरे। व्यवंशियम् किसिव हरं। विद्याला भण्तर विग्नी विद्या थभ्रवस्मानि माय । अकलप्रविज्ञानम् मलान कवना भरूपरे कि विवर्गिक ने विवर्गिक ने विश्व से माहान निया । हार्ष याना कुला कार्य में देश प्राथा एक मम् व्यामायक् मनुमयमम् याज्ये उभावकत्म भूद्रमेयथणमें धम्भू इन्मन्द्र भूकि वदमने भूद्र

A.

30

थथवरे । देश रिति हैं । दिन मिनिक हीरी कि। शहर किया। हैं से कवा हिं से न किए हिंदिन देश इस्ट्रम दिन्छित्र विवद र्भाष्ट्राहर्भाइ किंग्।इ किया है छियायत्र इसम्

एभल मुकेरिश्वनिम्म क्यान प्यान नियान हरावडि हिम्बर्य। ाष्ट्र गाउँ यो इस्ताम सर्व नियम स भिक्ति मिन्या मिन निष्या निर्मित्र विषय मिवुद्धान्तु भद्भा नियामः शदरवर कवः। विद्यारिति ववः। भरविद्वेष्ट सन्दः॥ क्षवणा विमंगी सः विष्ठ करावे हु का विष्ठ । कि दूर्ग मिन । मु मिन । मु मिन । मिन । मिन । मिन ।

पंत्रम करें मुज़िक् अनुविद्य मुक्त मन्त्र कर्मन्त्र प्रमा करें मुज़िक्त अनुविद्य में भारती नम्पित्रीक्ष्मा दिस्य दिस्य हर्मा विश्व के नियं के निय भे हरा। भी मिरा । भी किया। भी कवा। भी नेवा। भी नेवा। पुक्त । वित्र म्याने वर्षे राक्त मामन कला विष् भीवधन्त्रभवासेयी विवस्त मार्गित्य ॥ भना। एस् गा नीसः गाउँ रहिन्द्र ।। जातिरः।। जातिरः।। के कवः।। नि वर्गामः वर्गा भक्ता प्रवास्त्र भगकताम्भन हाथान वर्षा कर दिश्यमा विकियन में कुर्मन विनयन मिनियम् अने धन्य प्रति । वान्य वर्ग भूना विनयन मिनियम् अने धन्य प्रति । वान्य वर्ग भूना विनयन मिनियम् अने धन्य प्रति । वान्य वर्ग भूना विनयन स्थाप वर्ग प्रति । वान्य वर्ग प्रति । वर्ग प्रति ।

किंद्रीहर्मा क्रीमिर ।। के मिया । स्ति क्व । स्र ह कार है कि रें।। न्द्री है किया मन्। । अन्या प्राची या क्षान है भी भ नियु व भुड़िन्क भिक्त सम्बित व वीमन्त मेह विज्ञाप्य अनिमिठन दर्भी भारत करिय मुना कि इन् उन्न यह का १००३ मिन मार्सिन भी इ मिया। दि करें। की नेक दि निया । धनक । धनक । 9 ज्यान होने मानायेय ने ने क्यानाय मनुन क्नुम विनासन्बाति क्यान क्रानिस सिन्यानि। भूलाश्रा के ही ही जा करा पांडी भण्डा के वर्ष नह अल्गा॰ अहर हरे गद्गीमिंगाई मिया है कर है ने ने गी इ: नर्: । अन्ता हान्। मन्ति क्वरावन्

4.

जनकामनकमन्द्रमा एवरम्ब क्रिक्त ।दे व्या के निर्देश कि जान कर क्यानकर विवास निका करावर कार्य कार्य इ क्ष्मित्रविने भगिसम् न व न माम्म न व पन यगीर के शामना था कि ही कर के से से मही के का पांडे रू कवर्गाङ्ग नेवर्गाङ्ग निव् यनम्बाधका अक्र इन हुन दिस्माष्ट्रहरूमा जर्म

अरुक्तवन्द्र विश्वत धन्न अक्न भावक यह ब्रामी जमानन के मियह हमय क्रम क्रमाहर हणवडी भेडेड थ्या निर्मा अनिर्मा एक निर्माद ११० । डी हिंग मेडिं धगवदेशका १०१३। हारियु विश एक सिक् वस्ता । इसे वस्ता । वस्ति । वस्ति । वरमत्वराभी एकपना मा प्रकृत विन्तर है। ठयक नुस्त पित्र हा थम् कं विभिन्य । अना निरुपपाउँ जा वस्यान प्रमान किलिदिन १० । ३।। इन्डेम्हान।

4.

विद्वीद्वीस्त्र श्रीणञ्ची हद हराचि सहकामधूर सहना क श्रमायान द्वीनमा भुग्ता १००३। इसमे बुद्धानि १५ नता। व्यवश्यविद्यार्गिममानामा वर्गिवद्याम् राथ्यमा रन् कथला नित्र में रन्ति वित्र में वित्र व व्यामवर् मन्त्र भद्यद्वन महीमा भन्न । दे । कि मीली इरनेवर्ट का १० छ। विद्नी निक्ति हर ।। एव 全部。原用证明是每时是有到是有我们是可以 विष्ट्रित्ह विति स्किति । असे जार नयन श्यम् जान त्रापी वरसार्म थामा ही उक्त भूठरा व्यवास

दीदी के के निया गाँठ हर्क निक् हैं दी दी कर गाँक दे वर्ग । अस्त श्री दी हैं कर गाँक दे वर्ग । अस्त श्री दे वर्ग । अस्त । अस् काकमलाउन एक्यां क्रमती मान है अपमति भक्न रानिम हमायनीम निवृती सुन्ति विस् वितिम हरा नियक्त स्का सुक्र वह विषक कि कि निवासी वर रालमीन् अन्म मन्या भागा है। विहा क्रीकी कु कि क्रीकि का कर कि क्रीकि के क्रीका के अक्ष के निर्देश हर भाइ के मिला किया शक्तिल कालक दी दी कर गाइ द नह गाइ कि की सम्बाध 37 असर श्रुप्त श्री मान्न में कें एर मी भी भी माने मांपी भेज कें मी दर्भ है। वर्ष है। वर्ष है पर यही

पारुभं मिक्नी। भन्ने ॥ २॥ + हगवंडी है हर्कानी हरा। एक के भवाका का भीर भीर ही ही स्पार । एक इंड्रा भक्क का मिन। धूनीय मियः १ थूनीय क्या । इनि नहा क्षान्त्रः ॥ अन्याष्ट्रव्यातिकन्त्रात्वानान्यमान रम्भ दिने मन करनिक्य धिर्म कथना पष्ट्र दर ठरा स्टब्लिक का क्रम्नित । धना रा रिक्रमे इन्लार्मित्रस्त्र न हमयहमय क्रिय क्रिय क्रिय क्रिय इस श्री मिर श्री कल दे गिय मिया । भर्म चर्च मुझ प्रकार कवर्गा कुल्य नर्गा भूक भन्ता । अन्य । विक्रम धरा में दिन उपनियमं भी व्यापिद्वितं क्लान्य कुरितं

विंदीमी दे कुला कायहे मुन्ता १० ३१ विंदीहा मी मिरा दि मिए। कुला का कायहे ने हेंहैं।

्रवना कि व्यय्युन्यिति भक्षत्रा नी में कर्म मन्त्री भाष्ट्रिय ना भाष्ट्रिय ना मन्त्री भाष्ट्रीय ना मन्त्री भाष्ट्र मिश्रिक्नानि से मेर् भेयु ही भर्म क्मी पात्र के किन अ मित्रि भेरत से प्रमा भ्वमन निक्रमम् रूपने : पद्रता क्षरा भष्ट्रण वनगरान इन्हराई कियाई कियाई कर निर्देश अलाष्ट्रांचारि विनेशीनम्चिकिशिए कत्त्रानु नेहे भ्रम्याद्यमा श्रम्भव मुल क्रमलहरू वर् भ्रद्रम्यम दिसिन्म ॥ भनार्थ। विवयक विवय विवय विवय वकायगणर उन्दर्धन्य क्षान रण्या कता A सुनमः कर्ममम मंग्राणां जाक्रमक भगनिने नुष्का १००३॥ अन्त द्वे निस्त्रेन्य प्रमान युगमन मा अव मिड विस्त निन्त प्रमा विभाष्ट्रमिन्निम वेभिनिक्द्रसिनियमिन पुर्विक द्रणविस्त्रिलेक्द्र मुद्रामिक्त में गुम्भी विस्त्राण जिन्हिकार विस्त्राम क युक्। विमान महाक्ष्य सम्प्रिं। नामा का नामी धर्मे प्रमान के नाम क के लिं हमु उन् मूनी व्यवेद्विष्मन वृतिः कान्यमिन के सर्व की महिने सन्। कुरा कुर्वा के कार्यान स्वापने कार्यान कारिहरू विकथ्य भूमिमिन किमा धनमा ११ द्रा स्था लिसी थमुद्र करा के प्रति । एक मार्थ कि । धितापः । मुस्ति विद्य 中国工 इमेर्स्ट्रिया व्याप्त क्रिक्स न्य प्राथ दे विश्व । प्रमान । प्रमान । विश्व विष वत्व वत्वः सरवद्भन्त धानुक हि शाद्या १ वता । भना १ मार्ग शक्ता विस्कारिका क्या क्या क्रिके ।। देव करें ।। देव कर में के ।। विस्कार के ।। विस्का मक्षिरा । मन्देर । स्वीत क्षेत्र केर गिर्दे में मुम्ब्यम् का यून्य क्षिक्तिमाने डिमाने डिमाने हिमाने हि

एक्क्रम्य । । एक्रीन् डीम र दाय । श्रिमुद् ३ कन्पीन या ॥ ३ क न्ह्राष्ट्र या ॥ ३ क न्न्या साय ॥ ३ न्य ।। एड्र म् क्रा क्रिक्य ।। लिए हाना क्र मन्त्रक्य । १ एड मिन जाई नियार के ये ।। एक जिस ज नीमीकालयः॥विनायमा करानिनः॥विन्यु क्षीरक्ष मयः। विद्यास्य की नुभारा । विद्राद कुनग्याणि का मान कर्य हुग्य ।। रिक्री र्मित्र गर्मा सम्बन्धित । विश्वास्ति । वक्र कुपछरव समार्था अन्त सब्दे व्यापित गर्व भटामादा । वननेपद्गमा यपित्र ता ।। अन्ता

उर्णेयक्ता उउन्हा । एउठ् राक्ष भी निक्षणः थिकी दिन् शास्त्र वर्गन्य भ्रमी निष्य ने यामा किंद्र क्रम्किल विविष्ठिकताया थ बीउइ क्रिया करें म्दीमिन्य में प्रापिति क्षा भी विद्वार में केले: नियोतिक लाया थ दीव के जी में कि वे निववन के में वयामिस्यान्ता ३॥ विद्वाल सम्कालीः नियंदिकतायां था विद्वाल सम्बाल । अस्ति वय नियंदिकतायां भारति । अस्ति वय नियंदिकतायां भारति । गण्यं जारी थाय नवक गाउँ।। स्तिय उन्वक गाउँ द गाउना ११३१। मुनाका मन ३१। धुनामन ११३॥ उनामनून ३१। महागीन्द्र । भाकान्य उन । भाक्षीय नन । भाक वीत्रवः १३१

नन गड़ि। क्रिय नन गड़ि। या उन्यनन गड़ि। नितन गड़ि। मह्मन्।।।। ही भूम्।।। ने कक क कम्नन्।।।।। हिंद्र मुक्किल नियं हिंद्र नियं है कि नियं के नियं है कि नियं भारतिकित्व में ज्यापिस्य क्षिण १००३ शक्षी ०० । विद्रुक न्मकालाः निय विकलाया थ वीउडे के माना ने थित मब्राटन्वम्यात्वस्य प्राप्त वर्षेत्र । इंड हुद्धा न्वम् नयुप्राहिन्द्रकृति सिवास्त्या भूषेत्वः भ्वतृत्याः धरमन्त्रयम् श्रम्बन्द्रम् उत्राहिभाषम् यदेष्ट्रभ उस्पार्मित व स्यानामा जिल्ला । अवस्य सन् ज्यभन्महरू।

石

543 क्रिनाम् हम्मन्द्र ला उपहुंच । विक्रं के क्रिकें अविक्रायन मिद्रमिविक्र म् । सह म्यम् मे विक्रुत जह जी। भू न्यवा । स् भी हिन मः ॥ डि गुर् हिन इन डिस्यान्टर्टेन् न्या है के में मित्र में अर्ज्य ।। रियान विष्य मार्थिय विष्य ।। विष्य विष्य ।। उपने डे गाय यु । । या विश्व । या विश्व । या विश्व । । या विश्व । या वि रिक्न अम मुनु । इन् इः । मूर्य । । भन्य । । दिनु ।। स्वक्षा अर्गा स्वानिसः।। इन्। स्वान्या स्वर्मे स्वर्मे

भूलीयेमु ग्रम्मा ध्रम कु मन्द्र मियधर विम् निष्ठि लिन्द्र न भन्मा अन्यमय में हा भूया न भन्म भी विभागः येवहाउँ भाषक अने जार्या है विश्व : इंग्रेसे इसमानुयायग्रहान्याप्त हेरवीकरणावन नमा वहमाना प्रमाय कार अभवा वारिक विवृ भाडेकाराडि नीडाडाविडार्जन देता है। उनार्ष्यार हेन्स् मार्ग मार्गित के विका उपरग्वं गानिक द्रमान भक्त न निया भक्त वामन

F

क्रीताल वासरवंद्व ल निम्ह संबर्ध वास्ताल क्रूरेय भविष्टितिरगेव भणा वेशम्बम्बनी विद्रिति के लाः प्रमाणक द्रा विद्र मयम वावन मक या विद्र भन्न व इयनमः । इडः महाज्ञानना मना ए वर्षित् स्माउन विवन्त्र न्यान स्टूम के बीह्ण कि न न न गान परिग्र विकिथवान मीच् यायद्वभाविकाम भूमा व्वविष्याया रून कनपूर्व महारू वे इर्गवन्यविति भिक्र रूकान भरभ्यगः॥इडिस्मिन्ग्वृध् भन्य उद्गार्मः॥इडिभू अतिभूत्वारिक्ता ने उन्तर शहक तुम्ता निर्मित स्टार्म इन्तराव ।

केंद्रभारात्रः।। केंद्र वह विष्टात्रः।। केंद्र वह वह विष्टात्रः।। केंद्र भन निवंत । उतिभारा नियम मिया व वहार परे करा नियं । से स्वापार करा नियं परे से स्वापार करा नियं परे स्वापार करा नियं परे स्वापार करा नियं परे स्वापार करा नियं परे से स्वापार करा नियं परे स्वापार करा नियं परे स्वापार करा नियं पर स्वापार करा नियं पर स्वापार करा नियं उट्ट ललाए वृह् भवमेन्न महत्त्रां इहतार्नि ॥ भवारत भारति वह वह वह विश्व विविद्यालि ।।। धरमावन ह इक्स ने जात है उन्म अद्भारत ।। उन्न निर्दे उड्डायनमः १३५१। छिड्ड मिव उड्डायनमः ११३२ १। उ विभिन माज्ञ वृत्व भर्षा भय्य वित्त विम्नी वर्गन केजनीट उउट से जुने उद्गानि में किया निर्मा के अर्थ कर रेन्स शिवें अर्थ कर रेन्स शिवें अर्थ प्रमा

क भारित्रेन मः विष्ये । के भारती । भारती है भारती ।। भारती में भारती गाउँ भारती है।।र नेद्राध भत्री गा द्रभारा शिवभावता । उस्व । मारा गामारी । ते भावता । ग्रह्माय भाग गाम्याम रिभामिहे गाकरे गाम भाग गा भन्म। डे भनिन्दे । यामनुन्। व भारा । एके। या भनिन्दे। कुलरम् । य भारा । इति । म भारती ।। यामसूत्र ।। भभागु गहित ॥ भगनि है गानि इस । कि भाग गारिए करें। क्रभान्त । मिन्द्रिया है व भारते । । धर्मिय भन्ति ।। में भारी शामित्रधान । स्वामित्र । स्वीमार्ग ।

मं भारतिहै। मिल्या विभाग्रा ग्रम्ह नी वृशन्त भारतिहै।। नर्गे : शर्म भारता वाम मान्या में भगमा में भारता में भार व भारा शायिम के शक भारत है। गार्य व जा है भारत । व्यमसूर्वे । ये भन्तिहै । विस्मेर । निर्मा । वाद्धी ट भगिता है । विकरिशास्त्र भागा । महा धार इनी भा न भगतिने । वारा दुरेग । द भारा । । स्मा धरे । रूप भगता ।। म्बाइरेगा० भर्ये। मिर्हा है। मिर्हा वेशा ए भारतानित्रम्। वर भारती । वियन्तर्शाह भारता व्याग्यानिवायम्॥० भण्नित्रं श्वामक्ष्युक्तीव्श क्रभारा शिक्तिक मेरिल है। यक कर् नीवारंभीभागे गायाके गरमाने शेष्ट्रा

क्र भावाशियप्रमेरे क्रिश्य भर्गताहै गामम्युन गर्म भावाशि वास्तुन्। इभानिहें। निन्धित्रं। रिभाने। मिकार्ड तिन्यम् ॥य मन्निष्टे ।। भारतमस्त्रे॥ भारता अति ।। म् भर्गत्तर्गाय अत्राप्त । श्राप्त विश्वास्त्र । श्राप्ति के नेत्र ।। वाजीयम्ब्री गयमण्डा शास्त्र स्थार भ निल्हे शिष्ठ वियम्ब्री क भागे।।यह देशा मार्थिन ।। रहमये भागे। मार्थिन ।। रिक्रिंगांग भानिते ।। रिविष्य नि। सम्या ।। मिराप्या ।। यि भारिते । स्मिरिशाक्त भारति । यानर छया। विभाग्रे ।। जेव्या । सम्स् क्षरा । नियम् अभिने के भारती । विस्तर ने । वि भार गार्थित है। व मन्त्रित । समार कें। हिमार गारिश

लिया । अस्ति सह वैभाम भनीन है। १ प्रमित्र वज्ञा अभा ।। वर्भक्ता व भानिते शावामक का भवारा भव भावा । मक कन्छ। हिभानिहें।। समक्कभूत्रां। वं भारा।। वासन्वे। हि भानिहै। विकास या । दे भारी। महानव । ए भानिह।। रिय्याग्रहभार्य गायक गाउँ भगनि है गार्मी व भग्रि गायक मणनि है। सम्बन्धि गायक मणनि है। उपनाशाउउ के निनी हुए जार जार जी कि मी की दें या वक्षेत्र के स्टिम्स मिल्ली के के निविध्य के विद्या के विद्य के विद्या के विद्या के विद्या के विद्या के विद्या के विद्या के

A.

न्युना छेर् क्रिडेक क्षेत्रपत्रभी स्ट्रीन न न न न न न न स्थ विश्वक्षित डिविद्य क्षेत्र निष् a miles यस्। - ज र ज का हु। इति महुक सः॥ जेन प्रस्क र द्वार स्वयम् ॥ द्वा डराइड ने

मद्भारते भराउभ गर्डे अस्तिरहारी 公立多数性自然外 विद्रीसी मं द्रार्थ मन् मन्यारिक्षाका १० १ के मन्द्रम् इन्ययमिश्राक्षा० । ३॥ इस्मिन् म् क्रिमेर् उसम्य । ॥० ।३ ने वेद्र हम्मर्गाण्डा ने व्याप्त ग्राहिणाण्डा र्थिते वृद्धिमयः॥०।३।विद्वीतियमम्भूतियम्बद्ध उभर् गिर्गारिही में भक्ता में भन्य प्रयोग महण्यां १० । ३।। लिनवा कर्यानाः भनः भाई कर्रात्वः न स्कर् मक्मीनिक्षानमाईकन्न्यमा विकेष्टा निक् कर सन्ति ने काल । १००० । अन्ति में भी रिक भारतिक द्रभः भर्माप्यित्वत्वः स्ट्रकः निभित्र इग्रक्ट्यु भूला । विवेद्य यद्या निकार प्रवित महम । रुपान ।। सुनिवान गुनुवान ज्ञान ।।

कुय

लि धिरीडकुणियं इद्भान मुगद्ध ९ भावपद् ९ भावपद् ९ भाव नहे विषे हे ने ब्रह्म में भी धिवी उद्गारिय उद्गान था है गोन ल नमः॥ मुख्याद्वाता॥ मुन्नानीयगद्वा अमान्निव भागा श्रम्मित भर्षा भी द्वार्थित । विष ग्राया द्रम्यत्। द्र द्रीयंग्राया क्रिक्ट्या भ्रतिय सन्मित्रवयन्भः॥ इति भग्ना भेले यी विवी उद्योगिया य इत्लक्ष्या० । व प्रका एड न नाक प्रा धरुष्ट्रथिवराउद्वर्ष्ट्रस्त्र । ले स्ट्रां भर्ते स्ट्राः भान्ताः भन्ते चरामुन्ता छितः ब्रह्म जिल्लीमवाक्ष्या भविवतः भक्षेत्रे यातुः धममनामयमा। एष्ट्र समाजीकियीननाः 4

भविण्ड अभविनद्वेठव १। म्हर्भ डीक्रेगीसन्भः ॥ म्ह भुवणि धेउ दिसे । व पहराकार्य ना ।। मारे ग्रेक प्रकारिकार्य द्याद्या में भारत कर्म द्या मान्य में भी कर्म कर्म क्याहरावन असे प्रायमित हर्वन भेशा किस् भुडिमेर यानिस्का १० । विस्तु स्विधि से विस्ति सक्ति १० ७३॥ पत्ला विद्वासाम् । अस्ति । लिन्यः भवनभूगः भयन्तः भन्ते विष्यु क्रिया है: विहे ठरा ने ने नियम या भीति हैं। भक्रेष्ट्रे यातः धरमनाग्यमा विज्ञान्त विधेतन्त्र **९**म्बमः॥

A. D.

विक्रणवनी व्यक्त वर्गिय व महा भारत विकास निया । भारत वर्गिय विकास निया । भारत वर्गिय वर्गिय । भारत व क्रमण्ड अस्या मिर्मा क्रिया निर्मा क्रिया निर्मा विषय मिथणहाल द्वा भाग हायव भव धरार भिक्ति हर्वन । विहरम् इ मिण्यानि का १० ३ १ वि उर्ण्यु वर्णिपड्य नृत्य वर्षा १० । ३॥ अस्तर्गा पद्भ वन्त्र भक्षा भवत्र वर्ष उत्तर विक्रा स्वा भव भक्तिः भागतः भन्न वासेएक ग्ला १० व महत्या वर्त्ने मनक कर्म के मिद्रास्त या भूउठ्हें भ्या द्र यानुः धमन्यमा ॥ विरायुक्ता । भित्रिष्ठभविण्डु अभिनिष्ठ ७५९ म्नूभेडिकेनीमनमः॥

कियारवर्णिये वहार । भारता कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या अक्ता न्यानीयग्रिकलाभुगाभागनावन निग्द्रश ममा प्रया कि ग्रांटक विषय । प्रथम दिन्ति। रीयेग्यन्त विष्ट्र । हगवद्गादियंत्र अ किं हपन्तः। विवाया में व्यापित का । । । । । । । विवाय व वा विधाय व नुग्राधिका । । । अस्त । । । अस्त । । अस्त व्ययग्रहिद्धारित । विस्य श्वेमेनु नाः भथन्तः भनुवेष्यम् १ छ है : इत्वर्डरायम् नुक्क् भीका निवा र्राया भिव्दाः भक्षेष्ट यातः धरमन्मयम् ॥ विन्त अनिनेस् व्य १ मार्गीक रिमन् । । मुक्य मन् वर्णिय न

4

म् भन्तु वृद्धः भुष्या श्रे स्टिष्टः समनेकपालेष्टः ॥ सनवुष्टिष्टः समृष्टः व्यवस्थानवार्षः॥ भनेवर्षः सम्मा न

भम्मित्। थाहरा द्वाना न्या ग्री द्वा श न्यमनीयंग्रह्म न्या भागतिवन गण्ड । न्या नेत्री भिष्मित्या स्वत्या ।। वर्षा निष्मित्र थगाद्रण रिष्टा १ हरावस्ति थमात्र भ कि उहरत्में।। नुकमानु मेणयामिश्वाला १ का १० देवा मान्यापि उर्यभरगमियारहण्या १०१३ (विम्ते : भत्मे द्रार भ्यत्रः भन्न वायद्भा भन्नामवन्यान् माकानः मिया भारति देव हो । भक्षेत्र वा भारती । कि-छेरे वर्ति । कि से से से से से हिंदी । कि कि कि ति कि कि ति । उपम्मानः तियः । भवना क्रियः । विधिवि व अन्या चित्रं मंस्यक्य थः भरी इप्रस्क माउर् वह से साला।

लिंद्रावित्युं ।। व्याप्ति ।। क्षण्याः ।। वस्त्र ।। वस्त्र ।। वस्त्र ।। वस्त्र ।। भारत ।। मर्डे ।। केत्र निक्ति ।। कित्र थ्या अन्ति।। हे हे ।। इति।। हे जा ।। विकार ।। वि न्यक्षरा ।। इवाउंड ।। इन्यंड ।। नियंडिंड ।। क्लाइ ।। वर्गाइ ।। विष्टु ।। क्लानु ।। भारानु ।। इस् वर् ।। अस्यमिवर ।।। मार्गेत । सियन में में प्राप्ति सुर्देश एक भेट्रे पर वृत्ते ये। कियं वनमत्त्ववा कि उन्हें भारवन गरिए य उद्गर्थ वन निर्मात म्बर्कायम् का विम्निमी भेनमहेम द्या अभवकुन भट्टे । अवन्य भिष्टे ।। अवन्य विक्र वर्षे ।। अकन्य विक्र दें।। ३क छ ।। ३ इन्द्रेश १ इन्द्रियो ।। विद्रीमी वाम ग्रीस प्राणा ।।। रेडेम्पिनी भार्यक केपिननी दीमः॥ भूरक समय दिय पक्षान्य निम्

A.

विमान क्रिया का भारती के भारती करी। र भगनिहेश्र भभावाशाक्रभानिश्र भगवाशिभगनिश्र नि । सभाष्या में भगति। विभाषा । नि भनि । कि भारता । विभाषि । विभागानित्त । विभागानित्त । विभागानित्त । विभागानित्त । हमार्डित का विमान मार्थित हो हिस है। हिस ह ति ।। धभाषा ।। वः भावा ।। व भावा ।। व भावा ।। मुभगनिक । मारा काल भगनिक ।। हमरा वी केमनिक ।। धंभनित्। निम्द्रीशिष्ट भनित्। किम्युः। विभनित्। भग्ना ।। रे भगनि ।। ० भग्ना ।। ते भगनि ।। ट भग्ने ।। उप भगनि ।।। क्तिभागी।। क्रमानिश्व क्रिमानी।।क्रिमानी।।रिष्मानी।। ह भारति ।। कि भारति ।। ये भारति ।। से भारति ।। ह भारति ।। द भारति ।। द भारति ।। से भारति ।। है भारति ।। है भारति ।।

लिमा ।। रे मनिला के भारतिशिष्टिम के ।। मि भारति।। शे भगिता। में भग्ने भारते भगिता। विष् भगिता। किमार्गा ।। क्षिम् हा ।। क्षिम् वा ।। क्षिमार्गा ।। उभानि।। हिम्द्री।। म्यूमणी। हिम्द्री।। देमलि।। ਰਿਮਤ।। ਹ ਮਾਜਿ।। ਹ ਮਾਤ।। ਕ ਮਾਜਿ।। ਹ ਮਾਤ।। ਤ ਮਾਜਿ। उभाग्यागाइण भारता । व भारता गाउ भारता । विभारता । उदिभाग्न काभानितृद्धिभः॥ उत्तर्कानित्ते कि जिर्व भीकरहें अन् मी क्रिया ।। यह भाम ने के ए हिंद दें।। च दी बी के कि में कि के कि कि कि कि कि कि कि 4061

हिंदी की के उन्हीं कर कर उन उन प्रमुख्य प्रमुख्य कलानुन्य भुन्निति द्वीदीक्वीदे के कि विच द्वाप्ता प्रतिन्त्री के इसि जुन्ने विस्तृत्व दे प्रतिन्त्री के विश्व कर्मा कर्मा कर कर के कि रिक्री सी किंद के सिविक र ते मन कर पून उउ प्यह ने मानुग्नुन रायुग्न मिणिन द्वीमी मी कि के नित्र प्रा 3379 निद्रीमीकी है रेविभिन्न मुनक्ट केन मानुवी का नि मुक्त म उद्भारित हो में क्ली के कि नित्र Engly न मिर्ग में भारक ले हाराज्य मंद्री के उन्न प्रकार के विष्ट हैं। इन्द्रिया गणाउँका

जित्रकालीः भवपरिष्वभव्यवित्रच्याः । अवितिव्याः उठा अधिक सेवस हुन्। चितु त्र पूर्व भाव मिन् भूभक्त धर्मधर विरुपेत यरण्याभिम्भ न्यू ही यउ मिव।। डिरीकी वर्षेत्र भेव निक्त भन्म अनुग्व विव्यु अन्तर इति भम्द वाउठेवयी करणा निष्णुंचन भनाइ भूगानि जारिक वा मकन भवाय रहे। उत्रामिक मिन क्य भद्र नुहु धरमासिव निराम्न धर्म श्रीर श्रीमिव धट्टना उत्र मिड्र वास्तु धरा। मण्यहेन में लें बुद्धने भः अश्वनिक्षान्यम् अशन्यम् वन् शक्षेत्रः शमानुकारिगी । महत्राया । वसान नागन्यु मान्या

考。

मुद्रुवस्था विद्रुवस्था मिववस्थान

मध्यत्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र । वित्र व मुद्रमें । भराने कर् ॥ शिकाधाह्र र । किएवर द्वारोसव उपने ॥ न्त्रुवे । पिछः सिवराष्ट्र । महिष्किरिविति के सिवराष्ट्र पुरू वसक्षिष्ट्री एवसके मिन के बुग वर्ग । इति मुख्य असी भूवः निविज्ञ न्यानि महा क्रिकारिया । यहा । रेमानयहाका रियं मन्य भी विश्ववंशी वेनुक्य शह्न द्वारा शहन या या या गरा श न्त्रपथन्य । अभागा। मन्द्रेश विष्टेश पुनन्येश पण्यलम मेग्रेस्यगेन्द्रभीराप्यण्यगिनित्राष्ट्रयगोभी भूमामियायमुक्त ।।३११ उडः भूक्त प्रदृष्ट् क मुक्त मिन्न प्रपड़ी।।

लिंदिल अक्म के मत्न मर्ग मर्गिन विश्वानि सुन्दा। 0:31 किल विम्रत्भक्षेत्र महाम्यापिम इन्द्रा १० । वा किल नद्र या तक भद्र वर्षे प्रदार्गिश्व का १००३॥ विक द्रह नयाहरणाका द्वानियाहर है इंडिक्स विकार भर्तियार क्रम् अन्ययाभिच्या ११० ३१ डिवि करान्द्रशिक्ष के ब्रुवी मुनेक भर्षक मेंग ग्रान्य । व्यापित क्र ने स्मिक्ट भर्षे कर्म ग्रान्य । व्यापित क्र ने स्मिक्ट भर्षे कर्म ग्रान्य । व्यापित क्र भर्षे कर्म ग्रहान के कार मार्थ के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्

石。

छ कर्म शुक्तकम् । चिष्ठ व्यक्तक्त्रम् नः भरो धाने मन्द्रम् क्रिक्ट ने कि के कि कि निष्य के कि कि कि कि कि कि मन्यामि क्रिक्टा भुज्य कटा ॥ ००३॥ उउ - इत्र अन्तर्म वाक्षान्। ए मनकात्वः भ्यात् । नेप्रामिकद्वर् भक्षा ।।।।। अन्यादिक समकार्वः १ अपयदि स्वित्स्याध ए मुन्द्र । मानका जिन्द्र मुन्द्र भूति प्रमान भूति । न् तिल्यानाम् प्रचन निम्ह मयन याभवानाभू एव हुम्य भविष्ट्र।भगुनु में उद्यान ला किरा मुना हु उर्यात लान निन्दु भुरोभन भुरुष्य चेषिष्ट सिनु भुण्य भन्यन क उला रेजन इमेला के नाम मुख्य धार्मित रोर रामि विषयाश्चारी। छ उन्ने योरा मनिक ज्ञहा । उउ वक्ष

भागमनुद्रिय हिल्या विविधन्त महा वा विविधन्त नन हा में में विद्धापया । कि व्यक्ति भन के विद्धाप भन्नमन ही नन हा में : पाउ : में क्रिक्सिय भन्ने भेन के विद्धार भन्नमा हुई। सिव में में में में क्रिक्स प्रमाण भूगित है के समार्थी उद्देश वासनाभी मार्वीर यवानाम नव्यः भद्रव मयम् भयनानन्यन्य मार्मार्क्ष विरुष या ॥ । । हैं महरी थेंग्रा थाने थाने विकास में विकास में महरें महरें विकास में महरें म द्रेमविष्टाराः भवनक माउव्यम धार्मे द्रुतः भट पण्ये नेति विश्व हुन । क्तरने पण्डिय कुन भीष भिन्ना नवाक कार्यविष्य गिर्दिन्त्रमानि की या ? ॥

यह उस्रामित कर्मा क्रिये मिवः ॥ उत्रामहार्मेन क्रिक्टियमीतियः भनुवार द्वानिक्ष भण्यः अर्वणवित्र वृत्र मुभावणव व विक्वार थे विश्व महिल् वर्गिवहां। चित्रमः कृतियमं न्तवः दूर्म व्यविष्टा भावः भक्तकाल भक्ष द्वारा घडा वाष्ट्रा वाष्ट्र इंडे या गलाया भारता भरागा विस्तिन्ताः कुः याः भवः लभः द्रथात्र गुलु राजु राजु राजु राजु विधायुर् विकाल कित्तक न्त्राट नक्कार्या होते शह कि विश्वार उज्याद द्वारमानु शहा सम्भाद कालगारिक भारत

में में में में मन्तिक निः मब् नग्रपृति प्रहमन्व धरक मिन्द्र निम्न निम्न कि मा भारति । वार्षि भारति । वार्षि । वार् न जा अक्रम् गर्ना गर्ना वास्त्र मिस्स्त्र के पि विम्न हुउ। दं भी गजीना विज्ञानियं नियं । उत्तार मिन्सियं के कि ०.३ भे कण हेरवारी विभाष्ट्रिम कण । कण यह विभाष्ट्रिम गैलए पहल्द्र अनेहनयानि॥ उन मुळ्या प्रवित् † अंब्रह्म अंडिअडिवगगनाम बुडिन विश्वनिक धाउन्तिक निव भिन्नि धार्यन्येः यर्वतिक के किर्योणियाम कार्यमा प्रामीपारिक प्रेरोण कर् सम्बः विष्कारिणिन धेर्दुहेर्बन् वहुरं ।। इतिस्काम भाउदिवन भेः॥

विधि स्ववय सामायाये हुन समाववा मिड्नि स्विवेक प्र द उरेव मिवर्णि नीइर विपरीउर जारि: धरिनमुद्र । कर हेन्यार्थियतिस्तिनित्रीथदृश्नित्रीथिविष्ट्रानित्री कुर्यात्न धार्मिण्यन निह् । इन्स्तिन्द्र भेप्रहा। किन्द्रभवेतवायवाया भूणभावा १०१३। किन्ता वद्गामा नुभिताय'। हेन्याय कवा। वाया ने ब्रिंग ने प्राप्त महा। किल्लामा के के मार्थ के मार्य के मार्थ के मार्थ के मार्थ के मार्य इ मियाः। द्विकवः। हिं नेवः। द्विः स्वतुः। ठेववर्गि सर्वानव अद्युद्धिन्ववण्यवण्येत्र ॥ विष्युप्ति हार्तिला धन्त्रेव मिना भनुक मर् भनु है। उपनि वनु गहा है। उनु उपक्ष पर्या ॥ भन्नः॥ गण्ड हु मन्य द्वार । गणि हिया मन्य

 马人

कि क्रमम निर्देशका । अन्ता । अन्ता क्रियम ने विय्रयेग्। भगकु अलग्रेट्र ग्राउउन् भूमे प्रार्थ मण्यावगुनः जुग्नायाः भूते भट्ट हार विन्ते वार्षिति।।। उस्मातिला कला कलानेव यथगरे । गाताला भनु अस्तरं सेवीसंत्रं अन्द्रिति। पिछत्तरमण्डः सिर्वेगव् म ।। मिवयरवी सम्बु ॥ हे विम बु न विम्या।। अक्रावा केर विभाग । गा नमक कार के विक अन् अनु । ग्रही थानुपान्य यहण्या मिस्न ने ग्रहण । ने भारत यकम् । सुपुणनिय अरण्या ।। सुक् किकी समसुद्भाग मुंड्रमित्रमेक प्रमान सम्पन् राधिता विकास मार्थित दिः स्तिविष्यान्य विक्रियम्। उपमण्डक्षिक्षः

R.

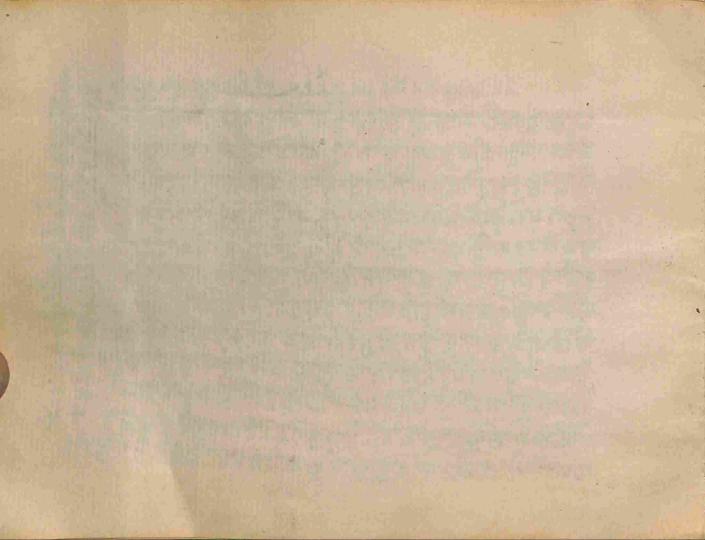
0.2

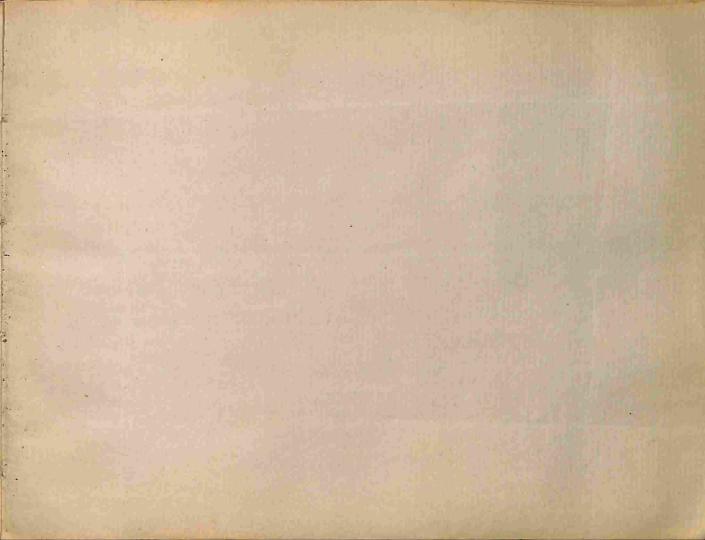
पस्तिमक रहामाना रहा है मिवरद्व भुग्रम मा अवता सवरु में दे भगें ने मार्ग भक्ते नाम दे जी भी किया है। निम्म से स्वापनिका श्रम्य के पान कि कि है के असून ९ भारेकारहेकारहारहारह ना इसारहकार वार्वन इसारह मिथाया निया है रहा है निया नियान है। अविभाग्न विः शिक्त्रम्मानकिलामामार्थेवा। उत्पार्थ। कि माउने अकामगुन किन किनी के किने भारता म्यिन् र द्वं शहित विण्या अवविष्ठ पर थक्तिभयह्या रायदेवमः॥३॥उन्नमय्।भवित्रः३॥

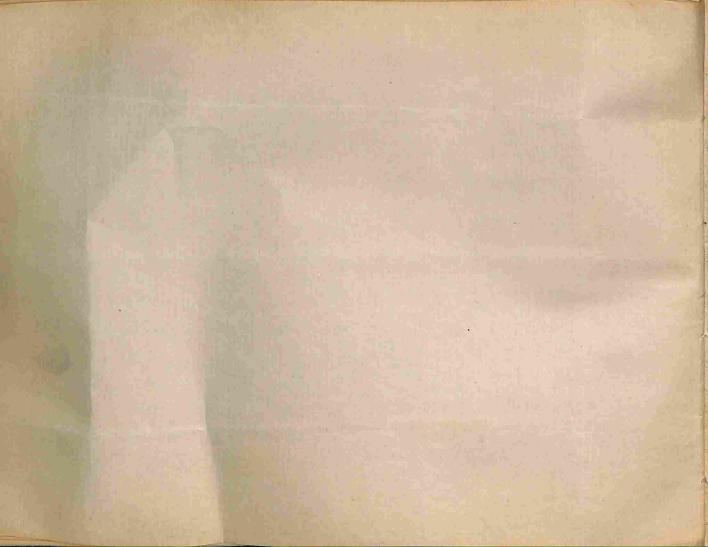
यमनुक्ये । अहरावरा । जानपुर हमानस् । स्पियुर भुनद्रम् ।वेरा उपुरम् विष्तः ॥ थिविष्ठ स्तु द्रालाः॥ वर्षु यु ० भेमुन्ध्। असून् यमपू स्थाप्तः भम् मन्ताः विणदः अवनयाः धनेपराहरू । अत्र मृत्राः राष्ट्रकत् भाना िगाइन्। मिउवाने मिवाने । मिन्ने महा देवने ॥ भाराम वीमितित्रभूवज्ञ अकेरवस्था भक्त नाक्षी सित्र स्थान केशा वाराकी सं उन्रवे । विव्यवीय है पर्यं के । किम्मेरीय क्रिक्र हैं। अन्देसुरी अ क्रिकेश मुद्भी सिन्दु मिन के के वर्ष्य । सु भर्करेक्ष्णला ही मेरवर मह्त्रकार करवी वर् कर्छाष्ट्र कन्नग्भर ज्ञेन्य वर्गादनकर विभग्दकर्

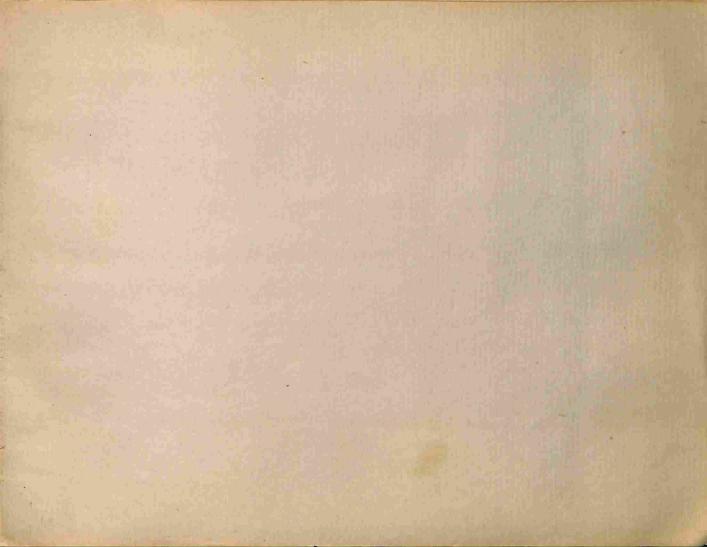
49.

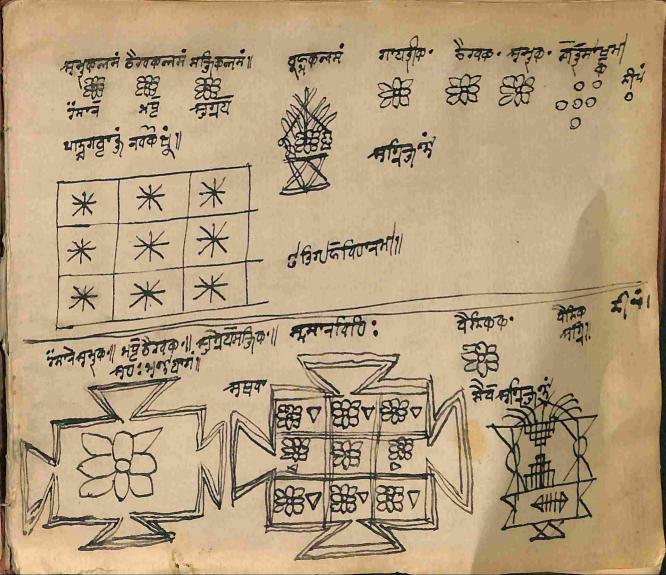
REPOOR 128 THE REEN DEEPOPER वामन् निर्मित्रम् जयन् काननः एकथण्यन ही महायन हुण्यान दण्यान रामान राष्ट्र ॥ सुर्नेव ।। धिउचा भार : मियगहरू।। उर् क उत्रः भरेत के तिवधमवी भ्रमुं महिष्ठ के विभित्र। अनु है वर मिन्निक्त्म अरण्य भुद्ध यागा अरण्य भाया रण्या अरान तिवारान् अरान्भाक्षित् भारतान तिवारा म्भारत् भूग्वतिशिरणकुड्या भारत्या । विक्यानिक मुद्राप्त रंखा भी हव एवं भर्गातव भी हव मिपस्मि ह्या भिरे हे वर्गे उपन्य य जिला स्व नमः ॥ जमकरे।॥ व्यक्ति विकार्ति स्वास्त्र में महाने स्वास्त्र में स्वास में स्वास्त्र में स्वास्त्र में स्वास्त्र में स्वास्त्र में स्वास

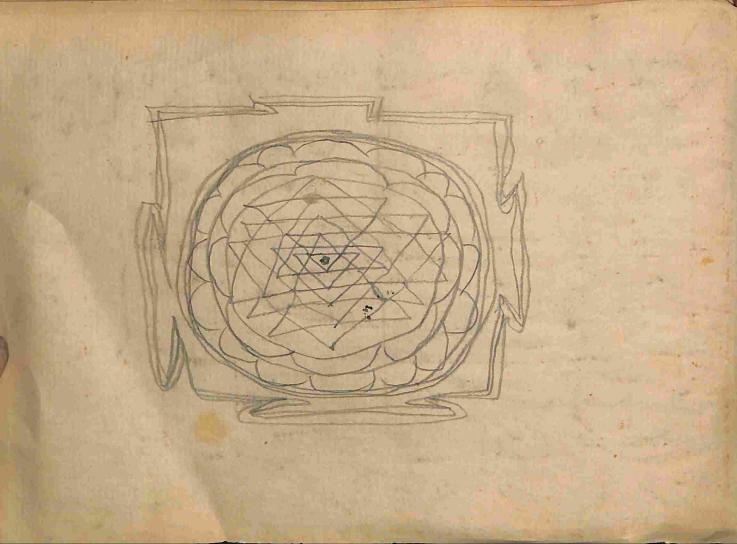








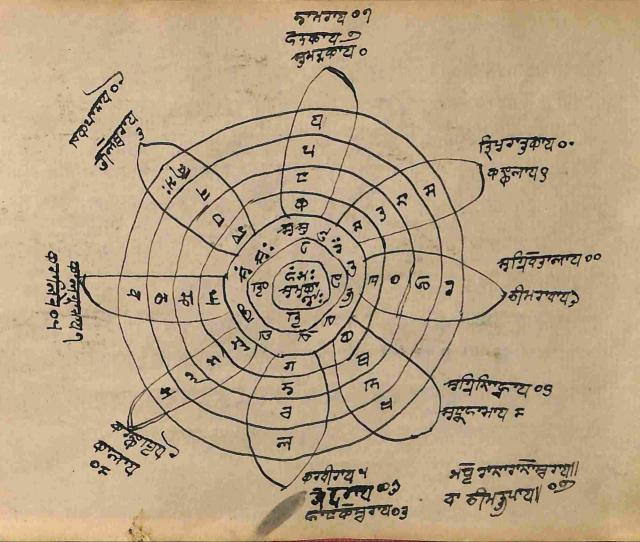




1 4	3	1 5	13	•	5	78	L .	7 5	1 3
	1 3 3 3 3 S	जम्म १	मिन १भ	उद्घुरुधव	ज्ञेषणी॰भं अउच्य	े निरंगित	क्षेत्री रुप	क्ष्म हैन हैं। इस्पूर्व	मंद्रिल्डम
	चे भेनभ उ•		भ्रम्	उँ सन्त्र <u>भ</u> ु	मञ्जूरुख	ञ्चन्द्रिया च ०३	भचितुमा थारा क	वज्य ०७	उप भ जिन्हीनभः ९९
	ব ভিমিক 19	73	79	म् भिन्य २०	म् शब्द्धं २५	विनामः मिर् २म य	निय नेप्य	गर्	गुरुषेगुरु
	**************************************	क मुनन्निउऽ	व संभु उ	व श्राय	डेम्हाप ने ९	हमजुया य ३	चुडु प	पुर ज ज्ञारजन अक्र	ब अभुन/९
	य (पद्भ9	१ क्रिक्स म्युग्रे	्२१ जन्भेश	चन्धिरुख उ	B S	भ चंद्राध न म	3	परभेष्ठस्य	र्मीपना १
	्ब ५३ ह्म ३ २०	ল ডুকুও তত		्य स्वन्ध्य र	भन् नेप्य	स्त्र भिनुष्य भ	-च 3₹ल:3	च ध्रम् १९	मुग्नी १
	भवभग्वे युक्र ७३	यग्पी थड	য ধহ্ন ৪ শুগ	भक्षत्वमः १९६	क विधन देश	व निर्धनेमुब स्य	र्षि भ्रः	원 경 역 역	मुरुभूनी
	भचडुउभ भचडुउभ		भूष्ट्रभ <u>ु</u> भूड	भहित्रेच -	वृत्तिपन	भिन	ि केवः इस	स्त्रम् ।	मनेपर्से
	इच्चे दुव इच्चे दुव	ल इन्ड	मचु9	भक्त्युर भक्त्युर	ल थउभण्ड्या ७० मा	भ्रम			म् म्यानस्मरम् म्य

The state of the s

श्रीतृ of अंब दुस्र ॰ स्य मेक उस्र नव्य थ्र ० उसम्बरागवयुर विमद् :00 भूमान्स्रीम्ग्द्राः मद्राः ०५ भिनिपाइस् ०१ विद्वारम् । विद्वाः १ भागाः १९ वच्ये वप्युवन्ध्र के हानकारमा हैं। धिमुमेम्प्रांग्याः ३।



मह विन्यूयान कभा निविधः॥ मुक्तियम् यानु के भिष्ट्रमधं जहारी॥ यव ॥ युवद्यः ॥०॥ युवभामः ॥९॥ युवद्याः ॥३॥ युवद्याभाः॥ मा राजनाभागत्रप्रदेष्ठ भपष्ट भ्रमिनिनिन्ने हिनीय नग्य ब्रेट याम जामा च वीयक्मी ॥ महत्र दु उद्यान है थात्र भया मय उभगा उने एकः प्कार्यम् त्रभवाकिः भद्र ॥ यविप्रमियी पात्र भग्रामक्ष्वर्।। मनुख्यभ्यम् वा भ्रवक्ष्य।।०॥ भ्रमायय।।९॥ भग्रपाय।।३॥ भग्रहीभयय।। मा भग्राहा। भग्राहा। भग्राहा। भग्राहा। यक्त्रे॥ महाक्ष्य भावता वाद्या थात्र न्या वाद्या वा नन्ति। प्राप्ति। द्वानि। प्रमा प्रवादाः विगित्। उर्वाइनिः ॥ सम्प्रम् वन् हवनु भरत्र भ स्था हरू विम् स्वीह्यानी ने। मेबीद्युक्ष भाविमतु भजभूत भाष्मा भाष्काभी गो। मनिषेत्रयेत्रमा॥ उर्वक्ति ।

उभम्यम् म्री द्वम् हा म भारत्य द्वाभव हा मक्।।।। अरीय दे दे दे प वाभ का में हो भेड़ी। डोबाइडि:॥ उभ द्राग के भाने वाहान सेवसीमा भनभामीष्ट्रानः भर्तः भने नीयन नाहित्रभान् प्रमान्वय प्रान्ते रहाः॥३॥ मछ अस्तुमिये वर्षे वसेगी। उरेव कृष्टिः। मुदिविविवे हैंगैं धर्षि वक दृयं निरुम् विराणभानः नमुने विमाययनामि विरु न्यूमा-म्मास भविभाके विद्वतः॥ मा। भाष्ट्रम भ्रवने भग्र यत्र भगा। उर्व का अया गाम हे । अया गम न न न न । अया गर्मा अने ३ नैं । १ । । । उउस्थान वन्ति वन्ति यह जामपरके ॥ जिस्यान कभी में शहरवानि उदाप र्षेष्ठिन्य उर्देन इत्वर्गिति ॥ भ्रोपस् धर्षेषद्भार व स्तार उरैवादिः॥ त्यमेवं वनवया राज्यमाः पित्रहिं यरैनानिकानि नजारुक मन् जन्य उप अः भ्यनु भरूगण्यः भित्रः भनु कर्मेः ॥ इति धनित्र थानूकविषिः॥ न्यविष्ठ प्रविषिः॥

